Language and Learning foundation

TATA TRUSTS

सिद्धान्तों से कक्षाओं तक

प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स

2016–2018

21 dkl l ifrHkkxh;k d cnyko dh dgkfu;k

प्रस्तावना

प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत बच्चों की भाषा, साक्षरता, सोच और तार्किक कौशलों का विकास करने के उद्देश्य से लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन (एल.एल.एफ़.) की स्थापना 2015 में एक ग़ैर–सरकारी संस्था के तौर पर हुई। प्रारंभिक भाषा और साक्षरता की प्रभावी व ज़मीनी समझ विकसित करने के महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति हेतु पिछले 4 वर्षों से संस्था द्वारा प्रारंभिक भाषा एवं साक्षरता और बहुभाषी शिक्षा पर विभिन्न लंबी और छोटी अवधि के कोर्स, कार्यशालाएँ और स्कूल आधारित कार्यक्रम लागू किए जा रहे हैं। वर्तमान में संस्था छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और बिहार में सर्वशिक्षा अभियान या राज्य शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद् की साझेदारी में इन कार्यक्रमों को संचालित कर रही है।

उपर्युक्त संदर्भ में वर्ष 2016 में एल.एल.एफ़ द्वारा प्रारंभिक भाषा शिक्षण पर 9 माह की अवधि का एक सर्टिफ़िकेट कोर्स, 'प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स', प्रारंभ किया गया। यह कोर्स शासकीय अध्यापकों, शिक्षक–प्रशिक्षकों के अकादमिक संबलन और मॉनिटरिंग टीम के सदस्यों (ब्लॉक या संकुल समन्वयक) के व्यावसायिक क्षमता विकास हेतु बनाया गया है। इस कोर्स के मुख्य उद्देश्य हैं :

- शिक्षकों में प्राथमिक कक्षाओं में भाषा और साक्षरता सीखने– सिखाने से संबंधित सैद्धांतिक समझ का विकास करना और शिक्षण के दौरान उपयुक्त रणनीतियों और गतिविधियों का चयन करके उनका क्रियान्वयन करने में सक्षम होना।

- शिक्षक–प्रशिक्षक एवं अकादमिक संबलन और मॉनिटरिंग टीम के सदस्यों द्वारा अध्यापकों को उच्चस्तरीय और बेहतर सहायता दे पाना एवं संकुल, विकासखंड या जिला स्तर पर प्रारंभिक भाषा शिक्षण कार्यक्रम तैयार करने की प्रक्रिया में योगदान दे पाना।

कोर्स एक मिश्रित या बहुमार्गी अप्रोच के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा पद्धति या डिस्टेंस लर्निंग मोड में 5 राज्यों में संचालित किया जा रहा है। जिसमें, स्व–अध्ययन सामग्री (मॉड्यूल), ऑडियो और वीडियो सामग्री, कॉन्फ्रेंस कॉल, ऑनलाइन क्विज़ एवं संवाद मंच, प्रोजेक्ट कार्य, अभ्यास कार्य, असाइनमेंट और कार्यशालाएँ, जैसे विभिन्न घटक शामिल हैं। प्रतिभागी कोर्स को सफलतापूर्वक और बिना किसी रुकावट के पूर्ण कर सकें, इस हेतु हर 20 से 25 प्रतिभागी पर एक मेंटर की व्यवस्था की गई है। मेंटर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते और उन्हें नियमित सहायता प्रदान करते हैं।

अभी तक कोर्स के 3 बैच सफलतापूर्वक पूर्ण हो चुके हैं और इस सफलता ने ना सिर्फ़ इस तरह के अन्य कोर्सों का मार्ग प्रशस्त किया, अपितु प्रारंभिक कक्षाओं में हिंदी भाषा शिक्षण से जुड़े हुए हमारे प्रतिभागियों में भी एक सतत ऊर्जा का संचार किया। प्रतिभागियों ने कोर्स के दौरान विलक्षण प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया व कोर्स के हर पहलू में तन्मयता के साथ हिस्सेदारी की। प्रतिभागी शिक्षक जहाँ अपनी कक्षाओं में भाषा शिक्षण की विभिन्न रणनीतियों और गतिविधियों का प्रयोग कर रहे हैं, वहीं शिक्षक–प्रशिक्षक और अकादमिक समन्वयक कोर्स से संबंधित विभिन्न आयामों पर बनी अपनी समझ को अन्य साथी शिक्षकों और प्रशिक्षुओं के साथ विभिन्न कार्यशालाओं और बैठकों में साझा कर रहे हैं। अधिकतर प्रतिभागी प्रारंभिक भाषा शिक्षण से जुड़े कई महत्वपूर्ण आयामों को अपने कार्यक्षेत्र और कक्षाओं में क्रियान्वित करके देख रहे हैं, जैसे– मौखिक भाषा विकास, कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण का विकास, प्रिंट चेतना व ध्वनि जागरूकता पर कार्य, डिकोडिंग का व्यवस्थित शिक्षण, बच्चों की प्रथम भाषा को कक्षा में स्थान देना, पठन की विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग, लेखन को नक़ल तक सीमित न रखना और स्तरानुसार पुस्तकों की उपलब्धता।

इनमें से कई प्रतिभागी राज्य एवं ज़िलास्तरीय संदर्भ व्यक्ति के तौर पर कार्य कर रहे हैं। कुछ प्रतिभागियों ने अपने प्रयास से आसपास के अध्यापकों के समूह को संगठित कर भाषायी स्रोत समूह एवं पीएलसी का सृजन किया है, जहाँ वे ज्ञान, जानकारियों तथा नवाचार को साझा कर रहे हैं। इसके अलावा कोर्स के पूर्व प्रतिभागी नए बैच के प्रतिभागियों से समय– समय पर अपने अनुभवों और ज्ञान को एल.एल.एफ़ के विभिन्न मंचों, जैसे– कार्यशालओं में, कॉन्फ्रेंस कॉल में, संवाद मंच पर साझा कर रहें हैं। छत्तीसगढ़, बिहार और हरियाणा राज्य में शुरू हुआ 3 माह के कोर्स के संचालन में कुछ पूर्व प्रतिभागी मेंटर के तौर पर एल.एल.एफ़ का सहयोग कर रहे हैं।

प्रस्तुत डॉक्यूमेंट के माध्यम से 2016 एवं 2017 बैच के कुल 268 प्रतिभागियों में से 21 प्रतिभागियों की केस स्टडी आप सभी के साथ साझा की जा रही है। इसमें अधिकतर उन शिक्षकों को शामिल किया गया है जिनकी कक्षाओं का कोर्स के दौरान या कोर्स के उपरांत एल.एल.एफ़ टीम द्वारा अवलोकन किया गया व इसके अलावा कुछ ऐसे शिक्षक प्रशिक्षकों और अकादमिक समन्वयकों को भी यहाँ जगह दी गई है जिन्होंने कोर्स से बनी समझ का अपने कार्यक्षेत्र में बेहतरी से प्रयोग किया है। केस स्टडीज़ में उन बदलावों और प्रभावों को कलमबद्ध करने का प्रयास किया गया है जिन्हें प्रतिभागियों ने बातचीत और टेलीफोनिक साक्षात्कार के दौरान साझा किया है। ये सभी प्रतिभागी हमारे लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं, और इनकी प्रतिबद्धता प्रशंसनीय है। इस पूरे प्रोजेक्ट में टाटा ट्रस्ट्स से मिले निरंतर सहयोग के लिए हम उनका आभार प्रकट करते है।

WATER
बंदर मामा
आई एक खबर

सामग्री पृष्ठ

M, vkjrh dekjh ---- 1
vkHkk jkuh ---- 4
vHk;k flg ---- 7
vYik fuxe ---- 10
æk.k lkg ---- 14
x.k'k frokjh ---- 19
xkiky lkg ---- 22
ghjk/kj flUgk ---- 27
b'ojh dekj flUgk ---- 32
ek/ko proinh ---- 35
eerk lku'oj ---- 39
eny 'kek ---- 45
vkeukjk;.k 'kek ---- 48
itk pk/kjh ---- 51
i"ik 'kDyk ---- 54
jktiky dkj ---- 59
f'ko dekj ---- 62
Jo.k dekj ;kno ---- 65
fot; çdk'k tu ---- 69
fo".k uk;d ---- 72
;kx'k dekj fueydj ---- 75

HDPE

डॉ आरती कुमारी

उच्च शिक्षक, राजकीय उच्च मा. विद्यालय, ब्रह्मपुरा

2017 बैच, बिहार

"कई प्रशिक्षु ऐसे होते हैं जो शिक्षक बनना चुनते नहीं हैं, केवल नौकरी के लिए शिक्षक बने हैं। मगर जब मैं अपने प्रशिक्षण में इस कोर्स से बच्चों के या सीखने–सिखाने के बारे में सीख साझा करती हूँ तब वे भी महसूस करते हैं कि बदलाव मुमकिन है। उनका हौंसला भी बढ़ता है।" यह मानना है आरती कुमारी जी का, जो कि एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स 2017 के प्रतिभागी हैं।

आरती जी के अनुसार उन्होंने इस कोर्स का सबसे ज़्यादा उपयोग अपनी ट्रेनिंग में किया है। वे बताती हैं, "भले ही मेरा विषय अंग्रेजी है मगर है तो भाषा शिक्षण से ही जुड़ा! इस कोर्स से मिली कई अवधारणाओं को मैं ट्रेनिंग में अपने प्रशिक्षुओं के साथ साझा करती हूँ – जैसे जी.आर.आर, बिक्स/कैल्प, पठन की रणनीतियों का इस्तेमाल, मौखिक भाषा के विकास की प्रक्रिया, बच्चों की सक्रिय भागीदारी आदि।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

आरती जी बचपन से शिक्षकों से प्रभावित रहीं, उन्हें ध्यान से देखतीं और उनकी नकल करतीं, खासकर हिंदी अध्यापिका की। अंग्रेजी में ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षिका के तौर पर काम किया। काम करने के दौरान जाना कि शिक्षण क्षेत्र में बी.एड. और एम.एड अनिवार्य भी है और मददगार भी। अब पीएचडी भी कर रही हैं।

कुछ साल प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाने के बाद उन्होंने सरकारी नौकरी शुरू की। बिहार राज्य में अप्रशिक्षित अध्यापक बड़ी संख्या में हैं। यहाँ ODL (डिस्टेंस लर्निंग) का कार्यक्रम चलाया गया जहाँ उन्होंने इंग्लिश के शिक्षण शास्त्र के लिए मास्टर

ट्रेनर का काम किया। वर्तमान में वे एक रिसोर्स पर्सन के तौर पर अंग्रेजी सीखने–सिखाने का प्रशिक्षण देती हैं।

dkslZ ls igys

आरती जी के अनुसार, बी.एड. और एम.एड. शिक्षण के दौरान कई विषय, मुद्दे, शिक्षण प्रणाली आदि पढ़े हुए हैं और उनकी जानकारी भी थी, मगर यह उत्सुकता हमेशा बनी रही कि सीख को कक्षा तक कैसे ले जाएँ। इन कोर्स में सिद्धांतों पर जोर रहता, बार–बार कहा जाता था कि कौशलों का विकास करना है, मगर 'कैसे' यह कम ही बताया जाता था। तभी ODL के पूर्व निदेशक ने प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स का सुझाव दिया। उन्होंने बताया यदि प्रारंभिक शिक्षण क्षेत्र में काम कर रहे हैं तो यह कोर्स मददगार साबित होगा। उन्हें विश्वास है कि इस कोर्स के द्वारा सभी मास्टर ट्रेनर्स की समझ पक्की हो जाएगी जो भविष्य में शिक्षकों की मदद करेगी। उन्होंने इस कोर्स से बहुत से लोगों को जोड़ा। चूँकि आरती जी भी अपने काम के तहत प्राथमिक शिक्षा के शिक्षकों को ट्रेनिंग देती हैं, उन्हें इस सुझाव ने उत्साहित किया।

आरती जी के अनुसार इस कोर्स की एक ख़ास बात यह रही कि यह एक सकारात्मक नजरिया देता है कि कुछ बदलाव आ सकता है। चुनौतियाँ बताने वाले ज़्यादा हैं, लेकिन उनके समाधान बहुत कम बताए जाते हैं। इस कोर्स का जोर कक्षा में बदलाव लाने पर है, जो इसकी प्रमुख बात है। इस कोर्स से बहुत–सी विशेष रणनीतियाँ मिलीं, बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के बारे में समझ गहरी हुई और यह जाना कि अपने शिक्षण को और प्रभावशाली कैसे बनाया जा सकता है।

dkslZ ds nkSjku

चित्र 1: कक्षा में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करती हुई आरती जी

आरती जी बताती हैं, "बिहार में हर कक्षा में बच्चे बड़ी संख्या में हैं और जैसा कि अधिकांश स्कूलों में होता है– वे अलग–अलग स्तर के होते हैं और साथ बैठते हैं। ऐसे में शिक्षक समझ नहीं पाते कि शुरुआत कहाँ से करें। ऐसी परिस्थिति के लिए मॉडयूल में विभेदीकृत शिक्षण का तरीका बताया गया है। इसके लिए कई रणनीतियां सुझाई गई हैं।"

वे उदाहरण के तौर पर बताती हैं कि कई बार अध्यापक बच्चों के न पढ़ पाने से जूझ रहे होते हैं। मॉडयूल द्वारा समझ आया कि परंपरागत तरीके से सीधे वर्ण से शुरू न करते हुए पहले आवाज पर जोर देकर पढ़ना सिखाना शुरू करना चाहिए। इस कोर्स में मॉडयूल में पढ़ाने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया स्पष्ट रूप से दी गई है। मॉड्यूल में यह भी समझाया

है कि बच्चों के अनुभव, संदर्भ और पृष्ठभूमि समझकर ही शिक्षक को कार्य योजना बनानी चाहिए। मॉड्यूल इस पर भी जोर देता है कि कैसे एक भयमुक्त वातावरण बनाया जाए जहाँ बच्चे के घर की भाषा को सम्मान मिले, वो बिना झिझक शुरुआती दिनों में अपनी घर की भाषा का उपयोग करे और बिना दबाव के पढ़ना–लिखना सीख सके।

dkslZ ds ckn

आरती जी का कहना है "मेरे अनुभव में भाषा शिक्षण के तहत पढ़ना, लिखना, सुनना, बोलना – यह बातें तो सभी करते आए हैं, मगर अर्थ निर्माण पर जोर नहीं होता था। कोर्स के बाद मैं अपने काम में अर्थ निर्माण पर ध्यान देती हूँ। दूसरा बिंदु, जिसने मुझे प्रभावित किया है, वह विभेदीकृत शिक्षण है। इन दो आयामों पर और काम होना चाहिए, ऐसा मेरा मानना है और मैं अपनी ट्रेनिंग में इस पर जोर देती हूँ। मैं चाहती हूँ कि इस कोर्स की सीख ज़्यादा लोगों तक पहुँचे। इसलिए अपने साथियों और अपने प्रशिक्षुओं को इस कोर्स के बारे में बताती हूँ। एल.एल.एफ के किसी भी अवधि के कोर्स को करने का मौका मिले तो जाने नहीं देना चाहिए।"

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रही हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

आभा रानी

व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना, 2017 बैच, बिहार

"स्कूलों में शुरू से ही बच्चों को अक्षर आदि लिखने पर जोर देते हैं, मगर पढ़ना सिखाने पर कम समय लगाया जाता है। वे जानती हैं कि यदि बच्चे स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीख जाएँ तो बाकी विषयों में भी आगे बढ़ पाएंगे।"

यह मानना है आभा रानी जी का जो राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में व्याख्याता के रूप में कार्यरत हैं। भाषा शिक्षण में रुचि के कारण आभा जी एल.एल.एफ. के पहले बैच में ही कोर्स से जुड़ना चाहती थीं। बिहार राज्य के अन्य कार्यक्रमों के दौरान वे लैग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. धीर झिंगरन से मिली थीं और उनके काम से बहुत प्रभावित थीं। उन्हें उम्मीद थी कि इस कोर्स से उन्हें जरूर कुछ सीखने को मिलेगा। मगर किसी कारण वे पहले बैच में नहीं जुड़ पाईं। कोर्स के दूसरे बैच यानी 2017 में वे एल.एल.एफ से जुड़ीं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

आभा रानी जी ने अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत एक टीचर एजुकेटर के तौर पर की। टीचर एजुकेटर बनने का फैसला हैरानी का था क्योंकि अधिकांशतः लोग स्कूल निरीक्षण का काम चुनते हैं। उन्हें शुरू से पढ़ने–पढ़ाने में दिलचस्पी थी। साथ ही, उनकी माँ भी इसी क्षेत्र से जुड़ी रहीं तो माँ के नक्शे–कदम पर चलते हुए उन्होंने इस नियुक्ति को बड़ी उत्सुकता से स्वीकारा।

आभा जी ने अपने काम की शुरुआत 1991 में मुज्जफरपुर जिले की डाइट से की। उस दौरान राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् से जुड़े कामों के चलते उन्हें अपने सीनियर और अनुभवी लोगों के साथ भी काम करने का अवसर

और अनुभव मिला। कम उम्र में यह अनुभव सीखने और उत्सुकता बनाए रखने में मददगार रहा।

साल 2012 में वे पटना डाइट– बिक्रम में प्रिंसिपल के तौर पर नियुक्त हुईं। उस समय डाइट में 10 से भी कम उपस्थिति रहती थी। आभा जी ने व्यवस्थागत चुनौतियों, जैसे – बिल्डिंग की मरम्मत, सामग्री की उपलब्धता (पुस्तकों का इंतजाम) और प्रशिक्षुओं की उपस्थिति – हर पहलू पर काम किया और सफलता हासिल की।

अब राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में व्याख्याता के तौर पर वे अधिगम सूचकांक बनाना, पाठयक्रम के बदलाव, पाठय–पुस्तक का विकास आदि कामों में जुड़ी हुई हैं।

dksl ls igys

आभा जी भाषा की विध्यार्थी नहीं रहीं, मगर उन्हें भाषा शिक्षण में दिलचस्पी शुरू से रही। सन् 2013 में पूरे देश से 55 टीचर एजुकटर्स का चयन एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी के एक प्रोग्राम में हुआ था। आभा जी ने अपने प्रोजेक्ट के रूप में भाषा शिक्षण के विषय पर काम किया। वे अपने राज्य में बच्चों के न पढ़ पाने की स्थिति को बदलते देखना चाहती थीं।

dksl ds nkSjku

आभा जी का मानना है कि उन्हें इस कोर्स से बहुत कुछ सीखने को मिला। इस कोर्स ने इनके कई सालों के अनुभव को एक व्यवस्थित ढाँचे में ढाल दिया। कई अवधारणाएँ, विधियों से वाक़िफ़ होने के बाद भी उनके उद्देश्य और अहमियत को अब ज़्यादा गहराई से समझती हैं।

कोर्स की कुछ खास बातें जो उन्हें प्रभावशाली लगीं, उनमें क्रमबद्धता, सरल भाषा और अनगिनत उदाहरण, जो सिद्धांतों को कक्षा में लागू करने में मदद करते हैं– प्रमुख हैं। इस कोर्स की डिजाइन सीखने वाले को ध्यान में रख कर बनाई गई है– यह बात उन्हें प्रभावित करती है और यह कोर्स 'ब्लेंडेड लर्निंग' का एक बढ़िया नमूना है।

कोर्स के दौरान थिमैटिक कॉल में विशेषज्ञों या शोधकर्ताओं – रुक्मिणी बैनर्जी, शैलजा मेनन आदि से अपने प्रश्न पूछ पाना, उन्हें भाषा शिक्षण की दुनिया के लोगों से जुड़ने का एक अच्छा मौका लगा।

चूँकि आभा जी शिक्षिका नहीं हैं, उन्हें विद्यालय से सीधे न जुड़े होने के कारण कोर्स की सभी रणनीतियों को लागू करने का मौका नहीं मिलता। मगर कोर्स में मिले असाइनमेंट करने के दौरान उन्होंने कक्षाओं में सीखने–सिखाने की कई समस्याओं

को हल करने के लिए रणनीतियों का प्रयोग किया।

dkslZ ds ckn

आभा जी को कोर्स में मिले असाइनमेंट और प्रोजेक्ट के दौरान भाषा शिक्षण के कई पहलुओं पर काम करने का मौका मिला। दो समस्याएँ जिनमें वे अपने काम के जरिए कुछ बदलाव लाना चाहती हैं, वो मौखिक भाषा विकास पर सतत् कार्य और पठन की विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग है।

व्याख्याता होने के नाते वे अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण योजना, कार्यशाला आदि में इन दो पहलुओं पर जोर देती हैं।

चित्र 2: अध्यापक प्रशिक्षण के दौरान आभा जी

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रही हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

अभया सिंह

सहायक शिक्षक, प्राथमिक शाला, खजूरी

2017 बैच, उत्तर प्रदेश

"प्राथमिक कक्षा में पढ़ाने वाले हर एक शिक्षक के लिए भाषा के सही शिक्षण–पद्धति का ज्ञान होना अति आवश्यक है। किसी भी शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुझे, प्राथमिक कक्षा में भाषा शिक्षण के अवधारणात्मक व प्रायोगिक दोनों पहलुओं को इतनी बारीकी से समझने का मौका नहीं मिला।"

यह कहना है कु. अभया सिंह जी का, जो मथुरा जनपद के प्राथमिक विद्यालय खजूरी ब्लॉक–राया में सहायक अध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं। अभया सिंह जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

अभया जी महज डेढ़ साल से विद्यालय से जुड़ी हैं। वे बताती हैं कि बी. टी. सी. कोर्स के उपरांत उनमें एक नया जोश था। जब अभया जी ने विद्यालय में पढ़ाना शुरू किया तो उन्हें ये जानकर अचरज हुआ कि पाँच कक्षाएँ सामूहिक रुप से बैठी थीं– कक्षा पहली, दूसरी और तीसरी एक जगह तथा कक्षा चौथी और पाँचवी एक साथ संचालित होती थी। विद्यालय में तीन कमरे हैं। अभया जी के अलावा विद्यालय में दो शिक्षामित्र और प्रधान अध्यापिका हैं।

dkl! l! igy!

इतना ही नहीं, विद्यालय में नामांकित छात्रों के सापेक्ष बच्चे कम उपस्थित रहते थे। बच्चों को कक्षा पहली की शुरुआत में सर्वप्रथम लेखन का कार्य दिया जाता था तो अभया जी ने भी इसी परंपरागत तरीके से शिक्षण कार्य प्रारंभ किया।

लेकिन समय गुजरने के बाद भी बच्चों को लिखना तो दूर अक्षर ज्ञान तक नहीं हो पाया। बच्चे वर्ण अक्षर पहचान नहीं पाते थे, जिस कारण पढ़ाई में निरंतर बाधा आती थी। उन्हें समझ नहीं आता था कि आखिर बच्चों को किस तरीके से पढ़ना सिखाया जाए? साथ ही उन्हें अपनी और बच्चों के भाषायी अंतर के कारण बच्चों को पढ़ाने में भी समस्या होती।

डाइट मथुरा पर हुए समावेशी शिक्षा के प्रशिक्षण में उन्होंने अपनी समस्या व अपने विद्यालय के अनुभव सभी के समक्ष रखे। इस प्रशिक्षण के एक सप्ताह बाद डाइट से कॉल आने पर एल.एल.एफ. द्वारा कराए जा रहे कोर्स के बारे में उन्हें पता चला। डाइट के प्रिंसिपल सर के कहने पर वे भाषा शिक्षण से संबंधित 9 माह का प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स से जुड़ गई। इस तरह इनके इस कोर्स की शुरुआत हुई।

dkslZ ds nkSjku

अभया जी के अनुसार नौकरी के प्रारंभ में इस कोर्स को करने का फायदा यह हुआ कि कोर्स ने उनके शिक्षण कार्य में आ रही विभिन्न समस्याओं का समाधान बताया और ऐसे तरीकों का पता चला जिनसे बच्चों को आसानी से पढ़ाया जा सके। साथ ही, विभिन्न शिक्षण रणनीतियों एवं सिद्धांतों पर प्राप्त हुए मॉड्यूल्स को पढ़ने, कॉन्फ्रेंस कॉल में की गई चर्चा एवं अतिरिक्त गतिविधि संग्रह आदि के द्वारा धीरे–धीरे उनकी समझ विकसित हो रही है। अभया जी बताती हैं कि "इन गतिविधियों को कराने से सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि जो बच्चे कक्षा में बिलकुल नहीं बोलते थे, आज वे अपनी बात को सभी के सामने बेझिझक होकर कहते हैं।"

अब अभया जी गतिविधियों के दौरान कुछ बातें ध्यान में रखती हैं, जैसे– बच्चों के पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए हर काम शुरू करना, हाव–भाव के साथ पाठ को पढ़ाना, उँगली रखकर पढ़ें, पढ़ने से पूर्व, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद में सामान्य प्रश्नों के साथ अनुमान लगाने वाले, तार्किक एवं उच्चस्तरीय चिंतन व अन्वेषण के प्रश्न शामिल करना। कोर्स के बाद अब संतुलित भाषा पद्धति का उनकी कक्षा में समावेश हुआ है। उदाहरण के लिए भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं–

अभया जी ने ध्वनि जागरूकता के लिए बच्चों को, अपने नाम को अलग–अलग ध्वनि में तोड़कर पहली, बीच और आखिरी आवाज बताने को कहा। बच्चों ने एक–एक कर तीनों ध्वनियाँ बताईं। प्रथम ध्वनि से आरंभ करते हुए 5.5 शब्द भी बनाए। इसके बाद डिकोडिंग की बारी आई इसमें अभया जी ने उपयुक्त मात्रा में 'मात्रा व बिना मात्रा वाले' अक्षर कार्ड जमीन पर रखकर उन्हें बच्चों के बीच फैला दिया। फिर बच्चों से शब्द बनाने को कहा। बच्चों ने अपने स्तर के अनुसार शब्द बनाए। जो बच्चे शब्द नहीं बना पाए, उन्हें अन्य छात्रों को शब्द बनाते हुए देखने और आवाज दोहराने को कहा। छात्र भी शब्द बनाने

में एक–दूसरे की मदद करने लगे। आखिर में मौखिक भाषा विकास की गतिविधि हुई, जिसमें बच्चों को तीन समूह में बाँटकर हर समूह को पाठ से संबंधित कुछ प्रश्न दिए जैसे (1) मेले में खाने के लिए क्या–क्या मिलता है? (2) मेले में क्या–क्या दिखता है? (3) दशहरे के मेले में क्या होता है? हर समूह को चर्चा का समय दिया। इसके बाद प्रत्येक समूह को अपने उत्तर सभी के सामने बताने को कहा गया।

चित्र 3: कक्षा में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करती हुई अभया जी

dkslZ ds ckn

अभया जी कहती हैं कि शिक्षण कार्य प्रारंभ करने के चंद महीने बाद इस तरह के कोर्स में उनका नाम सम्मिलित होने पर वे गौरवान्वित हैं। यह उनके लिए एक नया अनुभव है और काफी उपयोगी साबित हुआ है। इस कोर्स के माध्यम से उन्हें शिक्षण की विभिन्न रणनीतियों एवं गतिविधियों के बारे में पता चला, जिन्हें वे पहले नहीं जानती थीं, जिनकी सहायता से वे अपने कक्षा शिक्षण को बेहतर कर सकती हैं। उनके अनुसार बच्चों को विद्यालय में करवाई जाने वाली मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग आदि के लिए जो विभिन्न अभ्यास कार्य कराए जा रहे हैं, उनसे ना केवल बच्चों के शैक्षणिक स्तर में सुधार हुआ है बल्कि, बच्चों की उपस्थिति भी नियमित हो गई है। बच्चे सभी क्रियाकलापों में पूरे मन से भाग लेते हैं तथा जो गतिविधियाँ कराई जाती हैं, उन्हें भूलते भी नहीं है।

कोर्स में बताई गई मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों को नियमित रूप से बच्चों को कराने लगीं। इसके साथ ही उन्होंने प्रिंट–समृद्ध वातावरण, ध्वनि चेतना और उसका महत्व भी इस कोर्स के माध्यम से समझा। वह डिकोडिंग का शिक्षण तो करवाती थीं किंतु व्यवस्थित रूप से कैसे सिखाया जाए इसके लिए भी वह कोर्स का ही योगदान मानती हैं। संतुलित भाषा पद्धति अंतर्गत कार्य करना उन्हें अत्यंत मददगार साबित हुआ है। वे कहती हैं कि "इस प्रकार का कोर्स प्रत्येक शिक्षक और शिक्षा विभाग से जुड़े अकादमिक कार्य करने वालों को जरूर कराया जाना चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकें।"

अल्पा निगम

प्रधानाध्यापिका, प्राइमरी विद्यालय, तिलौली, गोरखपुर
2016 बैच, उत्तर प्रदेश

"आज हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में 3000 से ज़्यादा पुस्तकें हैं और इसमें से करीब 500 पुस्तकें बच्चों द्वारा निर्मित हैं।" गर्व से ये बात कहती हैं– अल्पा निगम जी जो कि एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स 2016 के प्रतिभागी हैं।

f'k{k.k lQj dh 'k#vkr

जब वे विद्यालय में सहायक शिक्षिका के पद पर नियुक्त होकर आईं तब 69 बच्चों में से केवल 30 प्रतिशत उपस्थिति रहती थी। उन्होंने पाठयक्रम पढ़ाने में थोड़ी तब्दीली की ताकि बच्चों को स्कूल आना आकर्षक लगे। बच्चों के लिए चित्रकारी और क्राफ्ट की गतिविधियाँ बढ़ाईं, खेल–कूद और पी.टी. का समय निर्धारित किया, संगीत और नृत्य भी स्कूल में होने लगे। सतत् प्रयास से बच्चों की उपस्थिति बेहतर होने लगी और बच्चे स्कूली गतिविधियों में बढ़कर हिस्सा लेने लगे।

dkl! d! igy!

अल्पा निगम जी ने एल.एल.एफ का प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स 2016 में किया। कोर्स करने का उनका एक ही उद्देश्य था कि वे अपने विद्यालय के कक्षा 1 और 2 के बच्चों में क्रमबद्ध तरीके से पठन कौशल का विकास करना चाहती थीं। इससे पहले भी उन्होंने बच्चों के साथ आरंभिक पठन पर काम किया था, लेकिन उन्होंने बताया कि उसमें उन्हें एक बिखराव महसूस होता था। उन्हें शंका रहती कि जिस दिशा में वे काम कर रही हैं वह सही है या गलत। वे बस काम किए जा रही थीं और चिंतित रहतीं कि परिणाम मिलने की गति बहुत धीमी क्यों है। अल्पा जी अपनी चिंता के

विषय में और लोगों से भी बात करती थीं। इस कोर्स के बारे में संयुक्त निदेशक सर ने अल्पा जी को बताया। वे अपना शुरुआती उत्साह साझा करते हुए कहती हैं "मैं इस कोर्स को करने के लिए बहुत ही उत्सुक थी। मैंने फॉर्म भरा और ठीक एक माह बाद जब मेरे पास एल.एल. एफ. से ईमेल आया तो मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। कोर्स शुरू हुआ।"

dkslZ ds nkSjku

कोर्स के दौरान भाषा सिखाने की रणनीतियों व गतिविधियों के बारे में जानकर उन्हें बहुत प्रोत्साहन मिला। वे मानती हैं कि, यह उनकी मेंटर की देन है उनकी अथक मेहनत के बल पर वे इस कोर्स को सफलतापूर्वक पूर्ण कर पाईं। इस कोर्स के दौरान उन्होंने मौखिक भाषा के विकास के लिए कई गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। अपने विद्यालय में बच्चों के साथ जब वे इन गतिविधियों का प्रयोग करती थीं तो उन्होंने पाया कि बच्चे बहुत ही सरल व रोचक ढंग से, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। इन गतिविधियों को करने के दौरान उन्होंने पाया कि दो ऐसी जुड़वा बहनें जो बोलना पसंद नहीं करती थीं और चुपचाप एक कोने में बैठी रहती थी, वे 2 महीने के बाद कक्षा की प्रत्येक गतिविधि में भाग ले रही थीं। मौखिक भाषा के विकास के साथ ही उन्होंने पठन की रणनीतियों को शामिल किया।

इंटरैक्टिव रीडिंग, साझा पठन, मार्गदर्शनयुक्त मार्गदर्शित पठन और स्वतंत्र पठन आदि तरीकों को प्रयोग करते हुए उन्होंने प्रयास किया कि कक्षा 3 के बच्चे स्वतंत्र रूप से किसी कहानी को समझ के साथ पढ़ सकें। कोर्स के दौरान ही उन्हें पता चला कि कक्षा 2 और 3 के बच्चों के साथ यदि कुछ विशेष रणनीतियाँ प्रयोग की जाती हैं तो वे समझ के साथ पढ़ना सीख जाते हैं।

प्रिंट–समृद्ध वातावरण की उपयोगिता, इमरजेंट लिटरेसी, संतुलित पद्धति को प्रयोग करते हुए उन्होंने प्रयास किया कि वे बच्चों के 'घसीटा लेखन' को भी कक्षा में भाषा के विकास के लिए प्रयोग कर सकें। बच्चों के घसीटा लेखन जिस को अक्सर लोग नजरंदाज कर देते हैं, उनका प्रयोग भी कक्षा में करने का प्रयास किया। इसके अंतर्गत बच्चों के द्वारा बनाई गई चित्रकारी को मौखिक भाषा के विकास के लिए प्रयोग किया, जिसमें बच्चे अपनी बनाई हुई चित्रकारी के बारे में व्याख्या करने का प्रयास करते हैं।

बच्चों की भाषा का महत्व सीखने–सिखाने पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है, यह बात वे जानती थी किंतु उनकी भाषा का प्रयोग करके उन्हें रचनात्मक लेखन की ओर किस प्रकार ले जाया जाए, यह उन्होंने कोर्स के दौरान ही सीखा। उनके अनुसार, "कक्षा शिक्षण के दौरान मेरे मन में यह बात घर कर चुकी थी, कि कक्षा 1 के बच्चों के साथ शुरुआती 3 से 4

महीने तक हमें सिर्फ मौखिक भाषा के विकास पर ही कार्य करना है और कविताओं और कहानियों से आगे नहीं बढ़ना है, लेकिन मुझे इस कोर्स के दौरान ही यह समझ में आया कि कक्षा 1 के शुरुआती समय से ही हमें बच्चों के मौखिक भाषा और लेखन के विकास पर साथ–साथ कार्य करना होता है। इस कोर्स के दौरान मुझे यह भी पता चला कि प्रिंट जागरूकता और लोगोग्राफिक रीडिंग का, पठन क्षमता के विकास में एक अहम योगदान है"।

बच्चों में चरणबद्ध ढंग से पठन कौशल के विकास के लिए कोर्स के दौरान सीखी हुई तमाम गतिविधियों और रणनीतियों का प्रयोग करके उन्होंने अपनी कक्षा के बच्चों को एक बेहतर माहौल देने का प्रयास किया। उन्हें इस कोर्स से बच्चों की शब्दावली को समृद्ध बनाने के तरीकों को काफी रोचक गतिविधियों के साथ प्रस्तुत करने में बहुत सहायता मिली। वे बताती हैं, "मैं प्रार्थना सभा में बच्चों को कहानी सुनाती और फिर कहानी मानचित्र के माध्यम से बच्चों की समझ विकसित करने का प्रयास करती। जिसके परिणामस्वरूप कक्षा 2 और 3 के छोटे बच्चे भी आसानी से सारांश लेखन की प्रक्रिया से जुड़ पाए।" इतना ही नहीं, अब बच्चे डिकोडिंग के साथ ही साथ शब्दावली पर भी कार्य कर पा रहे थे।

कक्षा के साथ–साथ उन्होंने कोर्स की समझ का प्रयोग राज्य स्तर पर लिखे जा रहे शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल के साथ भी किया। उन्हें गर्व की अनुभूति हुई, जब कोर्स की समझ अर्ली ग्रेड रीडिंग अंग्रेजी के शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल को विकसित करने में की, जिसे प्रदेश भर के शिक्षक आज आरंभिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण को सुगम बनाने के लिए कर रहे हैं।

dkslZ ds ckn

कोर्स के बाद उन्होंने एक पी.एल.सी. की नींव रखी। इसके गठन का मुख्य उद्देश्य कोर्स की समझ को, दूसरे साथी शिक्षकों के साथ साझा करना है। इस पी.एल.सी. में उनके साथी शिक्षक संवाद मंच, कॉन्फ्रेंस कॉल, मासिक बैठक और कार्यशाला के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं और इस कोर्स की गतिविधियों के बारे में विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। इस श्रृंखला में, इस समूह से जनपद गोरखपुर के 30 शिक्षक जुड़े हुए हैं। इस समूह के अलावा वे समय–समय पर वाट्सऐप के माध्यम से अन्य समूहों में, शिक्षकों के साथ समझ को साझा करती हैं, जिसके फलस्वरूप आज कोर्स की समझ को वे तीन सौ से अधिक शिक्षकों के साथ साझा कर पाई हैं।

चित्र 4: प्रशिक्षण की तैयारी करतीं अल्पा जी

इस कोर्स के उपरांत बच्चों के साथ भोजपुरी भाषा में किताबों का अनुवाद करवाया, जिससे कक्षा 1 के बच्चों को उनकी ही भाषा में कहानियाँ सुनाई जा सके और उनकी मौखिक भाषा का विकास सरलता से किया जा सके। वे बताती हैं "इस पूरी प्रक्रिया से गुजरने के दौरान बच्चे महसूस कर पाएँगे कि कक्षा में उनकी भाषा को सम्मान दिया जा रहा है और वे रुचिपूर्ण ढंग से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ पाएँगे।"

इसके साथ ही कक्षा 4 और 5 के बच्चों में रचनात्मक लेखन क्षमता के विकास के लिए शैक्षिक कैलेंडर का निर्माण करवाया, जिसमें बच्चों को 12 समूहों में बाँटा और प्रत्येक समूह के बच्चों को एक–एक माह पर कार्य करने को दिया गया। 12 समूहों में बच्चों ने 12 महीने की शैक्षिक गतिविधियों की योजना बनाई, इस कार्य को करते समय, बच्चों के अंदर योजना निर्माण की क्षमता का भी विकास हुआ।

बच्चों के साथ पाठ के सरलीकृत रूप को भी प्रस्तुत करवाने का प्रयास किया, जिसके अंतर्गत बच्चों ने कक्षा 1, 2 और 3 के समस्त पाठों का सरलीकृत रूप बिग बुक के रूप में तैयार किया । इन सभी संदर्भों को तैयार करने से विद्यालय का भी एक फायदा हुआ कि हमारे विद्यालय में अनियोजित रूप से बच्चों का बनाया हुआ समृद्ध पुस्तकालय तैयार होता जा रहा था।

द्रोण साहू

सहायक शिक्षक, शा. प्राथमिक शाला बिजेमाल, महासमुंद

2016 बैच, छत्तीसगढ़

"बच्चों को स्कूल में हिंदी में ही बात करनी चाहिए, ऐसा मेरा मानना था। जब स्कूल में बच्चे हिंदी के अलावा कुछ और बोलते थे तो मैं उन्हें रोकता था। मेरे दृष्टिकोण में बदलाव तब आया जब मुझे समझ में आया कि बहुभाषिता को प्राथमिक कक्षाओं में एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। आज मेरी कक्षा में एक साथ तीन भाषाओं का प्रयोग हो रहा है और बच्चे अब पहले से ज़्यादा अच्छी हिंदी का उपयोग कर रहे हैं। बच्चों की बढ़ती भागीदारी से कक्षा में जो जीवंतता आई है, उसको महसूस करना सबसे सुखद है।"

यह विचार है द्रोण साहू जी का, जो महासमुंद जिले के बिजेमाल गाँव की पाठशाला में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। गाँव में बड़े गुरुजी के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। द्रोण जी को इस स्कूल में पढ़ाते हुए एक दशक से ज़्यादा समय हो चुका है। इस एक दशक में एक शिक्षक के रूप में भी उन्होंने बहुत कुछ नया सीखा और अपनी कक्षाओं के आयोजन में बहुत सारे बदलाव किए। जब उन्होंने इस विद्यालय में पढ़ाना शुरू किया था, उस समय इस गाँव में कोई भी नौकरी में नहीं था। आज उनके पढ़ाए हुए बच्चों में से कई स्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं। इस स्कूल से पास हुए बच्चों में पाँच बच्चे आज सरकारी नौकरियों में हैं। जाहिर है पिछले एक दशक में इस गाँव ने शिक्षा में काफी विकास किया है। द्रोण सर एल.एल.एफ. के प्रारम्भिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स 2016 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

शुरुआती दिनों के बारे में बात करते हुए द्रोण बताते हैं कि जब उन्होंने एक शिक्षक के रूप में इस शासकीय शाला

में पढ़ाना शुरू किया था, तो बच्चों को कैसे पढ़ाया जाए, इसके बारे में बहुत कुछ जानकारी नहीं थी। बिजेमाल एक आदिवासी बाहुल्य गाँव है, जिसमें अभी भी पढ़ने आने वाले ज़्यादातर बच्चे प्रथम पीढ़ी के (प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी) हैं। उन्हें पाँचों कक्षाओं को अकेले पढ़ाना होता था। द्रोण जी ने बिना शैक्षिक प्रशिक्षण के, शिक्षक के रूप में काम शुरू किया। तो उन्होंने उसी तरह पढ़ाया, जिस तरह उनके शिक्षक ने सर को पढ़ाया था – वर्णों को सिखाना, वर्णों के साथ मात्रा सिखाना, वर्णों और मात्राओं को जोड़ कर सिखाना। द्रोण जी वर्णों के अभ्यास को सबसे महत्वपूर्ण मानते और उन्हें लगता कि बच्चों को जितना अभ्यास करवाएँगे, वे उतनी ही जल्दी सीखेंगे।

dkslZ ls igys

गाँव के भाषायी परिवेश के बारे में द्रोण जी बताते हैं कि "यहाँ से 15 किलोमीटर दूर उड़ीसा की सीमा शुरू होती है। संबलपुरी बोली का प्रभाव स्थानीय छत्तीसगढ़ी पर है। कुछ परिवारों में संबलपुरी बोली जाती है जबकि कुछ में ज़्यादा छत्तीसगढ़ी बोली जाती है– जैसे कि पहले बताया गया कि द्रोण जी ने बिना शैक्षिक प्रशिक्षण के शिक्षक के रूप में काम शुरू किया, फिर उन्होंने पत्राचार के माध्यम से डी.एड का कोर्स किया। यहाँ उन्हें बहुत सारे नए शिक्षाशास्त्र, मान्यताओं और विचारों को जानने–समझने का मौका मिला। कुछ सालों बाद जब उन्होंने MGML[1] के शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में काम करना शुरू किया तो बहुत कुछ जानने को मिला।

इसी सिलसिले में द्रोण जी को एल.एल.एफ द्वारा संचालित, प्राथमिक कक्षा में भाषा शिक्षण के डिप्लोमा कोर्स के बारे में पता चला। द्रोण जी बताते हैं कि "इस कोर्स को करने के बाद ही यह संभव हो पाया है कि मैं अब बच्चों के साथ व्यवस्थित तरीके से बात कर पा रहा हूँ। बच्चों को मैं पढ़ाता तो बहुत सालों से था लेकिन सचेत रूप से कुछ सोचना, यह इस कोर्स से जुड़ने के बाद ही समझ में आया। बच्चों को पढ़ाने की क्या योजना होनी चाहिए? क्या रणनीति होनी चाहिए? यह इस कोर्स के पाठयक्रम को जानने–समझने के बाद ही समझ में आ रहा है। मौखिक भाषा विकास के बारे में मुझे पहली बार पता चला फिर लगा कि मौखिक भाषा पर मेरा काम बिलकुल नगण्य था। इस कोर्स के बाद मुझे पता चला कि मौखिक भाषा का बच्चों के पढ़ने–लिखने पर कितना निर्णायक प्रभाव पड़ता है। अब कक्षा के पहले 15 मिनट मौखिक भाषा विकास पर ही काम करता हूँ। बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास पर काम करके ही मेरे और छात्रों के बीच संवाद स्थापित हो सका। इससे शिक्षक– छात्रों के बीच की दूरी कम होती है।"

---

[1]multi grade multi level (MGML) नाम से यह कार्यक्रम छत्तीसगढ़ के प्राथमिक शालाओं में 2008 से क्रियान्वित किया गया था।

dkslZ ds nkSjku

कोर्स से मिली जानकारी को वे कक्षा में आजमाते हैं। भाषा कक्षा में होती गतिविधियों के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं – द्रोण जी कक्षा दूसरी के सत्र की शुरुआत एक कविता से करते हैं। वे बच्चों से पूछते हैं "कि कौन–सी कविता पढ़ी जाए?" दो–तीन कविताओं के प्रस्ताव के बाद 'पैसे पास होते' कविता पर सहमति बनती है। बच्चे गोल घेरे में अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं और हाव–भाव के साथ कविता पाठ करते हैं। उनकी लय, हाव–भाव और आपसी तालमेल बता रहे हैं कि ये बच्चों की कक्षा का लंबे समय से हिस्सा रहे हैं। कविता के बाद एक बार फिर बच्चों से पूछा जाता है कि अब क्या करना है? कहानी के पक्ष में आम सहमति बनती है।

चित्र 5: बच्चों को कहानी सुनाते हुए द्रोण जी

द्रोण जी पंचतंत्र की कहानी – बंदर और मगरमच्छ सुनाते हैं। द्रोण जी इस बात का ध्यान रखते हैं कि कक्षा के बहुभाषी परिवेश में बच्चों के साथ कहानी सिर्फ हिंदी में नहीं सुनाई जा सकती है। तो कहानी शुरू होती है– "एक जंगल में एक जामुन का पेड़ था। पेड़ क्या होता है? पेड़ माने गछ– संबलपुरी बोलने वाला एक बच्चा बताता है। सर, हम लोग रुख कहते हैं। सर, इन तीनो शब्दों को एक साथ लेकर आते है– जो पेड़ है वही रुख है और वही गछ है। कहानी आगे बढ़ती है। बंदर क्या होता है– बंदर माने बेंदरा। सर, बनरा भी बोलते हैं ... मगरमच्छ क्या होता है– मगर सर, मंगर भी बोलते हैं ..." इस तरह द्रोण जी प्रत्येक लाइन के बाद शब्दों और वाक्यों को तीनो भाषाओं में बता रहे हैं और बच्चों से पूछते हैं कि आगे क्या होगा? बच्चे सिर्फ कहानी नहीं सुन रहे हैं , बल्कि साथ ही साथ, उस कहानी को आगे बढाने कि प्रक्रिया में हिस्सेदार भी बन रहे हैं। यहाँ महसूस होता है कि कहानी सुनते–सुनाते हुए, परंपरागत व्यवस्था कहीं टूटने–सी लगती है।

कहानी सुनने के बाद फिर से कहानी बनाना शुरू होता है। सभी बच्चों को कहानी में, अपनी भाषा में एक पंक्ति जोड़नी है। छत्तीसगढ़ी, संबलपुरी और हिंदी, तीनों भाषाओं में एक ही कहानी के अलग–अलग हिस्से बनने लगे। जहाँ कोई अटकता है वहाँ पर शिक्षक कहानी को बच्चे की भाषा में आगे बढ़ाते है। प्रत्येक पंक्ति के बाद बच्चों के कहे वाक्य को हिंदी में सभी बच्चों को अनुवाद करके सुनाते हैं। सभी बच्चे सभी भाषाओं को समझ रहे हैं। कुछ वाक्यों को तीनों भाषाओं में बोर्ड पर लिखा जाता है :

बेंदरा टा केनो तिला– गछे

बेंदरा कहाँ रहिस– रुख

और बंदर कहाँ पर रहता था – पेड़ पर।

वाक्य पर काम करने के बाद बारी आती है शब्दों की। आज बच्चों ने बहुत सारे शब्द जाने हैं तो द्रोण जी एक साथ चार शब्दों को बोर्ड पर लिखते हैं – बंदर, मगरमच्छ, पेड़, भाभी। सभी शब्दों को फिर से वाक्यों में प्रयोग किया जाता है जिसमें बच्चे भी भागीदार बनते हैं और कहानी खत्म होते ही सभी एक साथ यह पंक्तियाँ गाते हैं :

हिंदी	भाभी	पेड	मगरमच्छ	बन्दर
छत्तीसगढ़ी	भौजी	रूख	मंगर	बेंदरा
संबलपुरी	बहु	गछ	मगर	बनरा

मोर कहानी पुर गिस

दाल भात चूर गिस

(मेरी कहानी पूरी हो गई और घर में दाल–चावल भी पक गया।)

अगला काम लिखने का है। सबको तरिया या तालाब का चित्र बनाना है और तरिया में जो भी रह रहे हों, उनका भी चित्र बनाना है। इस कक्षा में कुछ बच्चे लिखते हैं। द्रोण जी उन बच्चों का नाम लेकर निर्देश देते हैं कि चित्र बनाने के साथ–साथ आप लोगों को सभी के नाम भी लिखने हैं। गोला छोड़कर सभी बच्चे कक्षा में अपने–अपने बोर्ड के पास चले जाते हैं। चॉक से बोर्ड पर कई तरैया बन रही हैं जिसमें मछली भी है, घोघा भी है।

dkslZ ds ckn

द्रोण जी बताते हैं कि कोर्स के बाद, अब कक्षा में उनका प्रत्येक दिन "मेरा पहला काम होता है बच्चों के साथ बातचीत। कई बार कुछ किताबों पर बातचीत होती है तो कई बार हमारी बातचीत की शुरुआत में बच्चों से अपने अनुभव को साझा करने के लिए कहा जाता है। "द्रोण जी के अनुसार अब उनकी कक्षाओं में तीन भाषाओं का मिश्रण चलता है– छत्तीसगढ़ी, संबलपुरी और हिंदी। सभी बच्चे अपनी सुविधा के अनुसार अपनी भाषा में बोलने के लिए स्वतंत्र हैं। द्रोण बच्चों के साथ

उनकी भाषा में बोलते हैं, साथ ही साथ, स्कूल की भाषा के तौर पर हिंदी में उसका अनुवाद भी करते चले जाते हैं। इस तरह वे बच्चों की भाषा को कक्षा में लाने में सफल हुए। द्रोण के अनुसार "अब बच्चे बिना झिझक, के बिलकुल फ्री होकर छत्तीसगढ़ी और संबलपुरी में अपनी बात रखते हैं। पहले के स्थान पर बच्चों की अभिव्यक्ति में यह बदलाव बहुत ही सुखद है।"

आगे वे बताते हैं कि "मैं अब यह समझ पाया हूँ कि कक्षा के सभी बच्चे एक स्तर पर नहीं होते हैं। इसलिए, अब मैं उनके साथ स्तर अनुसार अलग–अलग समूह में बैठकर काम करता हूँ। उदाहरण के लिए, अगर एक समूह के साथ मैं ग्रिड पर काम कर रहा हूँ तो एक दूसरा समूह ऐसा भी होगा जहाँ मैं केवल वर्णों पर काम करूँगा। इस तरह मै सभी बच्चों के साथ काम कर पाता हूँ। अब मुझे अपने सभी बच्चों का स्तर पता है कि कौन कहाँ पर है, अमुक–अमुक मात्राओं को जानता है, किन मात्राओं का ज्ञान है, किन मात्राओं पर काम हुआ है और किन–किन मात्राओं पर काम करना अभी बाकी है।"

अब पहले वाली बार–बार पढ़ने की पद्धति भी बदल गई है। अब वे यह काम गतिविधियों के द्वारा करते हैं। वे बताते हैं कि "अमुक बच्चा किस स्तर पर है, उसके अनुसार उसके साथ पढ़ने–लिखने की गतिविधि तय होती है। वाक्य पट्टी, शब्द कार्ड और वर्ण कार्ड के द्वारा अलग–अलग ग्रुप बनाकर काम करता हूँ।" इस तरह कोर्स के जरिए द्रोण जी ने अपनी कक्षा को पहले से ज़्यादा जीवंत पाया और उनका बच्चों के साथ जुड़ाव भी पहले से ज़्यादा हुआ है।

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रहे हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

गणेश तिवारी

सहायक कार्यक्रम समन्वयक, प्रशिक्षण
राजीव गांधी शिक्षा मिशन,समग्र शिक्षा अभियान
2016 बैच, छत्तीसगढ़

"शिक्षक प्रारंभिक कक्षाओं (कक्षा 1 व 2) में बच्चों को इसलिए नहीं पढ़ाना चाहते क्योंकि बच्चों को पढ़ना नहीं आता, अधिकांशतः शिक्षक उन बच्चों को पढ़ाने में रूचि लेते है जिनको पढ़ना–लिखना आता है। शिक्षक सोचते हैं कि बच्चा कक्षा 3 तक आते–आते पढ़ना–लिखना स्वतः ही सीख जायेगा, जबकि ऐसा नहीं है। विगत् दस वर्षों से छत्तीसगढ़ में कक्षा–1 की पाठ्यपुस्तक को जिले के सभी शालाओं में सही ढंग से पढ़ाने का भरसक प्रयास किया, परंतु अपेक्षित सफलता नहीं मिली।" मैंने जब एल.एल.एफ. का कोर्स किया। तब मुझे अधोगामी व उर्ध्वगामी पद्धति की जानकारी प्राप्त हुई, जिसे मैंने छत्तीसगढ़ की कक्षा 1 की पाठयपुस्तक पर प्रयोग किया, जिसमें मुझे सफलता प्राप्त हुई। मैंने इसे जिले के 1526 शालाओं में लागू कर दिया है। प्रतिमाह संकुल शैक्षिक समन्वयकों के माध्यम से इन शालाओं की मॉनिटरिंग करवाता हूँ और स्वयं भी करता हूँ।"

यह कहना है गणेश तिवारी जी का, जो कि शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 33 वर्षों से कार्यरत हैं। गणेश जी एल.एल.एफ. प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स 2016 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

गणेश जी ने अपने शैक्षिक जीवन की शुरुआत बस्तर जिले के प्राथमिक शाला के उपशिक्षक के रूप में की। उनके पास प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ काम करने का कुछ खास अनुभव नहीं था, जिस तरीके से उन्होंने अपने शिक्षकों से शिक्षा हासिल की, उसी पद्धिति से बच्चों को पढ़ाया करते थे। उनके कई प्रयासों के बावजूद, बच्चे उस स्तर तक नहीं पहुँच पा

रहे थे, जिस स्तर पर बच्चों को पढ़ना–लिखना आ जाना चाहिए था।

गणेश जी 1997 से सर्व शिक्षा अभियान में प्रशिक्षक की भूमिका में रहे, जिसके तहत उन्हें शिक्षकों व संकुल शैक्षिक समन्वयकों को प्रशिक्षण देना होता था। वर्तमान में गणेश जी सहायक परियोजना समन्वयक प्रशिक्षण के पद पर जिला परियोजना कार्यालय, राजीव गांधी शिक्षा मिशन, जगदलपुर जिला, बस्तर, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं।

dkslZ ls igys

गणेश जी ने मॉनिटरिंग के दौरान यह देखा कि कक्षा पहली से पाँचवी तक के अधिकांश बच्चों को ठीक से पढ़ना नहीं आता। उनके अनुसार "यह देख कर मुझे बड़ा दुःख होता था, कि बच्चे पढ़ना–लिखना नहीं सीख पा रहें हैं। बहुत प्रयास करने पर बच्चों के ना सीखने का कारण पता चला, कि प्रारंभिक कक्षा में बच्चों को भाषा (हिंदी) पढ़ाई नहीं जाती, क्योंकि बच्चों की अलग–अलग बोलियाँ हैं। बच्चे शिक्षक की भाषा नहीं समझ पाते थे और शिक्षक बच्चों की। ऐसी परिस्थिति में पाठयपुस्तक से बच्चों का पढ़ना सीखना कैसे संभव हो पाये!"

उन्होंने इस समस्या को हल करने के लिए 2008 से छत्तीसगढ़ पाठयपुस्तक की कक्षा पहली की समेकित किताब का सहारा लिया, जिसमें हिंदी भाषा के साथ–साथ स्थानीय भाषा में शब्दावली दी गयी है। इससे शिक्षकों का कार्य को थोड़ा आसान हो गया। गणेश जी ने पठन व लेखन कौशल विकसित करने पर कार्य किया, जिसके लिए उन्होंने अधिगम सामाग्री तैयार कर, जिले के प्रत्येक शिक्षक के लिए रणनीति तैयार की। वे कहते हैं कि "इससे सफलता तो मिली, पर उसे संतोषप्रद नहीं कह सकते!"

इसी दौरान उन्हें राज्य कार्यालय द्वारा पता चला कि 2014–15 में कक्षा पहली व दूसरी के अध्ययन– अध्यापन के लिए एल.एल.एफ. द्वारा नौ माह का दूरस्थ कोर्स संचालित किया जा रहा है, जिसे करने के लिये वे तुरंत तैयार हो गए।

dkslZ ds nkSjku

कोर्स के दौरान उन्हें कई सवालों के ज़वाब मिले। जैसे– प्रारंभिक कक्षा के बच्चों को कैसे पढ़ाया जाए?, शिक्षण में आ रही समस्याओं का समाधान कैसे किया जाए?, समय का ध्यान रखना, बच्चों के साथ समूह में चर्चा करके अनुभव को साझा करना, गतिविधि करना, मूल्यांकन करके प्रगति देखना और आवश्यक्तानुसार रणनीति बनाना आदि। भाषा शिक्षण के कई आवश्यक पहलुओं पर नयी जानकारी मिली। इसी के साथ ही, कोर्स के बारे में जिला स्तरीय संकुल शैक्षिक समन्वयकों

की बैठक में चर्चा करने से, उन्हें भाषा अधिगम स्तर के ऊपर न आने के कारण का भी अवलोकन करने का मौका मिला।

dkslZ ds ckn

गणेश जी कहते हैं कि ”कोर्स से इतना कुछ सीखकर मैं उत्साहित था और चाहता था कि यह कोर्स शिक्षा से जुड़े अन्य लोगों तक भी पहुँच सके, जिससे वे भी अपने विद्यालयों में बदलाव देख पाएँ। मैं अपने जिले में कोर्स के बारे में जितने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों से बात कर सकता हूँ, करता हूँ। कोर्स के लाभ साझा कर उन्हें प्रेरित करता हूँ, जिससे वे भी किसी प्रकार से सीखने की गतिविधियों में शामिल हों। इसके तहत उन्होंने अगले बैच के लिए आठ लोगों को प्रोत्साहित करके उनका नामांकन करवाया। 8 में से 2 संकुल शैक्षिक समन्वयक उनके साथ छत्तीसगढ़ राज्य में मेंटर की भूमिका में संकुल शैक्षिक समन्वयक को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

गणेश जी का मानना है कि पाठयपुस्तक में प्रत्येक पाठ संतुलित भाषा शिक्षण को पूर्ण करती है। जिसमे केवल मौखिक भाषा विकास पर ही जोर नहीं देती, वरण पठन –लेखन पर भी उचित गतिविधियों के साथ सभी आयामों पर खरे उतरती है। इसलिए, हम पाठयपुस्तक के आधार पर एल.एल.एफ. के सिद्धांतों को पूर्णतः पाठयपुस्तक के प्रत्येक पाठ में लागू करते हैं। बच्चों को 10 माह में पढ़ना व लिखना कैसे सिखाएँ, इस कोर्स से बेहतर समझ बनी है।

गणेश जी ने कोर्स को पूर्ण करने के बाद भाषा शिक्षण पर दो कार्यशालाओं का संचालन किया है। साथ ही, विकासखंड स्तर पर पी. एल. ग्रुप का भी गठन किया है, जो शिक्षक बैठक के दौरान भाषायी मुद्दों पर चर्चा करते हुए, समस्या का निदान भी करते हैं, और जिला स्तरीय बैठक में भी प्रस्तुत करते है। प्रत्येक माड्यूल पर प्रति माह संकुल शैक्षिक समन्वयकों की बैठक में ईकाईवार चर्चा की जाती है।

बस्तर जिले की सभी प्राथमिक शालाओं में इसे एक अभियान के रूप में चलाया जा रहा है, जिसके सकारात्मक परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं।

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रहे हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

गोपाल साहू

सहायक शिक्षक, शा. प्राथमिक शाला बिरकोनी, महासमुंद
2017 बैच, छत्तीसगढ़

"अगर बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं तो एक शिक्षक को यह समझने की जरूरत है कि आख़िर बच्चे को सीखने में मुश्किल कहाँ आ रही है। ज़्यादातर स्कूलों में ना सीख पाने के लिए बच्चों को ही दोषी मान लिया जाता है। एक नज़रिया यह भी हो सकता है कि हम यह सोचें कि हमारे सिखाने की पद्धति में क्या कमियाँ हैं जिससे बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं।"

यह विचार है गोपाल साहू का, जो प्राथमिक कक्षा बिरकोनी में एक शिक्षक के रूप में काम कर रहे हैं। बिरकोनी गाँव मुंबई–कोलकाता राष्ट्रीय राजमार्ग पर, रायपुर से करीब 55 किलोमीटर महासमुंद जिले में स्थित है। एक निजी विद्यालय में शिक्षक के रूप में काम करने की शुरुआत करने वाले गोपाल जी को पढ़ाते हुए एक दशक से ज़्यादा का समय हो चुका है। गोपाल जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स 2017 के प्रतिभागी हैं। आज पढ़ने– पढ़ाने के प्रति उनके जिस तरह के विचार हैं, वह एक शिक्षक के रूप में उनके विचारों में हुए सतत् विकास का परिणाम है और यह यात्रा अब भी ज़ारी है।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

गोपाल जी के शैक्षिक जीवन की शुरुआत निजी विद्यालय में कक्षा पाँचवीं में पढ़ाने से हुई। वहाँ कार्य करके उनको लगा कि सीखने–सिखाने के बारे में सचेत रूप से सोचना नहीं हो पा रहा। वहाँ ज़्यादा ध्यान बच्चे की भाषा पर न होकर, हिंदी में बात करने पर था। साथ ही, गृहकार्य को लेकर बहुत आग्रह रहता था। गोपाल जी बताते हैं कि "मेरा तरीका बहुत सरल था–सबसे पहले पाठ को पढ़ाता था। उसके बाद प्रश्न–उत्तर लिखाता था। बोर्ड पर उन्हें लिख देता था।

इतना करने के बाद लगता था कि मैंने अपने शिक्षक होने का दायित्व निभा दिया। लेकिन सब कुछ ठीक नहीं चल रहा था। यह मुझे कचोटता था कि बच्चे सीख नहीं पा रहे हैं या स्कूल छोड़ कर जा रहे हैं। लेकिन इस मुद्दे पर किस तरह व्यवस्थित तरीके से सोचा जाए, यह पता नहीं था।"

जब उन्होंने कक्षा पहली को पढ़ाना शुरू किया तो समझ में नहीं आया कि कैसे सिखाया जाए? कुछ पता नहीं होने के कारण उन्होंने भी "परंपरागत पद्धति" अपना ली। उनके मुताबिक, "परंपरागत पद्धति में एक व्यवस्थित क्रम था। जैसे– सबसे पहले अनार–आम और वर्ण की पहचान सिखा दें, उसके बाद पाठ–पठन शुरू करवा दें। बाकी शिक्षकों की तरह मेरी भी कोशिश रहती थी कि बच्चे को अनार–आम आ जाए, वर्ण पहचान हो जाए। ज़ल्दी सीखने के 'रटंत तरीके' से तो कई बच्चे फटाफट बोल लेते थे। लेकिन कक्षा के कुछ बच्चे ऐसा नहीं कर पाते और चुपचाप धीरे–धीरे कक्षा में पीछे होते जाते। लेकिन हकीक़त यह थी कि ज़्यादातर बच्चों को समझ में नहीं आ रहा होता था। जैसे ही बीच से उठाकर कुछ पूछो तो अटक जाते थे। धीरे–धीरे मुझे लगने लगा कि इस प्रकार बच्चों को सिखाया नहीं जा सकता है।"

dkslZ ls igys

इन अनुभवों ने गोपाल जी के सोचने–समझने का दायरा बढ़ाया। उनके मन में कई सवाल उठे, जैसे कि बच्चे सीखते कैसे हैं? अपने साथ भाषा का क्या–क्या ज्ञान लेकर आते हैं?– इस तरह के मूलभूत प्रश्नों ने उनकी खुद की मूलभूत मान्यताओं पर सवाल उठाए। उन्होंने बदलाव की जरूरत पर सोचना शुरू किया। कई प्रशिक्षणों में जाकर यह पता चला कि बच्चे पहले से बहुत कुछ सीख कर आते हैं। सभी बच्चे अच्छे होते हैं और सभी में सीखने की बहुत सारी संभावनाएँ होती हैं। हालाँकि, उन्हें यह समझ में नहीं आता था कि इसके लिए काम कैसे करना है।

इन्हीं सबके बीच एल.एल.एफ. के भाषा–शिक्षण कोर्स के बारे में पता चला। गोपाल जी बताते हैं कि "इस कोर्स में शामिल होने के बाद से बच्चों के साथ काम करने के मेरे दायरे का विस्तार हुआ है। इस कोर्स की सबसे अच्छी बात यह है कि भाषा–शिक्षण में बच्चों के साथ काम कैसे किया जाए, यह सीखने को मिलता है। खासकर गतिविधियाँ आयोजित करने को लेकर एक स्पष्ट योजना बनाने में मदद मिलती है। कहानी, कविता, मौखिक भाषा विकास इत्यादि काम गतिविधियों द्वारा कराए जा सकते हैं। यह सब समझना कक्षा आयोजन के लिए एक बड़ा बदलाव था। इस कोर्स से मुझे यह जानने को मिला कि मौखिक भाषा विकास पर काम करना कितना जरूरी होता है। लोगोग्राफ़िक पठन, डिकोडिंग पर किस तरह काम किया जाए। इसके अलावा इन सबको करते हुए बच्चों की भाषा में बदलाव करते हुए, उन्हें हिंदी की तरफ़ कैसे ले जाना चाहिए, इसकी भी समझ बनी।"

dkl! d: nkjku

अब गोपाल जी अपनी कक्षा की शुरुआत 'आज की बात' के साथ करते हैं। एक लड़का छत्तीसगढ़ी में बताता है कि आज उसके यहाँ पितर आए हुए हैं। कुछ दिन पहले ही पितृ–पक्ष शुरू हुआ है। छत्तीसगढ़ में अपने पितरों को पूजने का रिवाज है। कक्षा में चर्चा आगे बढ़ती है– आज क्या–क्या होगा तुम्हारे घर में? ज़वाब छत्तीसगढ़ी में आता है– "पूरी बनेगा, भजिया बनेगा, पूजा होगा।" एक बच्ची बताती है कि कल उसके यहाँ पितर आए थे और घर में पूरी और भजिया के साथ–साथ हलवा भी बना था। बातचीत का पिटारा खुल गया है। सभी बच्चों के पास अपने–अपने घरों में पितर आने के बारे में कुछ बताने के लिए है। ठेठरी, खुरमी, चौसीला, खीर, लड्डू, अईरसा, गुजिया, लपसी, गुलगुला, पकवा, पिड़िया, सोहारी, भजिया जैसे छत्तीसगढ़ी पकवानों के नाम आने लगते हैं। करीब दस मिनट 'आज की बात' पर कक्षा में चर्चा होती हैं। बच्चों के विवरण छत्तीसगढ़ी में आते हैं और गोपाल जी उनके साथ बातचीत करते हुए सभी बातों को हिंदी में दोहराते हैं।

इसके बाद गोपाल जी आज पढ़ाए जाने वाले पाठ की ओर आते हैं, जिसका नाम है– 'एकता में बल'। अब चित्रों से कहानी बनाने का कार्य शुरू होता है। गोपाल जी बच्चों से पूछते हैं कि "इस कहानी में कितने चित्र हैं? अब चित्र में क्या हो रहा है, कौन बताना चाहेगा?" एक साथ कई हाथ उठते हैं। गोपाल जी एक बच्चे को बोलने के लिए कहते हैं – "सर परेवा मन उड़त हस।" गोपाल जी इस वाक्य को हिंदी में बदल कर बोलते हैं – "परेवा मतलब कबूतर। पहले चित्र में बहुत सारे कबूतर उड़ रहे हैं।" आप में से किस–किस ने कबूतर देखा है? फिर कई हाथ उठे। एक बच्चा शर्माते हुए कहता है – "सर मेरे यहाँ परेवा पाला जाता है।"

"दूसरे चित्र में क्या है?" "सर, बहुत सारे कबूतर मिलकर जाल लेकर उड़ रहे हैं और बहेलिया उसके पीछे–पीछे आ रहा है।" "जाल कहाँ है?" "कबूतर के पैरों में फँसा हुआ है सर।" "जाल कहाँ से आया होगा?" "बहेलिया फैलाया होगा ना उसी में फँस गए होंगे।" "और बहेलिया पीछे–पीछे क्यों भाग रहा है?" "सारे कबूतर उड़ गए हैं तो वह पीछे–पीछे भाग रहा है।" एक बच्ची चित्र को ध्यान से देखती हुए कहती है– "सर, एक कबूतर जाल में नहीं है, वह आगे–आगे उड़ रहा है।" "तीसरा चित्र क्या है?" "सर चूहा जाल काट रहा है।" "चूहा जाल क्यों काट रहा होगा?" "परेवा जाल में फँस गया है और निकलना चाह रहा है।" "अच्छा, लेकिन चूहा जाल क्यों काटेगा?" थोड़ी देर सन्नाटा और उसके बाद कई हाथ उठते हैं– "परेवा और चूहा मितान होई ना सर, तो जारी काट दिहिस। (चूहा और कबूतर दोस्त होंगे इसलिए चूहे ने जाल काट दिया होगा।)"

फिर वो बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इतनी बातचीत से कहानी का संदर्भ बन गया है। चित्रों से कहानी का सबने मिलकर एक पूर्वानुमान लगाया। बच्चों की सहमति के बाद कहानी पठन शुरू होता है। सभी बच्चे अपनी–अपनी किताब पर उँगली रखते हुए शिक्षक के साथ पढ़ते हैं। पहली पंक्ति – जंगल में पीपल का एक पेड़ था। पीपल का पेड़ किसने– किसने देखा है? गाँव में है क्या, कहाँ पर है? अगली पंक्ति और फिर कुछ सवाल – वह क्या तलाश करने जाते थे? कबूतर क्या खाता है? कबूतर या परेवा कहाँ रहता है? पाठ के प्रत्येक अनुच्छेद के साथ उसके सभी वाक्यों को बच्चों के पूर्व–ज्ञान से जोड़ने की कोशिश चल रही है। पूर्व–ज्ञान और परिवेश पर आधारित सवाल और ज़वाव ढूँढने के लिए बच्चों की कोशिशें ज़ारी हैं।

पाठ खत्म होने के बाद गोपाल जी बच्चों से कहते हैं कि अब तीन–तीन के समूह में बैठकर उन शब्दों को ढूँढो, जिसको पढ़ने में दिक्कत हो रही है या मतलब समझ में नहीं आ रहा है। बच्चों ने अपने–अपने मितान के साथ समूह बनाया और कठिन शब्द ढूँढने में लग गए। बच्चों ने मिलकर शब्द ढूँढे – पीपल, कबूतर, धन्यवाद, क्षमा, इशारा, बहेलिया। गोपाल जी इन सारे शब्दों को ब्लैक बोर्ड पर लिखकर उसका अर्थ छत्तीसगढ़ी में स्थानीय संदर्भ के साथ बताया।

अब बारी आई– नए शब्द बनाने की। इसके बाद गोपाल जी बोर्ड पर क्रम से चार शब्द लिखे– बूढ़ा, चूहा, गधा और घोड़ा। फिर "बूढ़ा" के सामने लिखा : बूढ़ा – बूढ़े – बूढ़ों। बच्चों ने पहली पंक्ति के आधार पर शब्दों के पैटर्न ढूंडे जैसे– चूहा– चूहे– चूहों, गधा– गधे – गधों, घोड़ा– घोड़े– घोड़ों। अब सभी बच्चे चूहा और कबूतर का चित्र बनाते हैं। कक्षा में किताबों का स्थान अब पेंसिल और काग़ज ने ले लिया है। काग़ज पर कई आड़ी–टेढ़ी रेखाएँ मिलकर कबूतर और चूहा बनाने लगे जाते हैं।

dk1l d ckn

पहले गोपाल जी बच्चों को कहानी के पाठ का आदर्श पठन कराते थे, जिसके बाद सभी बच्चे एक–एक पंक्ति को सही उच्चारण के साथ पढ़ते थे। उसके बाद कहानी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर को ब्लैक बोर्ड पर लिखवाते थे। अगर कक्षा में प्रश्न भी पूछना हो तो तथ्य आधारित प्रश्न ही पूछना होता था। इस तरह एक पाठ को पढ़ाने में ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन लगते थे। कोर्स के बाद उनके पढ़ने के तरीके में काफी बदलाव आया है। गोपाल जी के अनुसार अब वो पहले ये सोचते हैं कि "मुझे इस पाठ पर किस तरह से काम करना है। कोशिश होती है कि पढ़ाई को बच्चों के पूर्व ज्ञान से जोड़ सकूँ। अब एक कहानी पर कम से कम एक सप्ताह काम करता हूँ और फिर भी ऐसा लगता है कि अभी कुछ और भी कराने के लिए बाकी रह गया है।" अब वो अपनी कक्षा को केवल तथ्यात्मक सवालों तक सीमित नहीं रखतें, अपितु

अपनी कक्षा में खुले छोर वाले प्रश्नों को भी शामिल करते हैं। इससे चर्चा की गुंजाइश बढ़ जाती है और चिंतन प्रक्रिया का विकास होता है।

चित्र 6: कक्षा में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करते हुए गोपाल जी

कोर्स के बाद गोपाल जी की कक्षा में बहुत सारे बदलाव आए हैं। 28 बच्चों की कक्षा में 16–17 बच्चे आराम से पढ़ लेते हैं। सामूहिक गतिविधियों में बहुत बढ़–चढ़ के भाग लेते हैं। दूसरी कक्षा के बच्चे वाक्यों को पढ़ लेते हैं। कक्षा की हर गतिविधि में बच्चे सक्रिय भागीदार बनते हैं। इस भागीदारी के लिए यह जरूरी है कि बच्चे को पाठ समझ में आए और वह सीखे। जो वे सीख रहे हैं, उसको वे अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर पा रहे हैं। गोपाल जी के अनुसार, बदलाव का यह सबसे खूबसूरत मानक है।

एक बच्ची धनेश्वरी का उदाहरण देते हुए गोपाल बताते हैं कि वह वर्ण और अक्षर को ठीक से नहीं पहचान पाती थी, लेकिन शब्दों को पढ़ लेती थी। कुछ दिन अवलोकन के बाद मुझे समझ में आया कि बच्ची के साथ पाठ के डिकोडिंग पर काम करने की ज़रूरत है। पाठ पढ़ाने के बाद शब्दों के ध्वनि प्रतीकों को अलग–अलग पढ़ने पर काम करना शुरू किया। फिर उसके साथ कुछ दिन पाठ के मुख्य शब्दों के साथ वर्णों पर काम करना शुरू किया। आज वह बच्ची कक्षा में अच्छा कर रही है।

हीराधर सिन्हा

सहायक शिक्षक, शा. प्राथमिक शाला भदरसी, महासमुंद
2016 बैच, छत्तीसगढ़

"डर के द्वारा किसी को नियंत्रित किया जा सकता है, सिखाया नहीं जा सकता। एक शिक्षक के रूप में मेरी कोशिश रहती है कि मैं कक्षा में बच्चों को सीखने के पर्याप्त मौके दे सकूँ"।

यह विचार है श्री हीराधर सिन्हा जी का जो महासमुंद जिले के बागबाहरा विकासखंड में भदरसी स्कूल में शिक्षक के तौर पर कार्यरत हैं। भदरसी गाँव आदिवासी बहुल गाँव है और यहाँ अन्य समुदायों के लोग भी रहते हैं। गाँव के संपन्न परिवार अपने बच्चों को पास के बागबहरा के निजी विद्यालयों में भेजते हैं। सरकारी स्कूलों में मुख्यतः आदिवासी समाज के बच्चे ही आते हैं या फिर ग़ैर–आदिवासी समाज के ऐसे परिवारों से जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं है। स्कूल के ज़्यादातर बच्चे प्रथम पीढ़ी के छात्र हैं। गाँव का भाषायी परिवेश मुख्यतः छत्तीसगढ़ी है। हीराधर सिन्हा जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2016 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

सिन्हा जी इस विद्यालय में पिछले एक साल से पढ़ा रहे हैं। पिछले दो दशक से अधिक अनुभव के बाद इनका मानना है कि बच्चों और शिक्षक के भयमुक्त संबंध के बिना सही मायने में पढ़ाई नहीं हो सकती है। हीराधर जी 'तोतोचान' पुस्तक को अपनी शैक्षिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण कड़ी मानते हैं। इस पुस्तक को पढ़ने का अवसर सर को डी.एड. कोर्स करते हुए मिला था। तोतोचान के बारे में सर बताते हैं – "कहानी में एक लड़की थी जो स्वतंत्र प्रवृति की बालिका थी। लेकिन वह जिस स्कूल में पढ़ती थी वहाँ के शिक्षक बहुत संवेदनशील नहीं थे। उन शिक्षकों का मानना था कि बच्चों को वही करना

चाहिए जिसकी स्वीकृति शिक्षकों से मिले। हम जो बोलेंगे उसके हिसाब से आपको पढ़ना है, लिखना है, जो भी करना है, बच्ची के मन में धीरे–धीरे निराशा भरने लगी। और बच्ची ने स्कूल छोड़ दिया। फिर दूसरे स्कूल में उसे एक ऐसा शिक्षक मिला जिसने आराम से उसकी सारी बातें सुनी। और फिर उस बच्ची में इतना ज़्यादा परिवर्तन आया कि वह स्कूल और पढ़ाई को लेकर बहुत उत्साहित रहने लगी। इस किताब का अनुसरण करते हुए मेरी कोशिश रहती है कि कोई भी बच्ची मुझसे दूर ना हो।" अपनी शैक्षिक यात्रा में हीराधर जी ने बहुत सारे प्रशिक्षण लिए, लेकिन उन्हें हमेशा यह शिकायत रहती थी कि बच्चों के साथ काम कैसे किया जाए, इसके बारे में कोई नहीं बताता था। आखिरकार उन्हें इस सवाल का जवाब शिक्षण के लिए एल.एल.एफ द्वारा संचालित कोर्स करने से मिला।

dkslZ ls igys

हीराधर जी ने बिना शैक्षिक प्रशिक्षण के पढ़ाना शुरू किया था। वे बताते हैं कि "पढ़ने–पढ़ाने को लेकर उस समय बहुत पता नहीं था। पारंपरिक पद्धति से, जैसे हम लोग पढ़ कर आए थे – अनार–आम पढ़ो, वर्ण पढ़ो, शिक्षक इनको ब्लैक बोर्ड पर लिख देंगे, बच्चे उनको रट लेंगे, फिर वर्णों को जोड़कर शब्द बनाना – यही सब करते थे। उस पद्धति से पूरे साल में बच्चे वर्ण भी नहीं सीख पाते थे।" आगे बताते हुए सिन्हा जी कहते हैं कि अभी भी जहाँ यह पद्धति चल रही है, वहाँ ज़्यादातर बच्चे पढ़ नहीं पाते हैं। उनके अनुसार, ये इस वजह से होता है क्योंकि ज़्यादातर शिक्षक भी यह समझ नहीं पाते हैं कि उनको करना क्या है।

पहले उन्हें लगता था कि बच्चों को केवल पढ़ना चाहिए। इसके लिए बच्चों को ज़बरदस्ती नियंत्रण में रखना अनिवार्य हो जाता, इससे बच्चों पर बहुत दबाव पड़ जाता था। हीराधर जी के अनुसार "इस नियंत्रण को हम अनुशासन का नाम दे देते हैं। इतने दबाव में बच्चे अनमने ढंग से ही सीखते हैं। तब कक्षा में गतिविधि के द्वारा शिक्षण प्रचलन नहीं था और आज भी ज़्यादातर स्कूलों में नहीं है।" अपने अनुभव से हीराधर जी को ये भी ज्ञात हुआ कि परंपरागत व्यवस्था में शिक्षण से कुछ बच्चे तो सीख लेते हैं पर कुछ नहीं सीख पाते हैं। उन्होंने पाया कि "जिन बच्चों के घर में पढ़ने–लिखने का माहौल है, माता–पिता पढ़े–लिखे होते हैं, उन्हें घर पर भी पढ़ाया–लिखाया जाता है। ऐसे में ये बच्चे परंपरागत तरीके से भी सीख जाते हैं। लेकिन शासकीय पाठशाला में जो भी बच्चे आ रहे हैं उनमें से ज़्यादातर प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं। वे जो स्कूल में सीख लेते हैं, बस वही सीख पाते हैं। घर पर कोई भी उनको सिखाने वाला नहीं होता हैं। इस तरह परंपरागत पद्धति में यह विभाजन होने लगता है – कुछ सीखने वाले बच्चे और कुछ नहीं सीखने वाले बच्चे।"

dkslZ ds nkSjku

हीराधर बताते हैं कि कोर्स करने के बाद उनकी कक्षाएँ पहले से बहुत बदल गई हैं। पढ़ने–पढ़ाने में आए इस बदलाव को कक्षा में ही समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं–

हीराधर कक्षा 1 के बच्चों को पाठयपुस्तक पर काम करवाते हैं। सबसे पहले पुस्तक खोलकर बच्चों को दिखाते हैं और उनसे पूछते हैं कि "उन्हें क्या–क्या चित्र दिख रहे हैं? बहुत से बच्चे एक साथ बोलते हैं – गमला, मछली, नल और बाल्टी। अब इन चित्रों पर सवाल–ज़वाब शुरू हो जाते हैं जैसे –

"गमला का क्या काम होता है? किसके–किसके घर में गमला है?" नल के चित्र को देख कर हीराधर जी फिर बच्चों से सवाल पूछते हैं –

"नल में पानी कहाँ से आता है?" पहला ज़वाब आता है–सर, टंकी से।"

हीराधर जी फिर पूछते हैं– "टंकी देखे हो जी, किसके–किसके घर है?" और ऐसे शुरू हो जाता हैं अनगिनत सवालों और ज़वाबों का सिलसिला– "मछली कहाँ देखे हो?"

"सर, तरिया में देखे हैं।"

"मछली को अगर पानी से निकालो तो फिर क्या होता है?" ऐसे हर शब्द से कुछ और सवालों पर चर्चा होती हैं ताकि उस शब्द को बच्चे अपने पूर्वज्ञान और कविता के साथ जोड़ पाएँ।

इस तरह कविता शुरू करने से पहले इस पाठ के मुख्य शब्दों के संदर्भ पर खुल कर चर्चा हो चुकी है। अब पूरे हाव–भाव के साथ कविता पढ़ी जाती है। सर आगे–आगे और बच्चे पीछे–पीछे उसको दोहराते हैं।

कविता पाठ के बाद शब्द पहचान पर काम किया गया। सर बच्चों को किताब में सभी चित्रों को दिखाते हुए प्रश्न–उत्तर शैली में बातचीत करते : यह किसका चित्र है – गमले का। गमले के नीचे क्या लिखा है – ग़म़ला। अगली गतिविधि के लिए हीराधर जी एक दूसरी सहायक पठन सामग्री का उपयोग करते हैं – एक बड़े से कागज पर पाठ में दिए हुए सारे चित्र बने हुए हैं। बच्चों को एक–एक करके सभी चित्रों के साथ शब्द कार्ड को लगाना है। धीरे–धीरे बच्चे सारे शब्द कार्ड लगा देते हैं।

अगली गतिविधि वर्ण से शब्द बनाने पर आधारित है। हीराधर जी बच्चों को शब्द–कार्ड दिखाते हैं एवं वर्ण–कार्ड से शब्द बनाने के लिए कहते हैं। अब बारी है एकल पठन की। सब बच्चों ने कविता को उँगली रखकर पढ़ा। पढ़ने के बाद अब लिखने की बारी है। इसके बाद हीराधर जी ने सभी बच्चों को अपनी–अपनी स्लेट पर इन चार शब्दों को लिखने के लिए कहा।

dkslZ ds ckn

हीराधर जी बताते हैं कि "इस कोर्स को करने के बाद पहली बार शुरुआती कक्षाओं में गतिविधि के आयोजन की समझ बनी। गतिविधि–आधारित शिक्षण की बात करें तो ज़्यादातर शिक्षकों को इस बात की समझ नहीं होती है कि आखिर गतिविधि क्यों कराएँ। इसलिए गतिविधि–आधारित शिक्षण का विरोध भी होता है। यह पाठ्यक्रम 'गतिविधि क्यों कराएँ' के साथ में यह भी बताता है कि 'गतिविधि कैसे कराएँ'।"

उन्हें ये भी लगता है कि इस कोर्स ने पहली बार शुरुआती कक्षाओं में भाषा शिक्षण कराने के बहुत सारे दायरे खोले। जैसे– मौखिक भाषा विकास, ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग इत्यादि। वे कहते हैं कि "इन अवधारणाओं के बारे में काम करते हुए बहुत कुछ सचेत तरीके से कभी सोचना नहीं हुआ था।" एक और बड़ा बदलाव – शिक्षक और छात्रों के आपसी संबंधों में आया है। हीराधर जी ने एक मित्रवत माहौल बनाने की सचेत रूप से कोशिश की है जहाँ छात्र खुद को सहजता से अभिव्यक्त कर पाए। इससे मौखिक भाषा विकास में विशेष बदलाव नजर आने लगा है। बच्चों में अपने विचार को खुलकर अभिव्यक्त कर पाने की क्षमता का विकास हुआ है। इतना ही नहीं, बच्चे अब ज़्यादा तार्किक तरीके से अपनी बात कह पा रहे हैं।

हीराधर जी बताते हैं कि "बच्चों की भाषा को कक्षा में अधिक महत्व मिलने से वे ज़्यादा उत्साहित होते हैं और सीखने के प्रति सहज महसूस करते हैं। बच्चे अपनी भाषा में अपनी राय रख पाते हैं जिससे पता चलता है कि वे किस प्रकार की चुनौतियाँ महसूस कर रहे हैं और कहाँ सुधार की आवश्यकता है। आज बच्चों में एक स्वतःस्फूर्तता आई है। अगर किसी दिन कुछ अन्य कामों में व्यस्तता होती है तो वे खुद ही आकर पूछने लगते हैं – हम लोग चित्र बनाएँ क्या? या कविता पढ़ें क्या?"

चित्र 7: बच्चों के साथ कक्षा में गतिविधि करते हुए हीराधर जी

हीराधर जी बताते हैं कि "लेखन को लेकरः पहले बच्चों को सीधे–सीधे अक्षरों में लिखने के लिए सिखाया जाता था। अब शुरुआत घसीटा लेखन व आड़ी–तिरछी रेखाओं के द्वारा होती है। उनके किसी भी चित्र या वर्ण के लेखन की कोशिश का सम्मान किया जाता है। इससे बच्चों की लिखने में भी रुचि बढ़ी है।" हीराधर जी बताते हैं कि आज कक्षा पहली में काम करते हुए उनको तीन महीने से ज़्यादा हो चुका है। अभी 80 प्रतिशत बच्चे स्वंतत्र होकर काम कर रहे हैं। सीखने की उनकी गति अच्छी है, डिकोडिंग कर पा रहे हैं। उनको उम्मीद है कि इस अकादमिक सत्र के अंत तक बच्चे पढ़ना–लिखना सीख जाएंगे। लेकिन उन्हें इसके साथ इस बात की ज़्यादा खुशी है कि शिक्षक–छात्र के बीच जो एक अदृश्य दीवार थी आज वह कई जगहों से टूट चुकी है।

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रहे हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

ईश्वरी कुमार सिन्हा

सहायक शिक्षक, शा. प्रा. शाला, चिटौद

2016 बैच, छत्तीसगढ़

"बच्चे नियम बनाकर, अनुशासित होकर भाषा नहीं सीखेंगे। सीखेंगे तो सहज स्वभाव और वातावरण से। जोड़कर रखेंगे तो भाषा सीखेंगे।" यह मानना है ईश्वरी जी का, जो कि दस साल से शासकीय प्राथमिक शाला, चिटौद, छत्तीसगढ़ में सहायक शिक्षक पंचायत के तौर पर कार्यरत हैं। ईश्वरी जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2016 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

ईश्वरी जी के शैक्षिक जीवन की शुरुआत 1998 में एक निजी स्कूल में अध्यापन करने से हुई थी। वहाँ दस साल अपनी सेवाएँ देने के बाद वे शासकीय क्षेत्र से जुड़ गए। पिछले कई वर्षों से अपने कार्यक्षेत्र के तहत वे हिंदी पर ही काम कर रहे थे। उनका ध्यान सिर्फ हिंदी की तरफ ही था।

dkl l iol

ईश्वरी जी शुरुआत से कक्षा पाँचवी पढ़ा रहे हैं और उन्हें यह पता चला कि बच्चे इस कक्षा में हैं, मगर उनको अभी भी पढ़ने–लिखने में समस्या आती है। ये बच्चे गणित में जोड़ने–घटाने के सवाल अंकों के साथ करने में सक्षम हैं, परंतु जैसे ही सवाल शाब्दिक रूप ले लेते हैं, बच्चे सरल जोड़ना–घटाना भी नहीं कर पाते हैं यहाँ ईश्वरी जी को समझ में आया कि मुश्किल गणित नहीं, बल्कि भाषा है। उन्हें पढ़ना नहीं आता है, इसलिए वो सवाल हल नहीं कर पाते हैं।

dkslZ ds nkSjku

कोर्स के दौरान ईश्वरी जी ने भाषायी रणनीतियाँ सीखीं जो पठन और लेखन से जुड़ी हैं, जिससे उन्हें यह मालूम हुआ कि भाषा शिक्षण में भी कुछ शोध और अध्ययन हुए हैं जिनके परिणामस्वरुप कुछ मानदंड और कुछ तय पैमाने हैं। अन्य विषयों की तरह (गणित/विज्ञान) भाषा में भी ऐसे मानक हैं जिनके अनुसार बच्चों का पढ़ना/प्रवाह बेहतर किया जा सकता है। ईश्वरी जी का कहना है, "अब मैंने कक्षा पहली और दूसरी के भाषायी अधिगम सुनिश्चित किए हैं मैं भाषा को हर विषय से जोड़कर देखता हूँ। हर विषय को समझने के लिए भाषा को ही एक कड़ी मानता हूँ। मैं प्राथमिक स्तर के साथ–साथ कक्षा पाँचवीं तक के बच्चों के साथ यह रणनीति अपनाता हूँ।

ईश्वरी जी के अनुसार पठन रणनीति कोर्स की प्रमुख देन है। "भाषा सीखने के कई पहलू नापे जा सकते हैं – यह मेरे लिए कोर्स का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। यह अंतर्राष्ट्रीय मानक हैं और बच्चों के भाषा सीखने में शिक्षक इनका इस्तेमाल प्रत्यक्ष रूप से कर सकते हैं। कितने मिनट में एक बच्चा कितने शब्द पढ़ रहा है – इस बात पर ध्यान देते हुए मैंने अपने विद्यालय में कार्य किया। जो बच्चे तय मानक से बहुत पीछे हैं या अपने स्तर–अनुसार नहीं पढ़ पा रहे हैं, उनको पढ़ने के ज़्यादा अवसर देना, स्तर के अनुकूल पाठ/कहानियाँ देना, आदर्श पठन को देखने–सुनने के बाद उन्हें मौखिक रूप से पढ़ने का समय देना, फिर जोड़ों में/छोटे समूहों में पढ़ना – यह सब किया है।" इतना ही नहीं, उन्होंने कोर्स के द्वारा ही मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों का महत्व समझा और भी कई नई महत्वपूर्ण बातें पता चलीं जैसे– बच्चों को भाषा की गतिविधियों से कैसे जोड़ें, घर की भाषा से अकादमिक भाषा तक कैसे लाएँ, उत्साहपूर्वक भागीदारी कैसे बढ़ाएँ एवं आत्मविश्वास से कैसे काम करवाएँ।

dkslZ ds ckn

कोर्स के बाद ईश्वरी जी ने पाया कि मौखिक अभिव्यक्ति के स्वतंत्र अवसर पाकर कई बच्चे पाठयपुस्तक की कविता व कहानियों को चित्र शब्दों द्वारा अनुमान के साथ बिना संकोच पढ़ पा रहे हैं। दो वर्णों की पहचान व उनसे बने शब्दों को पहचान तथा लिख पा रहे हैं। अब बच्चे अपने नाम को पहचान पाते हैं; साथ ही, उनमें आने वाले अक्षरों को भी स्वतंत्र रूप से पहचानते हैं। वे अपने नाम में आए अक्षरों से शुरू होने वाले कक्षा के अन्य बच्चों के नाम को पहचानने की गतिविधि में भी बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं।

ईश्वरी जी बताते हैं कि कोर्स में सीखे गए दोहरान और तुकांत वाले शब्दों की गतिविधियों और खेलों से भी असर पड़ा–

34 बच्चों ने "पक्की" और "चक्की" शब्दों की तुक मिलाते हुए करीब 10–15 छोटे वाक्यों की एक कविता रची। उन्होंने इस स्वरचित कविता को गाया भी। मौखिक भाषा की गतिविधियों के अंतर्गत कक्षा में अभिनय भी ज़्यादा होने लगे जिससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ गया है। उन्हें अब भाषा के इस्तेमाल से डर नहीं लगता है। इसके फलस्वरूप अब प्रार्थना सभा में 40–50 बच्चे अलग–अलग समय पर सामने आकर बोलते हैं, और सभा संचालित करते हैं। ईश्वरी जी का मानना है कि आत्मविश्वास से सराबोर बच्चे अब भाषा के कारण प्रदर्शन से पीछे नहीं हटते।

कोर्स करने के बाद अपने शिक्षण में आए बदलाव के बारे में ईश्वरी जी बताते है कि, "अब हम पठन और लेखन की गतिविधियों पर अलग से और खास ध्यान दे पाते हैं। इसका एक परिणाम यह है कि कक्षा पाँचवीं के 17 बच्चों ने अपनी पाठयपुस्तक के पाठ 3, जो एक छत्तीसगढ़ी पाठ है, के 17 अनुच्छेद को हिंदी में अनुवाद किया है। बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास और शब्दावली पर सतत् अभ्यास का यह परिणाम है कि अनुवाद जैसा उच्चस्तरीय कौशल भी वे सीख रहे हैं और उसको प्रयास करने से वे हिचकते नहीं हैं।"

चित्र 8: कक्षा में टी.एल.एम प्रदर्शित करते हुए ईश्वरी जी

वर्ष 2018 में ईश्वरी जी को राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। शिक्षण में उनके सतत् काम को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया। उनके अनुसार यह सम्मान खुशी तो देता है, साथ ही निरंतर काम करने की जिम्मेदारी भी लाता है। इतना ही नहीं, ईश्वरी जी क्रियात्मक अनुसंधान के विषय प्रारंभिक भाषा शिक्षण में मल्टीमीडिया उपयोग से पठन एवं लेखन गतिविधि के प्रभाव पर भी निरंतर काम कर रहे हैं। स्कूल में होती गतिविधियों और उनके प्रयोग का प्रत्यक्ष अवलोकन करने पाँच शिक्षकों का समूह विश्व शिक्षक दिवस पर उनके स्कूल पहुँचा था। कक्षा पहली के 33 बच्चों ने पहले तो प्रोजेक्टर द्वारा शैक्षिक बाल गीत और मनोरंजक बाल फिल्म का आनंद उठाया फिर उन बाल गीतों पर बच्चों ने अभिनय के साथ मस्ती में नाचा–गाया।

ईश्वरी जी के अनुसार, "प्रदेश स्तर पर हमने एक संयुक्त टीम भी गठित की है जो भाषायी शिक्षण पर विमर्श करती है । ट्विनिंग ऑफ स्कूल्स के तहत हमारा समूह एक–दूसरे को सहायता देता है, एक–दूसरे से सीखते हैं और शालाओं में जाकर नया अनुभव साझा करते हैं।" उन्होंने कक्षा के अलावा इस कोर्स के कई ऐसे मुद्दे जिनमें, अन्य शिक्षकों के साथ मिलकर चर्चा, सीखना, गतिशील होना एवं अपने कार्यक्षेत्र में योगदान देना, को भी अपने शिक्षण का एक उद्देश्य बनाया। अपने बैच के प्रतिभागियों और अपने अनौपचारिक शिक्षक समूह को लेकर वे अपने प्रयास जारी रखे हुए हैं।

माधव चतुर्वेदी

सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय गोरा, मथुरा
2017 बैच, उत्तर प्रदेश

"यदि एक शिक्षक सही मायनों में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे तो हर बच्चे का सार्वभौमिक विकास संभव है। बातचीत वह माध्यम है जिससे हम बच्चों के दिल तक पहुँच सकते हैं और जहाँ बच्चे दिल से जुड़े हों वहाँ निश्चित तौर पर शिक्षण के अपेक्षित उद्देश्यों तक पहुँचा जा सकता है।"

ऐसा मानना है माधव चतुर्वेदी जी का। वे एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स –2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

26 वर्षीय माधव चतुर्वेदी जी मूलतः मथुरा के निवासी हैं। बचपन से वह फ़ौज में अधिकारी बनना चाहते थे। NCC किया और SSB का इंटरव्यू पार कर उनका चयन फ़ौज में हो गया। चेन्नई में फ़ौज की ट्रेनिंग के दौरान हुई एक दुर्घटना की वजह से उन्हें फ़ौज की नौकरी को मेडिकल कारणों की वजह से छोड़ना पड़ा किंतु कहते हैं कि कोई दुर्घटना इतनी बड़ी नहीं होती कि वह जीवन की गति को रोक दे। महीनों की उदासी देख, एक दिन उनके पिताजी ने कहा, "फ़ौज में तो तुम केवल देश की सेवा कर सकते हो, पर शिक्षा विभाग से जुड़कर पूरी मानवता की सेवा की जा सकती है"। तब TET की परीक्षा उत्तीर्ण कर 2 जुलाई 2016 को माधव जी की नियुक्ति प्राथमिक विद्यालय गोरा, विकास क्षेत्र चौमुहाँ, जिला मथुरा में सहायक अध्यापक पद पर हुई।

मथुरा से लगभग 40 किलोमीटर दूर उनके स्कूल जो रास्ता जाता है, वह काफी ख़राब है, वहाँ कोई टैक्सी या ऑटो नहीं जाती। रोज़ इस रास्ते से आना–जाना अपने आप में एक चुनौती भरा कार्य है। स्थानीय लोगों ने बताया कि बारिश में तो

यह रास्ता चलने योग्य नहीं रहता है।

dkslZ ls igys

गाँव के आस–पास कोई भी निजी स्कूल न होने के कारण बच्चों के उपस्थिति की समस्या इस स्कूल में कभी भी नहीं रही, किंतु शिक्षकों का अभाव हमेशा से रहा है। माधव जी के अलावा इस स्कूल में दो शिक्षाकर्मी नियुक्त हैं। ऐसे दिन कम ही होते हैं जब ये तीनों शिक्षक एक साथ स्कूल में उपस्थित रहते हैं। विभाग में 8 महीने की नौकरी के बाद ही उन्हें डाइट प्राचार्य मथुरा द्वारा एल.एल.एफ के इस कोर्स की जानकारी मिली। कोर्स से जुड़ते हुए उन्हें इस बात का बिलकुल भी आभास नहीं था कि यह कोर्स क्या है, केवल इतना ही पता था कि यह कोर्स प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा विकास से संबंधित है। वे इस कोर्स से केवल इसलिए जुड़े क्योंकि वह हमेशा से यह मानते थे की जिस बच्चे की भाषा पर पकड़ अच्छी होती है, वह बाकी सभी विषयों पर भी बेहतर समझ विकसित करने के लिए सक्षम हो जाता है।

dkslZ ds nkSjku

भाषा शिक्षण के बारे में ज़्यादा जानने के लिए माधव जी की भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं– माधव जी पहले कक्षा 1 और 2 के कक्षा में गए। पिछले हफ़्ते उन्होंने बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास की एक गतिविधि कराई थी, 'बोल भाई कितने', बच्चों से कहा कि उन्हें वही गतिविधि फिर से करनी है। सभी बच्चे एक बड़े से घेरे में खड़े हुए और एक बच्चा बीच में। सभी बच्चे गोल घेरे में घूमने लगे और बीच में खड़ा बच्चा बोल रहा था 'बोल भाई कितने' सभी बोल रहे थे 'आप चाहें जितने' और फिर अचानक बीच में खड़ा बच्चा बोला 'चार' और घेरे में घूम रहे सभी बच्चे चार–चार के समूह बना कर खड़े हो गए और जो 3 बच्चे बचे थे, वे खेल से बाहर हो गए। भोजन के बाद कक्षा 1 से 3 के सभी बच्चे अपने कक्ष में चले गए। माधव जी आज इस कक्षा को पढ़ाने वाले थे। वे कक्षा 1 से 3 के साथ ज़्यादा कार्य करते हैं।

माधव जी ने सबसे पहले बोर्ड पर एक ग्रिड बनाया। अब उन्होंने सबसे पहले कक्षा 1 के बच्चों को बुलाया और एक–एक अक्षर और वर्ण पहचानने को कहा। इसके बाद उन्होंने बच्चों से ग्रिड पर लिखे कुछ अक्षरों से शुरू होने वाले शब्द बताने को कहा। बच्चों द्वारा बताए गए शब्दों को पहले तो उन्होंने स्वयं बोर्ड पर लिखा और फिर उन्होंने कुछ बच्चों को बताए जा रहे शब्दों को लिखने के लिए आगे बुलाया। अब बारी आई कहानी की।

माधव जी ने सबसे पहले तो कहानी–चालाक चूहा को बच्चों की पृष्ठभूमि से जोड़ने के लिए चर्चा शुरू की। फिर कहानी

के साथ दिए गए चित्र बच्चों को दिखाए और पूछा – यह कौन–सा जानवर है। कुछ बच्चों ने कहा 'मूसा' (चूहे को स्थानीय भाषा में कहते हैं)। पहले पन्ने पर और भी चर्चा हुई जहाँ माधव जी ने बीच–बीच में बच्चों की घर की भाषा का भी इस्तेमाल किया। ज़्यादातर बच्चे अपने घर की भाषा में ही जवाब दे रहे थे। बच्चे अपने अनुभव बताने लगे। माधव जी ने पूछा कि "उन्होंने चूहा कहाँ देखा है"? तो किसी ने कहा घर में, किसी ने कहा खेत में और एक बच्चे ने कहा स्कूल में भी दिखता है । एक बच्चे ने बताया कि कैसे वह एक दिन जब सो रहा था तो उसके पैर के ऊपर एक चूहा चढ़ गया और वह डर के मारे उठ गया।

कुछ देर चर्चा के बाद माधव जी ने कहानी को हाव–भाव के साथ पढ़ कर बच्चों को सुनाया। माधव जी बीच–बीच में कुछ प्रश्न भी किए। कुछ कठिन शब्दों के अर्थ भी बताए। कहानी समाप्त होने के बाद उन्होंने एक बार फिर से कहानी पढ़ बच्चों से अनुमान लगाने वाले प्रश्न किए। 2 बार कहानी सुनाने के बाद उन्होंने बच्चों से कहानी के घटनाक्रम से जुड़े कुछ प्रश्न पूछे। एक–एक करके बच्चे कहानी का घटनाक्रम बताते गए। कहानी पर कार्य पूर्ण होने के बाद उन्होंने बच्चों को 4 समूहों में विभाजित किया और हर समूह को एक कहानी बनाने का कार्य दिया।

कहानी बनाने के लिए उन्होंने कहा की, "आप सभी को 2 जानवरों का चयन करना है और फिर उनकी दोस्ती पर एक कहानी बनानी है।" चारों समूह में वे बारी–बारी से गए। उनसे उनकी योजना पूछी और कुछ मदद भी की। फिर समूह के सदस्यों को कक्षा में अपनी बनाई हुई कहानी सुनाने को कहा। समूह में कहानी बनाने की इस गतिविधि के बाद माधव जी ने सभी बच्चों को एक अपनी सुनाई गई कहानी के किसी पात्र का चित्र बनाने को कहा। उन्होंने कहा कि जो बच्चे इस पात्र के बारे में कुछ लिखना चाहते हैं वे लिख भी सकते हैं। सभी बच्चे अपने–अपने पेपर पर चित्र बनाने लग गए।

dkslZ ds ckn

माधव जी का कहना है कि "एल.एल.एफ के इस कोर्स से जुड़कर ही मैंने सीखा कि पढ़ाते कैसे हैं। एक शिक्षक के रूप में मेरी ट्रेनिंग तो हुई थी, मैंने बी टी सी (BTC) का कोर्स भी किया था, लेकिन पिछले 7 महीनों में भाषा शिक्षण को लेकर मैंने खुद में जो आत्मविश्वास देखा है वह इसी कोर्स की देन है। हर मॉडयूल मानो अपने–आप में ज्ञान का एक विशाल भंडार लिए है। आपको शायद लगे कि मैं कुछ ज़्यादा ही तारीफ़ कर रहा हूँ किंतु मेरे लिए यह कोर्स सच में ख़ास है। मुझे खेद है की कई विभागीय व्यस्तताओं की वजह से मैं कोर्स से बनी समझ को बच्चों तक उस तरह पहुंचा नहीं पा रहा हूँ, जैसे मैं चाहता हूँ। किंतु इस बात का संतोष है की जितना भी समय मैं बच्चों को दे रहा हूँ वह उनके सार्थक विकास की दिशा में ही है। अब मेरे प्रयासों को देखकर मेरे विद्यालय के शिक्षाकर्मी और प्राथमिक विद्यालय देवीपुरा की

दो सहायक अध्यापिकाएँ भी बच्चों से बेहतर ढंग से जुड़ने के लिए प्रेरित हैं।"

उनके विद्यालय के साथी अध्यापक बताते हैं कि कैसे वे भी माधव जी से कुछ गतिविधियाँ सीख रहे हैं।" पहले जो भी अध्यापक इस स्कूल में कार्यरत थे, वे बहुत कम ही स्कूल आते थे। बरसात के दिनों में तो वे आते ही नहीं थे। मास्टर जी तो हर दिन आते थे और कई बार तो कीचड़ से लथपथ।" उनका कहना था कि माधव जी के आने से पहले बरसात के तीन महीनों में यह स्कूल तो कभी खुला ही नहीं। उन्होंने आगे बताया कि मास्टर जी बच्चों के साथ बच्चे बन जाते हैं, चाहे वह खेल का मैदान हो या कक्षा। शायद इसलिए जब भी वे उनकी कक्षा में जाती हैं, उन्हें हर बार कुछ नया सीखने को मिलता है।

चित्र 9

माधव जी का कहना है कि कक्षा 1 से 3 के बच्चों को एक साथ पढ़ाना उनके लिए हमेशा से चिंता का विषय रहा है। किंतु कोर्स से विकसित हो रही समझ से कुछ हद तक वे अपनी इस चिंता को दूर कर पा रहे है। पहले उन्होंने कभी इस बात पर गौर नहीं किया कि चाहे बच्चे अलग–अलग स्तर के क्यों न हों, वे सभी किसी पाठ या कहानी को सुन कर समझ जाते हैं और उस पर हो रही चर्चा में वे सभी शामिल हो सकते हैं। वे सभी बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ करते हैं और फिर बच्चों को कक्षा के हिसाब से लेखन का कार्य दे देते हैं। अब वे इस बात को समझ गए हैं कि कक्षा पहली में प्रवेश करने वाले बच्चों को पहले उनके घर की भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के अवसर देने चाहिए। प्रिंट के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है। उन्हें कहानी की किताबों को उलटने–पलटने की मौके देना, आड़ी तिरछी रेखाएँ बनाकर अपने आपको अभिव्यक्त करने के मौके देना आवश्यक है।

एक शिक्षक के रूप में माधव जी केवल एक ही साल हुआ है किंतु शिक्षण और बच्चों के प्रति इनका लगाव व समर्पण सच में काबिले तारीफ़ है। वे कहते हैं ज़्यादातर लोगों का यही मानना है कि छोटी कक्षाओं में एक पुरुष अध्यापक का बच्चों से वैसा जुड़ाव मुश्किल है जैसा की एक महिला अध्यापक का होता है। किंतु वे मानते है उनके लिए यह जुड़ाव बहुत ही आसान रहा क्योंकि इन्होंने इन बच्चों को केवल छात्रों के रूप में नहीं देखा है, इन बच्चों को वे अपने बच्चों की तरह देखते हैं। माधव जी के जीवन का यही लक्ष्य है कि वे इन बच्चों के विकास के लिए बहुत कुछ करें। पहली नौकरी होने की वजह से एक खास स्नेह उन्हें इस गॉव से व अपने स्कूल के बच्चों से हो गया है। उनका सपना है कि वे इस स्कूल को एक गुरुकुल बनाएँ और स्वयं यहीं बच्चों के बीच रहें।

ममता सोनेश्वर

सहायक शिक्षक, शा. प्रा. शाला कंजेली, बालोद

2017 बैच, छत्तीसगढ़

"यहाँ के बच्चे बोगस है, यह मानकर आप कभी भी किसी बच्चे को कुछ सिखा नहीं सकते हैं। सीखने–सिखाने की किसी भी प्रक्रिया के लिए सबसे जरूरी यह है कि आप यह विश्वास करें कि बच्चा सीख सकता है।"

यह विचार है ममता सोनकर जी का जो छत्तीसगढ़ के प्राथमिक विद्यालय कंजेली में कार्यरत हैं। ममता जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स– 2017 की प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

बारहवीं पास करके ममता जी ने इस स्कूल में अपनी पहली नियुक्ति के तौर पर अपने शिक्षकीय जीवन की शुरुआत की। गाँव के लोग उनको चुनमुन मैडम कह कर बुलाते। पिछले एक दशक से ज़्यादा समय से पढ़ा रहीं ममता जी, इस गाँव के शैक्षणिक विकास के लिए उत्साह और समर्पण के साथ काम कर रहीं हैं। ममता जी के अनुसार घने जंगलों के बीच स्थित आदिवासी बहुल इस गाँव में आज भी परिवहन के साधन का अभाव है। आज भी यहाँ के लगभग सारे बच्चे प्रथम पीढ़ी के छात्र हैं। पारिवारिक संरचना में शिक्षा के प्रति विशेष जागरूकता नहीं है। मतलब, घर से बच्चों को पढ़ने–लिखने में किसी तरह का कोई सहयोग नहीं मिलता है। स्कूल गाँव के एक छोर पर है। चारदीवारी से घिरे इस परिसर में ही गाँव की आंगनबाड़ी भी है। परिसर में सभी भवन पक्के हैं। जब ममता जी शुरुआत में स्कूल में आई तो यह समझ में आया कि समाज में शिक्षा के प्रति कोई जागरूकता नहीं है। लेकिन इसके साथ यह भी समझ में आया कि वर्तमान स्कूल–व्यवस्था भी इन बच्चों के प्रति संवेदनशील नहीं है। वे बताती है कि "इस गाँव के बच्चों के बारे में शिक्षा–व्यवस्था

में काम करनेवाले ज्यादातर साथियों का मानना था कि यहाँ के बच्चे बोगस हैं और इनका कुछ नहीं हो सकता है। लेकिन वो ये नहीं समझते कि अगर आप पहले से ही इनको बोगस मान लेंगे तो फिर हम इनको क्या कभी कुछ सिखा सकेंगे? तो शुरुआत से इस बात को लेकर मैं स्पष्ट थी कि अगर इनको पढ़ाना है तो उन्हें बोगस मानकर तो यह संभव नहीं है। यह विश्वास रखना ही होगा कि ये बच्चे भी सीख सकते हैं।"

dksl2 ls igys

एक शिक्षिका के तौर पर ममताजी की पहली नियुक्ति इसी स्कूल में हुई थी। उस समय उनकी मुख्य सोच यही थी कि एक शिक्षक का यह कर्तव्य है कि पाठयपुस्तकों में जो भी दिया गया है उसको वह ईमानदारी के साथ बच्चों को पूरा करवाएँ। जब ममताजी पहली बार स्कूल आई थीं तो उस समय पाँचवीं के बच्चे पढ़–लिख नहीं पाते थे। उन्हें पहली से लेकर पाँचवीं तक पूरी कक्षा एक जैसी लगती थी। ज़्यादातर बच्चों को पढ़ना नहीं आता था।

ममता जी ने जो भी सीखा था उसी को बच्चों को पढ़ाने लगीं। पहले बच्चों को वर्ण सिखाना, फिर वर्णों के साथ जोड़कर छोटे–छोटे शब्द सिखाना, उसके बाद वर्ण और मात्राओं का मेल करके शब्द बनाना सिखाती थीं। वर्ण पहचान के लिए अनार–आम वाला एक चार्ट पेपर था, एक ककहरा का चार्ट पेपर रहता था और इसके साथ गणित की गिनती वाले पोस्टर रहते थे। बोर्ड पर लिखना और बच्चों का उसकी नकल करना ही पढ़ाने का तौर–तरीका था। वर्ण पहचान के लिए भी यही तरीका था। चूँकि पाठयपुस्तक हिंदी में दिया हुआ है, इसलिए यह तय हो गया कि बच्चों को हिंदी में ही पढ़ना है।

भाषा के बारे में ममता जी बताती हैं कि उस समय भाषा को लेकर सचेत रूप से सोचने–समझने का नज़रिया दूर–दूर तक नहीं था। भाषा एक व्यापक अवधारणा है और प्राथमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण की गहराइयों को लेकर समझना तो दूर की बात है, हिंदी के प्रति आग्रह ने बच्चों के छत्तीसगढ़ी में सहज मौखिक अभिव्यक्ति के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी थी। उस समय विभिन्न भाषाओं को लेकर एक तरह की ग़ैरबराबरी वाली सोच भी दिमाग में थी। अंग्रेजी सबसे ऊपर, उसके बाद हिंदी और सबसे अंत में छत्तीसगढ़ी। आज की पाठयपुस्तकों में छत्तीसगढ़ी कहानी और कविताओं को शामिल किया गया है। पहले की किताबों में ऐसा भी नहीं था।

आगे ममता जी बताती हैं कि ऐसा नहीं है कि यह केवल किसी एक व्यक्ति की सोच है। आस–पास के समाज में यह भाषायी सीढ़ी बनी हुई है। यहाँ के माता–पिता का भी यही मानना है कि बच्चों की शिक्षा अंग्रेजी में ही होनी चाहिए। ममता जी भी बिना किसी प्रशिक्षण के समाज में व्याप्त विचार के साथ ही स्कूल आई थीं। जिस तरह के उनके विचार थे,

वे उसी अनुसार काम भी कर रही थीं। पढ़ाने के बारे में सचेत रूप से सोचने की शुरुआत डी.एड. कोर्स करने से हुई। हालाँकि कोर्स का माध्यम पत्राचार होने की वजह से बहुत कुछ समझ में नहीं आया लेकिन बाल मनोविज्ञान वाले पेपर पढ़ने में मजा आया और थोड़ी–बहुत समझ भी बन पाई। हालाँकि इस कोर्स से यह समझ नहीं बन पाई कि बच्चों के साथ कैसे काम किया जाए! इसी तरह डळडस् को जब स्कूलों में लागू किया गया तो प्रशिक्षण के दौरान यह बात समझ में आई कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की अपनी गति होती है और एक ही कक्षा के बच्चे अलग–अलग स्तर के हो सकते हैं। यह जरूरी है कि बच्चों के स्तर के अनुसार काम किया जाए।

बच्चों के साथ काम करने में एक बड़ा बदलाव ममता जी को एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स से जुड़ने के बाद ही आया। उनके अनुसार, "इस कोर्स को करने से पहले भी मैं बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाने में मेहनत बहुत करती थी, लेकिन फिर भी बच्चों के सीखने के स्तर पर बहुत–सी चुनौतियाँ रहती थीं।" लेकिन इस कोर्स को करने के बाद प्राथमिक शिक्षा में भाषा–शिक्षण को लेकर सोचने–समझने का उनका दायरा काफ़ी बढ़ा है।

dkl d nkjku

ममता जी ने कोर्स में सीखी गई रणनीतियाँ को कक्षा में भाषा शिक्षण की अलग–अलग दक्षताओं के लिए शामिल करना शुरू किया। उदाहरण के लिए, उनकी भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं–

ममता जी कक्षा की शुरुआत अपने साथ लाए एक चार्ट (नाम चार्ट) पेपर से करती हैं। उस चार्ट पेपर पर बहुत सारे नाम लिखे हुए हैं। शिक्षिका बच्चों को उस चार्टपेपर पर लिखे नामों में अपना–अपना नाम तलाशने के लिए कहती हैं। सभी बच्चों की निगाहें चार्ट पेपर पर ठहर–सी गई है। सबसे पहले एक लड़की को अपना नाम दिखता है। वह दौड़कर आती है और अपने नाम पर उंगली रखती है– नंदिनी। चार्ट में अभी भी कुछ नाम हैं। शिक्षिका एक बच्ची को अपना नाम ढूँढने के लिए कहती हैं।

अब कक्षा में कल किए काम से आगे का काम होना है। कल 'उ' की मात्रा पर मौखिक काम हुआ था। आज लिखने का काम होना है। पर पहले एक नाम बिगाड़ने वाली कविता पर हाव–भाव के साथ काम होता हैं–

हमने तीन चीजें देखीं, दादा तीन चीजें देखीं३एक डाल पर थी एक मकड़ी...आलू–भालू–बालू

कविता में नाम बिगाड़ने के बाद अगली गतिविधि खुद का नाम बिगाड़ने पर आधारित है जिसकी शुरुआत शिक्षिका खुद

के नाम से करती हैं। सभी मिलकर ममता के नाम को बिगाड़कर चार नए शब्द बनाते हैं – ममता– नमता, धमता, चमता। अगला नाम धारणा का है जिसको बिगाड़कर चार नए शब्द बनाए जाते हैं– मारना, चारना, नारना, दारणा। यह खेल आगे बढ़ता है और कक्षा के प्रत्येक बच्चे का नाम बिगाड़कर चार नए शब्द बनाए जाते हैं। शिक्षिका इन सारे शब्दों को एक साथ बोर्ड पर लिख देती हैं।

पिछली कक्षा में 'उ' की मात्रावाले शब्दों के उच्चारण पर काम हुआ था। आज "उ" की मात्रा के लिखने और उसको अलग–अलग ध्वनि के साथ जोड़कर उनके उच्चारण और लिखने पर काम करना है। इसके लिए कक्षा के सभी बच्चे और शिक्षक एक साथ एक गोले में बैठ जाते हैं। सबसे पहले शिक्षिका कुछ कार्ड से बच्चों को 'उ' की मात्रा वाले शब्दों को दिखाती हैं और उसमें अलग–अलग ध्वनियों के साथ 'उ' ध्वनि की पहचान करवाती हैं। इसके पश्चात उ' की मात्रा बोर्ड पर लिखकर दिखाती हैं और फिर उसके बाद अलग–अलग वर्णों के साथ 'उ' की मात्रा को जोड़कर उनका उच्चारण करवाती हैं। यह पहले की कक्षा का ही पूर्वाभ्यास है। इसके पश्चात 'उ' की मात्रा पहचानने का काम शुरू होता है। सबसे पहले ममता बच्चों के पट्टे पर सभी बच्चों के नाम के शुरुआती वर्ण/ध्वनि से कुछ शब्द लिखती हैं – दु, मु, छु, नु, धु और सबके साथ उसको पढ़ती हैं। फिर प्रत्येक ध्वनि से वर्ण और 'उ' की मात्रा को अलग–अलग करते हुए पढ़ने को कहती हैं।

इसके बाद तीन अलग–अलग तरीकों से लिखने का प्रयास किया गया। सभी बच्चे पहले पट्टे पर उसको करने का अभ्यास करते हैं। इसके बाद इसी काम को सभी बच्चे सैंडबोर्ड और कंकड़ों से भी करते हैं। लिखने के अभ्यास के बाद बच्चे 'उ' की मात्रा को अलग–अलग ध्वनि/वर्ण के साथ जोड़कर उच्चारण करते हैं। शिक्षिका एक साथ क्रम से बोर्ड पर लिखती जाती हैं और सभी बच्चों से उच्चारण करने के लिए बोलती हैं। जैसे – 'क' में 'उ' की मात्रा जोड़ देंगे तो बनेगा – कु। इसके बाद बिल्लस के कोर्ट में सभी खानों में 'उ' की मात्रा के साथ कुछ वर्णों को जोड़कर लिख देती हैं और एक–एक कर सभी को पढ़ते हुए खेलने को कहती हैं।

चित्र 10: बच्चों के साथ सैंडबोर्ड पर गतिविधि करती हुई ममता जी

dkslZ ds ckn

कोर्स के बाद ममता जी ने अपनी कक्षा में कई बदलाव देखे हैं। भाषा–शिक्षण का कितना व्यापक और विस्तृत परिदृश्य है, इसको समझने का मौका ममता जी को कोर्स करने से पता चला। उनके अनुसार "अब तक के अपने शिक्षकीय जीवन में

भाषा के महत्व को आरंभिक शिक्षा में सचेत रूप से सोचना नहीं हो पाया था। इस कोर्स को करते हुए बहुत सारे विचार को जानने–समझने का मौका मिला। शुरुआती कक्षाओं में पढ़ाने के गहराई से सोचने लगी हूँ। ख़ासकर कक्षा पहली से तीसरी के स्तर पर एक शिक्षक को किन बारीक बिंदुओं को ध्यान में रखने की जरूरत है, इसके बारे में एक विस्तृत दृष्टिकोण से सोचने–समझने को मिला। बच्चा कैसे सीखता है और कैसे नहीं, इन दोनों बिंदुओं पर सोचते हुए सीखने में उनकी मदद करनी चाहिए। सीधे–सीधे स्कूली भाषा में बात न करके, इसकी शुरुआत बच्चों की मातृभाषा से करनी चाहिए और फिर धीरे–धीरे अकादमिक भाषा की ओर बढ़ना चाहिए।"

ममता जी मानती हैं कि इसके अलावा कोर्स को करते हुए सबसे महत्वपूर्ण बदलाव डिकोडिंग को लेकर आया है। "डिकोडिंग तो हम पहले भी कराते थे लेकिन उस प्रक्रिया में जो चुनौतियाँ आती थीं, उस पर कैसे विचार किया जाए, इस पर काम करने की कोई निश्चित दिशा नहीं थी। इस कोर्स से जुड़ने के बाद यह समझ में आया कि कक्षा में गतिविधि कराने के पीछे भी कुछ निश्चित विचार होते हैं। हमें गतिविधियों का चयन, बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में आनेवाली चुनौतियों के अनुसार करना चाहिए। इस कोर्स ने डिकोडिंग को लेकर सोचने–समझने का एक नजरिया विकसित किया है।"

इतना ही नहीं, ये बदलाव कई स्तरों पर हो रहे हैं– ममता एक शिक्षक के तौर पर भाषा के सवालों को नए नज़रिए से देख रही हैं। पहले की तुलना में अब कक्षा में बहुत सारे गीत, कविताएँ, कहानियाँ आ गई हैं। हिंदी तो आज भी स्कूल की भाषा के रूप में है, लेकिन इसके साथ–साथ छत्तीसगढ़ी में टंगी कहानियाँ भी कक्षा में मुस्कुरा रही हैं। वे कक्षा में अब छत्तीसगढ़ी का उपयोग करने में संकोच महसूस नहीं करती हैं। वे कहती हैं कि "मौखिक भाषा विकास पर काम करते हुए आजकल छत्तीसगढ़ी का उपयोग शुरुआती कक्षाओं में ज़्यादा कर रही हूँ। इसके कारण बच्चों की अभिव्यक्ति में गुणात्मक रूप से अंतर देखने को मिल रहा है। बच्चे स्कूल में स्वयं को ज़्यादा ज्यादा सहज महसूस कर पा रहे हैं। दूसरा, मौखिक भाषा विकास के लिए बच्चों के साथ कविताओं पर हाव–भाव के साथ काम करने से हम सभी ज़्यादा खुलकर एक–दूसरे के साथ आ पाते हैं। इन सब बदलावों के कारण बच्चों को ज्यादा मौके मिल रहे हैं। इससे कई बार वे कुछ ऐसा करते हैं कि हम ख़ुद ही सोचने पर विवश हो जाते हैं। पहली के बच्चों के साथ कहानी पर काम करते हुए यह देखकर मैं ख़ुद हैरान रह गयी कि आखिर ये बच्चे कैसे स्वयं से कहानी बना लेते हैं। अब कई बार लगता है कि वयस्कों को बच्चों की क्षमताओं को समझने में शायद और वक्त लगेगा।"

बदलाव के बारे में और बताते हुए ममताजी कहती हैं कि बच्चों के पढ़ने–लिखने के स्तर पर भी तुलनात्मक रूप से बदलाव आ रहा है। दूसरी कक्षा के बच्चों के भाषायी कौशल और मौखिक अभिव्यक्ति का असर कक्षा में दिखता हैं। सबसे

महत्वपूर्ण बदलाव डिकोडिंग की प्रक्रिया करवाने में आया है। अब ना तो बच्चे ही दबाव महसूस करते हैं और ना ही वह ख़ुद इस तनाव में रहती है कि बच्चे सीख नहीं रहे हैं। एक और महत्वपूर्ण बात यह दिख रही है कि जो बच्चे जितने अच्छे से डिकोडिंग कर पा रहे हैं, वे वह उतने ही अच्छे से पढ़ भी पा रहे हैं। अब वो ख़ुद भी इस बदलाव को समझ पा रही हैं। खासकर जब दूसरी कक्षा के बच्चे भी पुस्तक के साथ जुड़ गए, पढ़ने–लिखने की शुरुआत करने लगे तो बदलाव दिखने लगता है। लेकिन उनके लिए आ रहा बदलाव इनसे कहीं ज़्यादा है। यह बदलाव कक्षा में जीवंतता के स्तर में दिखता है। कक्षाएँ ज़्यादा जीवंत हो गई हैं, बच्चों की भागीदारी बढ़ रही है, बच्चे अपने को अभिव्यक्त कर पा रहे हैं। ये बदलाव कई नए सवाल भी लेकर आ रहे हैं। स्कूल की चुनमुन दीदी नई चुनौतियों के लिए आज भी तैयार हैं। बस, अंतर यह आया है कि अब उनको कोई चुनमुन नहीं कहता।

मृदुल शर्मा

प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय बाबूगढ़, मथुरा

2017 बैच, उत्तर प्रदेश

"एक मजबूत नीव पर ही एक बुलंद इमारत तैयार की जाती है। यदि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के भाषायी कौशल और समझ को विकसित कर दिया जाए, तो वे अन्य विषयों को भी आसानी से समझने के लिए तैयार हो जाते हैं।"

यह मानना है मृदुल शर्मा का, जो कि गाँव रामपुर, मथुरा जनपद, उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। मृदुल एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 के प्रतिभागी हैं। उन्होंने करीब नौ साल पहले सहायक शिक्षक के रूप में शिक्षण क्षेत्र में कदम रखा। दो साल पहले पदोन्नति के बाद वे रामपुरा गाँव के प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में नियुक्त हुए और वही प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

हर अध्यापक की तरह मृदुल जी भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का सपना लेकर अपने स्कूल आए। स्कूल में पहला कदम रखते ही उन्होंने जाना कि स्कूल में मूलभूत सुविधाएँ, जैसे– बिजली, पानी, रास्ता, इमारत आदि या तो खराब था या फिर उनकी कमी थी। उन्होंने जाना कि स्कूल की कोई भी बात बच्चों और अभिभावकों को उत्साहित करने के लिए नहीं थी। परिस्थिति देखने–समझने के बाद उन्होंने समुदाय से बात की। बात करके उनको यह महसूस हुआ कि जहाँ शिक्षण की मूलभूत सुविधाएँ ही न हों, वहाँ शिक्षण पर ध्यान कम और इन सुविधाओं की पूर्ति पहली प्राथमिकता बननी चाहिए।

मृदुल जी ने जल्दबाजी न करते हुए, बच्चे और शिक्षा से जुड़ी हर इकाई – अभिभावक, विभागीय अधिकारी एवं ग्राम प्रतिनिधियों से निरंतर संपर्क करके इन सभी समस्याओं का हल ढूँढा और स्कूल को सुचारू रूप से विकसित किया। जहाँ

दो साल पहले इस विद्यालय में केवल 10 से 12 बच्चे थे, आज यहाँ स्कूल का विकास देख 30 बच्चे नामांकित हैं। अब बच्चों की उपस्थिति भी अधिकांशतः पूरी रहती है और यदि किसी कारणवश बच्चे को स्कूल न आना हो तो माता–पिता स्कूल में जानकारी देकर बच्चे की छुट्‌टी करवाते हैं।

dkslZ ls igys

मूलभूत समस्याओं को हल करने के बाद मृदुल जी की अगली चिंता बच्चों का न पढ़ पाना था। कक्षा 4 और 5 में आकर भी बच्चों के पढ़ न पाने की समस्या से जूझ रहे मृदुल जी को डाइट मथुरा से प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स की जानकारी मिली और उन्होंने इस कोर्स के लिए अपना आवेदन भरा। उन्हें उम्मीद थी, कि शायद इस कोर्स के माध्यम से उन्हें इस समस्या का हल मिल जाए। यहाँ उन्होंने सैद्धांतिक अवधारणाओं के अलावा भाषा शिक्षण के कई कौशल, प्रिंट चेतना का विकास, इमर्जेंट साक्षरता, ध्वनि जागरूकता या डिकोडिंग के विभिन्न चरण– इन सभी पहलुओं को पास से देखा और समझा। उन्हें मॉड्यूल के अलावा, गतिविधियों का संग्रह– जिसमें विभिन्न रोचक खेल और क्रमवार गतिविधियाँ दी गई हैं, काफी प्रभावशाली लगा।

dkslZ ds nkSjku

मृदुल जी ने कोर्स में सीखी गई रणनीतियों को कक्षा में भाषा शिक्षण की अलग–अलग दक्षताओं के लिए शामिल करना शुरू किया। मॉडयूल में दिए हुए क्रमबद्ध तरीके– चाहे पठन हो या लेखन, हर कौशल के विकास के काम में आने लगे। उदाहरण के लिए, भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं–

कक्षा की शुरुआत एक कविता – "आहा टमाटर, ओहो टमाटर" के सामूहिक गान से होती है। सभी गोले में खड़े होकर हाव–भाव के साथ गाते हैं। कविता पाठ के बाद ध्वनियों पर काम होता हैं। हर बच्चा अपनी पसंद की एक सब्जी का नाम बोलकर उस नाम में कितनी आवाजें आती हैं, गिनता है और उन्हें तोड़कर भी बताता है (जैसे – गा/ज/र/ तीन)। जिन बच्चों को अभी तोड़ना–गिनना नहीं आता तो बाकी बच्चों ने मिलकर उनके साथ नाम को तोड़ा और गिना।

ध्वनि जागरूकता की गतिविधियों के बाद कहानी सुनाने और सुनने का काम होता है। इसके लिए कक्षा 2 की पाठयपुस्तक की एक कहानी 'किसान की होशियारी' पढ़ाई गई। कहानी सुनाने से पहले बच्चों से उनकी पृष्ठभूमि से जुड़ी कुछ बातें हुईं, जैसे – गाँव में होने वाली फसलों और किसानों के बारे में आदि। बातों को पाठ में दिए गए कुछ महत्वपूर्ण शब्दों से जोड़ा गया और बच्चों की समझ उस पर क्या है, वह जाना गया। फिर मृदुल जी कहानी पढ़कर सुनाते हुए बीच–बीच में बच्चों से अनुमान लगाने वाले प्रश्न पूछते हैं, जैसे – "अब बताओ किसान क्या बोएगा?" या "भालू क्या करेगा?" या "यदि

चित्र 11: कक्षा में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करते हुए मृदुल जी

आप किसान की जगह होते तो क्या करते?" आदि। बच्चों को बोलने के भरपूर अवसर देने के साथ–साथ, मृदुल जी उनकी सराहना करके उनका उत्साहवर्धन भी करते हैं। जिस बच्चे को कहानी पसंद आई तो वह उसे अपनी बोली में सुना सकता है – जैसे, योगेंद्र ने पूरी कहानी अपने शब्दों में ब्रज में सुनाई।

कोर्स के दौरान मृदुल जी ने सक्रिय भागीदारी द्वारा एक स्वसंचालित समूह– क्षितिज समूह' की स्थापना की। 'क्षितिज समूह' मथुरा जनपद के परिषदीय विद्यालयों के अलग–अलग विकासखंडों के 11 प्रधानाध्यापकों द्वारा बनाया गया नवीन समूह है। मृदुल जी भी इसके एक सदस्य हैं। यह समूह शासकीय विद्यालयों में शैक्षणिक संवर्धन, स्थानीय समस्याओं व अधिगम–संबंधी समस्याओं पर सकारात्मक परिणामों के लिए काम करता है। समूह विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति को नियमित करने के लिए अपने अभिनव एवं नवाचारी कार्यक्रम 'अध्यापक–अभिभावक चौपाल' का आयोजन करता है, जहाँ समूह के सदस्यों द्वारा समुदाय/पालकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा अपने–अपने विद्यालयों में समर–कैंप, सदस्यों के अकादमिक विमर्श हेतु मासिक बैठक आयोजित की जाती हैं।

मृदुल जी ने इस कोर्स में सीखी हुई कई रणनीतियों को इन बैठकों में साझा किया है। समूह के सभी सदस्य महीने में एक बार मिलते हैं। बैठक का कुछ समय अकादमिक विमर्श के लिए भी होता है। इसके लिए बैठक से पहले, सभी सदस्यों के साथ चयनित विषय पर कुछ लेख या पठन सामग्री ऑनलाइन साझा की जाती है। बैठक के दौरान उस विषय पर चर्चा होती है। पूरे महीने सभी सदस्य सीखी हुई रणनीतियों को अपने विद्यालयों में प्रयोग करके देखते हैं, व्हाट्स ऐप ग्रुप पर उसके परिणाम/चुनौती/मुख्य बिंदु साझा करते हैं और अगली बैठक में अपने अनुभवों पर चर्चा करते हैं। इन्हीं बैठकों के अंतर्गत विभिन्न शिक्षण रणनीतियों, जैसे – मौखिक भाषा विकास एवं डिकोडिंग की गतिविधियों को भी साझा किया जाता है।

dkslZ ds ckn

मृदुल जी ने कक्षा 1 और 2 को सीखी हुई रणनीतियों द्वारा पढ़ाने का सचेत रूप से निर्णय लिया हैं। उनका विश्वास है कि अगर शुरुआती कक्षाओं में भाषा पर ध्यान दिया जाएगा तो बच्चों को बड़ी कक्षाओं में आकर पढ़ने–लिखने में मदद मिलेगी। वे इस कोर्स से जुड़ी जानकारी, सीख–समझ और विमर्श अपने अध्यापन और समूह के जरिए लोगों तक पहुँचाने का काम आगे बढ़ा रहे हैं।

ओमनारायण शर्मा

उच्च वर्ग शिक्षक, शा. उच्च. प्रा शाला खट्टा, महासमुन्द
2016 बैच, छत्तीसगढ़

"मैं 26 सालों से अपने शिक्षण सफ़र में एक प्रश्न का उत्तर ढूँढ रहा था जो मुझे 2016 में एल.एल.एफ़. का कोर्स करते हुए मिला।" ऐसा मानना हैं ओमनारायण शर्मा जी का, जो यह कहते हुए बिलकुल नहीं झिझकते। वे एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2016 के प्रतिभागी हैं और उच्च प्राथमिक शाला खट्टा, ज़िला महासमुंद, छत्तीसगढ़ में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

आर्थिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हुए उन्होंने हायर सेकंड्री के बाद से अपने ग्राम पटेवा, महासमुंद के डाकघर में काम करना शुरू किया। उसी के साथ प्राइवेट तौर पर स्नातक और हिंदी में स्नातकोत्तर भी किया। 1989 में शिक्षा विभाग में सहायक शिक्षक पद पर नियुक्ति हुई और उन्होंने कक्षा छठी से आठवीं को पढ़ाना शुरू किया। 28 साल के कार्यकाल में वे 2007 में क्लस्टर अकादमिक समन्वयक और 2014 में ब्लॉक रिसोर्स समन्वयक बने।

dkl l igy

ओमनारायण शर्मा जी को अपनी हर भूमिका में, चाहे वह पढ़ाने की हो या आकादमिक समन्वयक के रूप में शालाओं को मॉनिटर/अवलोकन करने की, उन्हें हमेशा यही चिंता सताती रहती थी कि शिक्षक और तंत्र जितनी कोशिश सिखाने के लिए कर रहा है, उस अनुपात में बच्चे भाषा क्यों नहीं सीख पाते हैं। यह प्रश्न कि "क्या कमी है या क्या करूँ, जिससे बच्चों को पढ़ना–लिखना सिखाया जा सके" लगातार उन्हें परेशान करता रहता। ओमनारायण शर्मा जी ने बहुत कोशिश भी

की, लेकिन जितनी कोशिश की, परिणाम उतने सकारात्मक नहीं निकले। ऐसा नहीं कि वे अकेले ही जूझ रहे थे, उन्होंने अपनी इस जिज्ञासा को अपने अन्य सहकर्मियों के साथ भी साझा किया था। परंतु कोई हल नहीं निकला।

dkslZ ds nkSjku

एस.सी.ई.आर.टी. में भी उन्होंने अपनी परेशानी के बारे में लोगों से बात की थी। इस उम्मीद में कि शायद इस कोर्स के अंतर्गत उनको उनके ज़वाब मिलें, उन्होंने कोर्स के लिए नामांकन फॉर्म भरा। कोर्स शुरू हुआ। कोर्स के पहले मॉडयूल के बाद ही उनके कई मिथक टूटे और उन्हें भरोसा हो गया कि ज़वाब यहीं मिलेगा। ओमनारायण जी को लगा कि कोर्स को आत्मसात करने के नज़रिए से स्कूल में शिक्षण करना ज़रूरी होगा। सिर्फ़ मॉनिटरिंग या अवलोकन की भूमिका के साथ कोर्स को सीखने, उसे जाँचने या उपयोग में लाने के लिए तो सीखी गयी इकाइयों की पुष्टि शिक्षण के ज़रिए ही संभव हो पाएगी। इसलिए उन्होंने बी.आर.सी. पद से हटकर अपने मूल विद्यालय में पढ़ाने का निर्णय लिया।

कोर्स शुरू होते ही, उन्हें कई नए प्रश्न सताने लगे। जैसे– अलग–अलग स्तर के बच्चों के लिए एक जैसी पढ़ाई कैसे उपयोगी होगी? कई नई बातें भी पता चलीं जैसे कि भाषा सिखाने के तरीकों पर जो अध्ययन और शोध हुए हैं, यदि क्रमबद्ध तरीके से उनका इस्तेमाल हों तो बेहतर परिणाम मिलेंगे। फिर उन्होंने कोर्स से सीखे हुए आयामों को कक्षाओं में काम करके देखा। ग्रीष्मावकाश में कक्षा 6 से 8 तक के जिन 17 बच्चों को पढ़ने–लिखने में मुश्किल आती थी, उन्हें रोज़ दो घंटे पढ़ाना शुरू किया। इसका क्रम और अवधि मॉडयूल के अनुरूप ही रखा। धीरे–धीरे ये दो घंटे 55–60 बच्चों के पढ़ने का समय बन गया। जब उन 17 बच्चों का अवलोकन किया तो पाया कि 3 बच्चे धारा प्रवाह से पढ़ पा रहे हैं, 7 धीमी गति से पढ़ते हैं, 3 बच्चे कठिन शब्द नहीं पढ़ पाते, सरल पढ़ लेते हैं और 4 बच्चे वर्ण और अक्षर पहचानते हैं। ओमनारायण जी के मुताबिक़ कोर्स प्राथमिक स्तर के लिए भले ही हो, लेकिन जो बच्चे पढ़ने–लिखने के शुरुआती स्तर पर हैं, उनके लिए इस कोर्स की रणनीतियाँ कारगर सिद्ध होंगी।

इतना ही नहीं, कोर्स के दौरान उन्होंने विभाग में पत्र भेजा जिसमें तर्क सहित यह बात रखी कि भाषा ही सभी विषयों की नींव है और प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा कालखंड की अवधि को बढ़ाया जाना चाहिए। विभाग में कई अधिकारियों ने इस बिंदु की सराहना की और इस बात को स्वीकारा भी। इस प्रकार, ओमनारायण जी ने एक ज़रूरी बिंदु पर एक सार्थक चर्चा की शुरुआत की।

dkslZ ds ckn

कोर्स करने के बाद ओम नारायण जी ने कुछ महत्वपूर्ण काम आगे बढ़ाए। जैसे– कक्षा कालांश का समय, प्रशिक्षणों की विषयवस्तु में ज़रूरी बदलाव आदि। डाइट रायपुर में भी तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, जहाँ उन्होंने शिक्षकों को प्रेरित

किया। इसके अलावा, दस ज़िले के 50 शिक्षकों ने महासमुंद में ओमनारायण जी द्वारा आयोजित कार्यशाला में भागीदारी की।

कोर्स पूरा करने के बाद इन्होंने एक संदर्शिका तैयार की है, जिसमें एल.एल.एफ के कोर्स की बुनियादी बातें शामिल हैं। इस मॉडयूल को वे अपनी औपचारिक कार्यशालाओं में इस्तेमाल करते हैं। संदर्शिका में पढ़ाने के वर्तमान तरीकों से चर्चा शुरू होती है, फिर घर की भाषा और स्कूल और पाठयपुस्तक की मानक हिंदी भाषा के अंतर के बारे में बात करते हैं। इसके अलावा मुक्त और बद्ध कौशलों के बारे में भी जोड़ा गया है। भाषा शिक्षण से जुड़े कौशल हैं जो साक्षरता की नींव बनते हैं जैसे– मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग, पठन और लेखन जिन पर विस्तार से उद्देश्य और रणनीतियाँ दी गई हैं। संदर्शिका के अंत में शिक्षण के प्रारूप को भी साझा किया गया है, जिसमें छह सप्ताह की भाषा कक्षा का उदाहरण दिया है। यह संदर्शिका एक छोटे मॉडयूल के रूप में इन कार्यशालाओं में इस्तेमाल की जाती हैं।

मौखिक भाषा विकास में बच्चे के घर की भाषा से शुरुआत होती है। कक्षा में बच्चों की, परिचित घर की भाषा के प्रयोग से बच्चे, पालक और समुदाय में उनकी भाषा, संस्कृति और पहचान को भरोसा भी मिलता है। इसी को आगे बढ़ाकर ओमनारायण जी ने घर और समुदाय को विद्यालय तक लाने के लिए भी एक क़दम उठाया है– क्षेत्रीय त्योहार इतवारी जो मुख्यतः महिलाएँ मनाती हैं, उसको विद्यालय में आयोजित कर उनके लिए अलग–अलग प्रतियोगिताएँ रखीं। इसको माता सम्मलेन का रूप देकर हर साल का चलन बनाया है। कुछ बदलाव व्यवहार के तौर पर भी लाए गए हैं। जैसे– ओम नारायण जी अन्य शिक्षकों को इस कोर्स से हुए लाभ के बारे में बताते हैं और प्रेरित करते हैं।

अब, ओम नारायण जी ने ज़िला स्तर पर एक योजना में भाषा शिक्षण की तकनीकें एकत्रित करने का काम प्रस्तावित किया है। यह वह तकनीक होगी जो कोर्स के मॉडयूल के आधार की ही बनेगी/एकत्रित होगी।

कोर्स के अनुरूप ही वे भी मानते हैं कि प्राथमिक शिक्षा से पहले ही भाषा की नींव रखी जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल आँगनवाड़ी में बच्चों के भाषायी स्तर के आकलन का कार्य भी शुरू करेंगे। सर्वे के बाद इस प्रक्रिया की शुरुआत करके वहीं से नींव पक्की करने की योजना भी ओम नारायण जी के प्रस्तावित कार्यों में से एक है।

चित्र 12: शिक्षकों के साथ एक बैठक करते हुए ओम जी

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रहे हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

पूजा चौधरी

प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय राया, मथुरा
2017 बैच, उत्तर प्रदेश

"जिन सिद्धांतों और रणनीतियों को बी.एड. में पढ़ा, उनके प्रयोग के लिए कक्षा का माहौल नहीं था। सहायक अध्यापिका के रूप में छह वर्ष तक शिक्षण को टी.एल.एम. व गतिविधि–आधारित बनाने के प्रयास भी कारगर साबित नहीं हुए।" यह कहती हुई आशावादी शिक्षिका पूजा चौधरी जी अपनी शिक्षा के बारे में शुरू से बताती हैं। पूजा चौधरी जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 की प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

एक किसान परिवार में जन्मी, मथुरा जनपद के राया कस्बे में पली–बढ़ीं। 12वीं तक राया कस्बे में पढ़ने के बाद, घर से लगभग बीस किलोमीटर दूर मथुरा में एम.एस.सी. व बी.एड. की शिक्षा ग्रहण की। एम.एस.सी. के तुरंत बाद ही उनका चयन बेसिक शिक्षा में सहायक अध्यापिका के पद पर हुआ। जुलाई 2015 में उनकी पदोन्नति प्राथमिक विद्यालय राया द्वितीय, विकासखंड–राया, मथुरा में प्रधानाध्यापिका पद पर हुई। व्यक्तिगत रूप से यह भावुक व गौरव का विषय था क्योंकि इस विद्यालय से ना सिर्फ़ उन्होंने बल्कि उनके पिताजी ने भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण की थी।

विद्यालय में पदभार ग्रहण करने पर उन्होंने पाया कि अधिकांश विद्यालयों की तरह यहाँ भी बच्चों के निम्न नामांकन, ठहराव की समस्या तथा उनका शैक्षणिक स्तर निम्न था। उन्होंने इन्हीं समस्याओं पर अपने साथी अध्यापकों के साथ मिल कर कार्य करना शुरू किया। व्यवस्थागत मुद्दों पर ध्यान न देते हुए अपने कार्य क्षेत्र को पहचान कर स्वयं के संसाधनों से जैसे– आई.सी.टी. टूल्स/लैपटॉप, प्रोजेक्टर, टी.एल.एम. आदि का प्रयोग कर शिक्षण अधिगम में अभिनव प्रयास किए।

छात्र नामांकन बढ़ाने के लिए सड़क किनारे समुदायों के बच्चों को स्कूल से जोड़ने का प्रयास किया।

dkl l igy

डाइट मथुरा के प्राचार्य और इनके प्रेरणा स्रोत ने एल.एल.एफ द्वारा संचालित प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स से इनका परिचय कराया। शुरुआत में इन्हें लगा कि यह भी किसी तरह का ट्रेनिंग प्रोग्राम है जिसमे कुछ दिन के लिए ट्रेनिंग के लिए जाना होगा। मगर जब यह पता चला कि यह कोर्स नौ माह का है तो इन्हें अच्छा लगा और तुरंत कोर्स में दाखिला ले लिया।

dkl d nkjku

चित्र 13: बच्चों से चित्र पर बातचीत करती हुई पूजा जी

इस कोर्स के विभिन्न मॉड्यूलों द्वारा उन्हें भाषा शिक्षण की विभिन्न अवधारणाओं, जैसे प्रिंट–चेतना, शब्दावली विकास, संतुलित भाषा शिक्षण व बहुभाषिता को बेहतर रूप से समझने में मदद मिली। इसके साथ ही इन अवधारणाओं को कक्षा में क्रियान्वित करने की विभिन्न रणनीतियाँ व गतिविधियाँ भी मिलीं। वे पहले भी उनकी घर के भाषा का प्रयोग करती थीं, किंतु अब वे उसे अपने शिक्षण से जोड़ने का प्रयास कर रही हैं। इसके साथ ही वे अपनी कक्षा में संतुलित भाषा शिक्षण पद्धति को लागू करने का प्रयास कर रही हैं। अब उनकी कक्षाएँ प्रिंट–समृद्ध हैं। भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी साबित होता है। इनके द्वारा बच्चों को शब्दावली, मौखिक गतिविधियाँ, ध्वनि जागरूकता और डिकोडिंग का माहौल पूरे समय महसूस होता है। भाषा शिक्षण के बारे में ज़्यादा जानने के लिए पूजा चौधरी की भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं – पूजा जी कक्षा की शुरुआत चित्र पर बातचीत से करती हैं। फिर एक बाग के पोस्टर चित्र पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे, जैसे – यह कहाँ का चित्र है? क्या आप बाग में गए हैं? मोर कहाँ बैठा है? इस चित्र में कितने पक्षी हैं? फिर बच्चों ने अपने आसपास के बाग–बगीचों के बारे में बताया। बाग के चित्र पर जो बना था शिक्षिका के पास उनके शब्द कार्ड्स थे। बच्चों को दिए हुए कार्ड में से एक–एक करके हर शब्द पढ़ने को कहा। इसके बाद उस शब्द का वाक्य में प्रयोग किया। अंत में बच्चों ने उन कार्डों का बाग के चित्र पर लिखे शब्दों के साथ मिलान किया।

dk1l d: ckn

पूजा जी के अनुसार, कोर्स से जुड़ने और पहले तीन मॉडयूल पढ़ने पर उनको इस कोर्स के महत्व का आभास हुआ। इस कोर्स की समझ को आधार बनाते हुए उन्होंने विद्यालय विकास योजना में शैक्षिक व भौतिक उन्नयन की रूपरेखा तैयार की है। वो बताती हैं "यह कोर्स शिक्षण अधिगम की दशा और दिशा दोनों को आइना दिखाता है।" अपने विद्यालय के दो बच्चे सोनू व श्रीकांत के बारे में बताते हुए कहती हैं कि "ये दोनों कक्षा 3 के छात्र हैं। ये दोनों बच्चे आदिवासी परिवारों से आते हैं। ये आज अपने परिवार, समाज को ही प्रेरित नहीं करते बल्कि उन्होंने प्रत्येक बच्चे के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है। ऐसे बच्चों की प्रेरणा की वजह से आज उनके विद्यालय में बच्चों का नामांकन बढ़ गया है। ये दोनों बच्चे विद्यालय के राजदूत बन गए हैं।" इतना ही नहीं पूजा जी समय–समय पर अपने विद्यालय के सह शिक्षकों के साथ कोर्स में सीखे सिद्धांत और गतिविधिओं को साझा करती हैं जिसे वो अपनी कक्षाओं में प्रयोग करके देखती हैं।

पुष्पा शुक्ला

सहायक शिक्षक, शा. प्राथमिक शाला करचिया, गरियाबंद

2016 बैच, छत्तीसगढ़

"अगर शिक्षण सामग्रियों के साथ आकर्षक और उपयोगी सामग्रियों का मेल हो तो सीखने–सिखाने की प्रक्रिया और उसमें बच्चों की भागीदारी दोनों के सुधार में बढ़ोतरी होती है। वास्तव में, अब मैं सुनिश्चित करती हूँ कि मेरे बच्चों को छपी हुई सामग्री बहुतायत मिले। पढ़ाने के तरीकों में इस तरह के बदलाव से हो रहा सकारात्मक विकास मैं अपने बच्चों में साफ़ देख पा रही हूँ– उनका आत्मविश्वास बढ़ रहा है, व्यस्तता बढ़ रही है तथा वे शौकीन पाठकों में बदल रहे हैं!"

यह मानना है पुष्पा शुक्ला जी का, जो कि छत्तीसगढ़ के देवभोग विकासखंड प्राथमिक विद्यालय करचिया में शिक्षिका हैं। उन्होंने कड़ी मेहनत से अपनी रचनात्मकता का उपयोग करते हुए कई शिक्षण सामग्रियाँ तैयार की हैं। इसके लिए कई बार अपनी जेब से पैसे ख़र्च किए हैं। उन्होंने पेपर कठपुतलियाँ, अक्षर कार्ड, डिकोडिंग व्हील, कविताओं और कहानियों वाले चार्ट, वर्ण और अक्षर ग्रिड, अक्षर पासे आदि तैयार किए हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

पुष्पा ने बचपन में अपने विद्यालय की एक शिक्षिका से प्रेरित होकर उनकी राह पर चलने का सपना देखा था। साल 2009 में उनका सपना हकीक़त में बदला और वे अपने परिवार की पहली सरकारी विद्यालय शिक्षिका बनीं।

साल 2013 में उन्होंने डी.एड के लिए नामांकन भरा। वे जो सीख रही थीं, उसको लगातार अपनी कक्षाओं में लागू करने की कोशिश करतीं, फिर भी वे अब भी संतुष्ट नहीं थीं। पुष्पा जी के लिए शिक्षण का यह सफ़र उतना आसान नहीं था। उनके लगातार प्रयासों के बावजूद जब कक्षा 2 के अंत तक भी विद्यार्थी लिखने–पढ़ने में सक्षम नहीं हो सके, तब उन्हें कुछ कमी लगी।

dkl d igy

आमतौर पर प्रारंभिक कक्षाओं में सभी बच्चे पाठयपुस्तकों द्वारा तयशुदा समान गति से पढ़ाए जाते हैं। पाठयपुस्तक को एक गाइड के रूप में देखते हुए, शिक्षक अक्षर ज्ञान और रोज़ाना मौखिक पाठ के माध्यम से उन्हें संबंधित आवाज़ों को पढ़ाने, आकृतियों का पता लगाने और वर्णों को पहचानने पर ध्यान दिलाने वाले खेल खेलते हैं। इसी तरह कहानियाँ सुनाते समय शिक्षक ही ज़्यादा बोलते हैं। शिक्षक/विद्यार्थी आमने – सामने होते हैं, पाठ पढ़ते हैं, उसे समझाते हैं और कुछ बच्चों से उनसे संबंधित सवाल पूछते हैं। लगातार बनी कमी के रहते पुष्पा ने साल 2016 में लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन (एल.एल.एफ़) के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स के पहले बैच में दाखिला लिया।

dkl d nkjku

कोर्स से उन्होंने बातचीत, मौखिक भाषा के विकास के महत्व और प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा के उपयोग जैसी पढ़ने की अहम रणनीतियों के बारे में जाना–समझा। सरकारी स्कूलों में जगह की कमी के कारण कई कक्षाएँ साथ बैठती हैं। पुष्पा जी के दो कमरे के विद्यालय में पहली से तीसरी कक्षा एक साथ तथा चौथी व पाँचवी कक्षा एक साथ बैठा करतीं। पुष्पा जी ने बताया "जगह के लिए कक्षा में लगातार धक्का–मुक्की चलती रहती। तीनों कक्षाओं को साथ में सिखाना होता था; अधिकतर समय बड़े बच्चों पर चला जाता था। एक दिन मैंने प्रधानाध्यापक को बताया कि मैं एलएलएफ द्वारा संचालित कोर्स का हिस्सा हूँ। मुझे छोटे बच्चों के साथ कुछ ख़ास गतिविधियों के वीडियो बनाकर एससीईआरटी रायपुर भेजनी हैं। इसके लिए मुझे अलग कमरे की ज़रूरत है। एचएम राज़ी हो गए और इसके लिए मुझे स्टाफ रूम में कक्षा 2 को बिठाने की जगह मिल गई।"

ज्यों ही पुष्पा को बच्चों के लिए जगह मिली, उन्हें एहसास हुआ कि बच्चों के पास पढ़ने की कोई ख़ास सामग्री नहीं है और उनकी पाठयपुस्तकें भी खराब हालत में थीं। इस वजह से उन्होंने बाहर से किताबें जमा कीं, साथ ही उन्हें अपने पिछले विद्यालय से एनसीईआरटी की बरखा श्रृंखला भी उधार लेने में कामयाबी मिली। उन्होंने अपनी कक्षा में ज़्यादा से ज़्यादा छपी सामग्री एकत्रित की। इसके तहत उन्होंने कक्षा में लिखित सामग्री से दीवारों को सजा दिया, जिसमें कविताएँ, कहानियाँ, उपस्थिति चार्ट और सबसे महत्वपूर्ण बातें, बच्चों का लेखन था।

पुष्पा जी के पाठ कम औपचारिक, अधिक जीवंत हैं। अपनी पढ़ाई से मिली जानकारी को वे कक्षा में आज़माती हैं। इसके तहत पुष्पा अब चरित्रों के कट आउट या चित्रों के साथ कहानी कहती हैं, सवाल पूछती हैं, बच्चों को अनुमान लगाने के

लिए प्रोत्साहित करती हैं, बच्चों के मौजूदा अनुभवों को तैयार करती हैं, उन्हें सोचने के लिए चुनौती देती हैं तथा शब्दों और चित्रों के माध्यम से कहानी दोबारा कहने में मदद करती हैं। भाषा कक्षा में होती गतिविधियों के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं–

चित्र 14: कक्षा में साझा पठन करते हुए पुष्पा जी

दिन की शुरुआत "बोल भाई कितने" कविता के ज़ोरदार आवाज़ में सामूहिक तौर पर गाने से शुरू होती है। इसके बाद सारे बच्चे झुंड में उनके क़रीब बैठ जाते हैं और मिलकर किताब पढ़ते हैं। पुष्पा जी बच्चों को चित्रों की ओर ध्यान दिलवाकर चर्चा शुरु करती हैं। बच्चे चित्र में जो देख रहे हैं, उससे शुरुआत करते हैं।

एक छोटा बच्चा चित्र में तोते की ओर इशारा करते हुए चिल्लाता है – मिटठू'।

वे चुप रहने वाले बच्चों से एक–एक कर पूछती हैं। "आकाश को क्या दिख रहा है?"

आकाश : "बंदर, पानी, भेदरा।"

पुष्पा : "पेड़ कहाँ मिलता है?"

कुछ कहते हैं कि खेत में; कुछ, डोगर में; कुछ, घर में।

जब नोहर पकड़े हुए चित्र की ओर इशारा करके कहती हैं, "दुइता नोनी बाबू आछे (चित्र में दो बच्चे हैं)" तो पुष्पा जी उसकी बात पर ध्यान देते हुए आगे बढ़ती हैं : "दोनों के क्या नाम हैं?"

इस तरह बच्चों के ज़वाबों को कहानी से जोड़ते हुए शुरुआत होती है। वह बच्चों के साथ उँगली रखकर कहानी पढ़ना शुरु करती हैं। पढ़ने के दौरान वह साधारण, तथ्य–आधारित प्रश्न पूछकर सुनिश्चित करती हैं कि बच्चे पढ़ने पर ध्यान दे रहे हैं। इसके अलावा यह समझते हुए कि बच्चे किताबों की मानक भाषा के साथ उतने सहज नहीं हैं, वे हर बार रुककर शब्दों को समझाती हैं।

कहानी पढ़ने के बाद चर्चा होती है, जिसमें अनुमान और आरोपण के प्रश्न पूछे जाते हैं। जैसे– क्या करेंगे अब मिट्ठू को? बच्चे इसमें उत्साह से शामिल होते हैं – "पोसेंगे मिट्ठू को (तोते को पालेंगे)...नहीं, उड़ा देंगे।"

चर्चा आगे बढ़ती है कि पक्षी किस तरह से घोंसले बनाते हैं, घोंसले में अंडे कैसे रखे जाते हैं, कैसे तोते बोलना सीखते हैं आदि। बच्चे इस चर्चा में पूरी तरह से मगन थे।

dkslZ ds ckn

हाल ही में पुष्पा जी ने "अपनी कक्षा में संवादात्मक पठन–पाठन बढ़ाने का काम शुरू किया है जो कि एक महत्वपूर्ण कदम है। वे बताती हैं, कोर्स करने से "पहले मैं उन्हें पूरे जोश और उत्साह के साथ कहानियाँ सुनाया करती थी, बाद में बच्चों के साथ कहानी पर चर्चा होती थी। लेकिन अब जिस तरह मैं कहानियाँ कहती हूँ, वह इससे बहुत अधिक है – मैं समझ चुकी हूँ कि पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद क्या होना चाहिए। अब मैं बच्चों को अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ, मैं उन्हें और अधिक सोचने के लिए सवाल पूछती हूँ। मैं उनके लेखन को पढ़ने के साथ जोड़ती हूँ और भी बहुत कुछ। मैंने पहले कभी इन बातों पर ध्यान नहीं दिया था।"

> "पुष्पा जी की शिक्षण के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वह बच्चों की स्थानीय भाषा का उपयोग बच्चों के साथ बातचीत करने और उन्हें पढ़ाने के लिए करती हैं। उन्होंने प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स में नामांकन किया था, जिससे उन्हें नए विचार प्राप्त होते, वह उन्हें अपनी कक्षा में लागू करतीं। मुझे पूरा भरोसा है कि हमारे विद्यालय के बच्चों का भविष्य उज्जवल है"
>
> श्री अनिल कुमार, प्रधान अध्यापक, करचिया बताते हैं।

कक्षा में घर की भाषा के इस्तेमाल पर वे कहती हैं "बच्चों की भाषा उड़िया या छत्तीसगढ़ी है। मैंने अपनी कक्षा के बच्चों के साथ हिंदी में बात शुरू की, लेकिन बच्चों को इस भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में समस्या होती थी। वे ज़्यादातर चुप रहते थे। मैंने ध्यान दिया कि वे अपने दोस्तों के साथ बात करते हुए काफ़ी सहज रहते थे। मुझे कारण समझने में कठिनाई हुई। इसी दौरान कोर्स करते हुए मुझे मेरा ज़वाब मिल गया! यह भाषा का फ़र्क़ था! मैंने समझा कि कक्षा में पढ़ाने के दौरान बच्चों की अपनी भाषा का इस्तेमाल न केवल अपेक्षित, बल्कि ज़रूरी है। मैंने तय कर लिया कि मैं उनकी भाषा सीखूँगी। आज मैं महसूस करती हूँ कि ये मेरा सबसे अच्छा निर्णय था।"

पुष्पा जी के काम के कारण दूसरे विद्यालयों के शिक्षक, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी एवं मीडिया सब उनके काम को जानने लगे हैं या जानना चाहते हैं। सकारात्मक असर के बाद से अब उन्हें दूसरे विद्यालयों के शिक्षक भी मार्गदर्शन का अनुरोध कर रहे हैं। कई अधिकारी उनकी कक्षा का अवलोकन करने आते हैं, ताकि वे अध्यापन कला को और बेहतर ढंग से समझ

सकें तथा देख सकें कि वास्तव में क्या प्रभावी है। वे मुख्य प्रशिक्षकों के नियमित अर्ली ग्रेड रीडिंग (ईजीआर) प्रशिक्षण, यूनिसेफ के तहत काम कर रहे आरटीई मित्रों और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के साथ भी जुड़ी हुई हैं।

आज वे अपने राज्य में बदलाव लाने वाली शख़्स के रूप में जानी जाती हैं। अपने प्रयासों के कारण आज उन्हें न केवल अपने राज्य के शिक्षकों, बल्कि एनसीईआरटी व यूनिसेफ द्वारा प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने तथा अपने ज्ञान व अनुभवों को साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, ताकि इसका लाभ ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को मिल सके।

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रही हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

राजपाल कौर

शिक्षक, शा. अंग्रेजी पूर्व मा. शाला शक्ति नगर, दुर्ग

2017 बैच, छत्तीसगढ़

"अच्छा लगता है जब अंग्रेजी की शिक्षिका होते हुए भी पत्र व्यवहार करते समय त्रुटियाँ नहीं होती और ऐसे ही अपेक्षा अपने शिक्षण के समय बच्चों से भी रखती हूँ।" यह मानना है राजपाल कौर का, जो पिछले 10 वर्षों से शैक्षिक कार्यों में व्यस्त हैं। राजपाल जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 की प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

राजपाल जी ने आज से दस साल पहले माध्यमिक विद्यालय में अंग्रेजी की शिक्षिका के रूप में कार्य शुरू किया। वे बताती हैं कि "दुर्ग से 68 किलोमीटर अंदर के स्कूल में बच्चों को हिंदी नहीं आती थी, और मैं उन्हें अंग्रेजी सिखाने पहुँची थी।" इस तरह की मुश्किलों के बीच उन्होंने अपने शैक्षणिक जीवन की शुरुआत की। उन्होंने सोचा कि पहले बच्चों को अच्छी तरह हिंदी सिखाई जाए फिर उसके द्वारा अंग्रेजी। आगे बताते हुए राजपाल जी कहती हैं कि "अपनी समझ से मैं ठीक कर रही थी। मुझे औपचारिक क्रमबद्धता नहीं मालूम थी, लेकिन मैंने व्याकरण से हिंदी पढ़ाना शुरू किया था।"

dkl! l! igy

मास्टर ट्रेनर बनने के बाद राजपाल जी को कक्षाओं की अलग–अलग वस्तुस्थिति पता चलीं। वहाँ भी मुद्दा वही था – पढ़ना–लिखना न आना। राजपाल जी बताती हैं कि "कई शैक्षिक रिपोर्ट्स भी यही बताती थीं। हम एक अनौपचारिक ग्रुप बनाकर भाषायी दिक्कतों पर चर्चाएँ करते थे। हमारे प्रयास उतने सकारात्मक परिणाम नहीं निकाल पा रहे थे।" फिर एक

दिन जब वो 2014 में विकासखंड स्त्रोत समन्वयक बनी तो उसी सिलसिले में एक दिन जिला कार्यालय रायपुर बैठक में गईं। वहाँ ऑफिस में मेज पर एक ब्रोशर दिखा और पूछने पर एल.एल.एफ. कोर्स के बारे में पता चला। उनके अनुसार "नौ माह के कोर्स ने उनके पढ़ने–लिखने में मदद की," उन्हें ये भी बताया गया कि "आप अकादमिक सहयोग करती हैं, यह कोर्स आपको जरूर मदद करेगा। मैंने तय किया कि शायद यह कोर्स जवाब हो हमारी मुश्किलों का, तो ये करना चाहिए। अपने साथ और लोगों को जोड़कर मैंने यह कोर्स किया।"

dkl d nkjku

राजपाल जी के अनुसार "कोर्स करने के दौरान हमारे शिक्षकों को अब न सिर्फ भाषायी समझ और रणनीतियाँ पता हैं, बल्कि अब उन्हें अपनी कक्षाओं/शिक्षकों के साथ मिलकर यह भी पता चल जाता है कि उनके बच्चों की कौन सी चुनौती के क्या कारण हैं। अब उन्हें अपनी कक्षा के भाषा अधिगम पता हैं।" उन्होंने महसूस किया कि जब मुश्किल पता चल जाती है तो हल मिलना आसान हो जाता है। उन्हें सबसे ज़्यादा मदद जी.आर.आर. ने किया, स्वयं करें, तुम करो, हम करें। यह न सिर्फ हम भाषा की कक्षाओं में बल्कि बाकी अन्य विषयों में भी इस्तेमाल करते हैं। स्कैफोल्डिंग, गतिविधि संग्रह आदि भी बहुत मददगार रहे हैं। इन रणनीतियों से बच्चों में अद्भुत बदलाव देखा गया।

dkl d ckn

राजपाल जी ने कोर्स करने के बाद अपना एक ऑनलाइन समूह शुरू किया है जो कि भाषा के लिए सतत् काम करता है। वहाँ वे नवाचार, और हर तरह के अनुभव साझा करते हैं। दस–बीस शिक्षक एक–दूसरे के स्कूल में जाकर भी मदद करते हैं। वहाँ सिर्फ भाषा के ही नहीं, बल्कि अन्य विषयों के भी शिक्षक हैं क्योंकि अगले साल कोई भी शिक्षक कोई भी विषय पढ़ा सकते हैं। अब जिले में ए.पी.सी. बनने के बाद वे अपनी समझ और अनुभव को जिला स्तर पर भी उपयोग में ला रही हैं। उन्हें उम्मीद है कि कोर्स का लाभ अलग–अलग ब्लॉक तक भी पहुँचा सकेगी।

राजपाल जी के अनुसार, हर शिक्षक की चुनौती अलग है। वो अपनी चुनौती के अनुसार कोई छोटे कार्यकाल का कोर्स कर सकें, इसलिए वे सोचती हैं कि "क्या अलग–अलग शिक्षक समूह के लिए अलग–अलग रणनीतियों और कौशल–आधारित छोटे कोर्स चलाना मुमकिन हो पाएगा?" अगले वर्ष के लिए उनकी यह भी योजना है कि भाषा शिक्षण से जुड़ी

चुनौतियाँ इकट्ठी करें और हर चुनौती–समूह में कोर्स से कुछ टुकड़े निकाल कर सी.ए.सी. शिक्षकों को हाथों–हाथ कुछ प्रयोग करने के लिए दे सकें। हालाँकि वह सामग्री क्या होगी इस पर राजपाल जी अभी निर्णय नहीं ले पाई हैं परन्तु विचार चल रहा है। काम ज़्यादा होने की वजह से वे बहुत समय नहीं दे पा रही हैं। उनका मानना है कि छोटे– छोटे हिस्सों पर काम करके और उनके सकारात्मक परिणाम शिक्षकों को प्रोत्साहित करेंगे जिससे वे स्वयं कोर्स करने के इच्छुक होंगे। राजपाल जी अपने से जुड़े लोगों से कोर्स के अनेक लाभ साझा करते नहीं थकतीं।

चित्र 15: बच्चों के साथ गतिविधियाँ करती हुई राजपाल जी

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रही हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

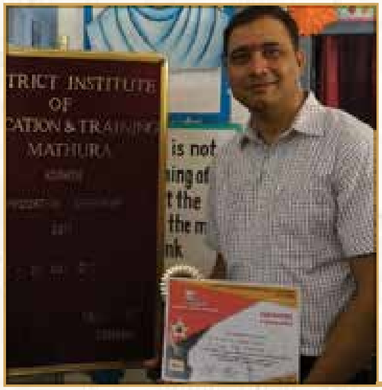

शिव कुमार

प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय तिरवाया, मथुरा

2017 बैच, उत्तर प्रदेश

"कोर्स में बताए गए सिद्धांतों को न सिर्फ़ भाषा शिक्षण बल्कि अन्य विषयों पर भी लागू किया जा सकता है। पत्नी (प्रधानाध्यापिका, राया द्वितीय, विकासखंड–राया) के साथ मिलकर मैंने न्याय पंचायत स्तर पर विद्यालयों के प्रिंट रिच संबंधी एक कार्यशाला का आयोजन भी किया है जिसका लाभ अन्य विद्यालयों को भी मिल रहा है।"

यह कहते हैं आशावादी शिक्षक शिवकुमार जी। शिवकुमार जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

अपने पिताजी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में काम करने की प्रेरणा से और भविष्य में शिक्षा के लिए कार्य करने का मन बना कर फरवरी 2009 में शिवकुमार जी ने सहायक अध्यापक के रूप में एक शिक्षक का सफ़र आरंभ किया। 6 वर्षों तक सहायक अध्यापक पद पर कार्य करने के बाद फरवरी 2015 में शिवकुमार जी का प्रमोशन प्राथमिक विद्यालय तिरवाया, ब्लॉक–राया में प्रधानाध्यापक पद पर हुआ।

dkl! l: igy!

सामान्यतः प्राथमिक विद्यालयों की शैक्षिक स्थिति से उनका परिचय होने पर वे निराश हुए। उनके पिताजी फ़ौज में थे, जिस कारण उनकी शिक्षा केंद्रीय विद्यालय मथुरा कैंट में हुई थी। अपने शिक्षण के शुरुआती दिनों में उनको अपने विद्यालय

में इसका लगभग उल्टा ही माहौल देखने को मिला। न तो विद्यालय में शैक्षिक माहौल था और न ही शैक्षिक गतिविधियों के लिए उचित संसाधन। शिवकुमार जी ने देखा कि सभी प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को केवल डिकोडिंग ही सिखाई जा रही थी, वह भी रटा–रटा कर। ऐसी परिस्थितियों में अपने शिक्षण कार्य में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जैसे– बच्चों की भाषा का अलग होना। इस समस्या से निजात पाने के लिए उन्होंने बच्चों की भाषा को सीखा तथा अपने मित्रवत व्यवहार से उन्हें सहज किया। अपने विद्यालय में भी उन्होंने अपने पूर्व अनुभव के आधार पर शैक्षिक सुधार के प्रयास ज़ारी रखे।

अपने प्रयासों के कारण प्राचार्य डाइट मथुरा द्वारा उनका चयन एल.एल.एफ. द्वारा प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स के लिए किया गया।

कोर्स के दौरान

शिवकुमार जी के अनुसार संतुलित शिक्षण पद्धति के लिए अनिवार्य है कि कक्षा प्रिंट–समृद्ध हो। इसके लिए विभिन्न प्रकार के कहानी व कविता पोस्टर, शब्द दीवार और किताबों का एक कोना हो। इनके भाषा शिक्षण पद्धति को और जानने के लिए प्रस्तुत है उनकी कक्षा से कुछ उदाहरण – एक कहानी (किसान की होशियारी) की घटनाओं पर बने चित्रों वाले चार्ट पर चर्चा शुरू हुई। कहानी पहले पढ़ी जा चुकी थी, इसलिए हर चित्र में होने वाली घटना के बारे में बच्चे एक साथ और सार में बता रहे थे। विभिन्न प्रश्नों द्वारा शिक्षक क्रम को ध्यान दिला रहे थे। कहानी चार्ट पर कुछ शब्द भी लिखे थे जिनका बच्चों को वाक्य में प्रयोग करना था। शिक्षक बच्चों द्वारा बताए गए वाक्यों को बोर्ड पर लिखते गए। इसके बाद बारी आई रोल–प्ले की। कक्षा में पाठ का रोल प्ले हुआ, जिसमें शिक्षक किसान का रोल प्ले कर रहे थे और कक्षा 3 का छात्र भालू बना था। बाकी सभी बच्चे बड़े ध्यान से और मजे लेते हुए इस रोल प्ले को देख रहे थे। रोल प्ले के बाद प्रश्नों के माध्यम से चर्चा की गई जिसमें ये निकला की गाँव में अलग–अलग फसलें हैं, और इस मौसम में बाजरा लगा है। बाजरे के रंग, आकार से लेकर उपयोग पर बात हुई और उसके व्यंजनों की सूची भी निकली। इसके बाद स्वतंत्र लेखन द्वारा बाजरे के पौधे का चित्र और उस पर पाँच वाक्य भी लिखे गए।

कोर्स के बाद

शिव जी बताते हैं कि वे इस कोर्स के माध्यम से भाषा शिक्षण के प्रति संवेदनशील हुए हैं व उनकी समझ में काफ़ी परिवर्तन आया है। इस कोर्स में भाषा शिक्षण की जो पद्धतियाँ, रणनीतियाँ बताई गई हैं उनको शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में

वे अपनी न्याय पंचायत के अन्य साथी अध्यापकों और साथी विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा कक्षा में लागू कराने में सहयोग प्रदान करने का प्रयास भी कर रहे हैं। साथी अध्यापकों के साथ मिलकर भाषा शिक्षण पर सुनियोजित रूप से कार्य करते हुए, संतुलित भाषा शिक्षण की चारखंडीय रूपरेखा व अन्य सिद्धांतों व रणनीतियों के अनुसार अपने प्रयासों को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं। धीरे–धीरे सुधार सामने आ रहे हैं, किंतु अभी लगातार इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है जिससे कक्षा शिक्षण में एक स्वस्थ्य, आनंदपूर्ण, प्रगतिशील व्यवस्था स्थापित की जा सके। इस कोर्स के लाभ उन्होंने औरों के साथ भी साझा किए हैं।

चित्र 16: कक्षा में रोल–प्ले करते हुए शिव जी

श्रवण कुमार यादव

सहायक शिक्षक, शा. प्रा. शाला कोसा

2017 बैच, छत्तीसगढ़

"जब मैं परंपरागत तरीके से बच्चों का अध्यापन करता था, तब मुझे यही सबसे सही व उचित तरीका लगता था। इसकी वजह यह थी कि मैंने स्वयं भी इसी तरीके से ही अध्ययन किया है। बच्चों को पढ़ने में आनंद आए यह जरूरी है। बच्चों को कक्षा में ज़्यादा से ज़्यादा बोलने का अवसर मिले, इसी से उनकी भागीदारी सुनिश्चित होती है और सीखने के लिए यह जरूरी है।" यह मानना है श्रवण कुमार यादव का, जो कि 2008 से प्राथमिक शिक्षक के रूप में शासकीय प्राथमिक विद्यालय, कोसा में पढ़ा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के बालोद जिले के अंतिम छोर पर बसे ग्राम कोसा की आबादी लगभग 800 है। कोसा एक अनुसूचित जाति बाहुल्य ग्राम है। यहाँ जीवनयापन का प्रमुख साधन कृषि मज़दूरी है जिसके सीमित अवसर होने की वजह से यहाँ की आर्थिक स्थिति कमजोर है। ज़्यादातर अभिभावक साक्षर नहीं हैं। इसी गाँव के एक प्राथमिक विद्यालय में श्रवण यादव एक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। श्रवण जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स– 2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

कोसा आने से पूर्व श्रवण जी ज़िला परियोजना कार्यालय, राजीव गाँधी शिक्षा मिशन, सर्व शिक्षा अभियान, जिला दुर्ग में डाटा एंट्री ऑपरेटर (संविदा) के पद पर कार्यरत थे। इनकी रुचि लिपिकीय कार्यों में अधिक थी, लेकिन वहाँ उन्हें समुचित अवसर नहीं मिल पा रहा था। इसी बीच 2008 में लिखित परीक्षा के माध्यम से इनका चयन प्राथमिक शिक्षक के रूप में हुआ और पहली नियुक्ति शासकीय प्राथमिक विद्यालय, कोसा में हुई। जिस समय इनकी नियुक्ति इस विद्यालय में हुई

उस समय यहाँ बहुत–सी समस्याएँ थीं। इनमें आवश्यक संसाधनों की कमी, बच्चों की अनियमित उपस्थिति आदि प्रमुख थे। इसके अलावा समुदाय का विद्यालय से बिलकुल भी जुड़ाव नहीं था।

इसी बीच 2013 में प्रधान पाठक के आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने के बाद इन्हें प्रभारी शिक्षक का दायित्व सौंपा गया। सर्वप्रथम इनके द्वारा समुदाय को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रयास किया गया। इसके लिए विद्यालय प्रबंधन समिति को क्रियाशील किया गया। नियमित बैठकें की जाने लगीं। विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों, विशेषकर माताओं को, विद्यालय में आमंत्रित कर उनके बच्चों के शैक्षणिक स्तर पर चर्चा की गई। इसके परिणामस्वरूप अभिभावकों द्वारा घरों में अपने बच्चे की पढ़ाई पर ध्यान देने हेतु विशेष जोर दिया जाने लगा। विद्यालय स्तर पर विभिन्न आयोजनों को किया जाने लगा जैसे– विश्व महिला दिवस, वर्ड रीड–अलाउड डे, सामाजिक अंकेक्षण (ऑडिट) कार्यक्रम इत्यादि।

इन सभी आयोजनों/गतिविधियों/कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करने का भरपूर प्रयास किया गया। इनके ऐसे प्रयासों से धीरे–धीरे समुदाय द्वारा विद्यालय को सहयोग दिया जाने लगा। परिणामस्वरूप अब विद्यालय की नियमित उपस्थिति तो बढ़ी ही है, इसके अलावा विगत तीन वर्षों से इस विद्यालय में बच्चों की दर्ज़ संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है।

dksl2 ls igys

पहले श्रवण कुमार जी कक्षा चौथी एवं पाँचवीं को पढ़ाया करते थे। पढ़ाने के दौरान इन्होंने यह अनुभव किया कि जो बच्चे इनके पास कक्षा चौथी और पाँचवीं में आते हैं उनमें कक्षानुरूप दक्षता नहीं के बराबर होती है। जब इस समस्या पर चिंतन–मनन किया, तब इन्होंने पाया कि कक्षा पहली से तीसरी तक बच्चों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान नहीं जाता, जिससे उनका आधार कक्षा अनुरूप नहीं बन पाता।

इस समस्या के समाधान हेतु पहल करते हुए इन्होंने कक्षा पहली के बच्चों को पढ़ाने का निर्णय लिया। फिर भी विगत तीन वर्षों से इनके द्वारा प्रारंभिक कक्षाओं के अध्यापन के बाद भी बच्चों में आवश्यक दक्षताओं की प्राप्ति नहीं हो पा रही थी।

dksl2 ds nksjku

श्रवण कुमार जी को एल.एल.एफ. भाषा–शिक्षण कोर्स के बारे में पता चला। अब, जब इनके द्वारा एल.एल.एफ के सिद्धांतों को अपनाकर, इसके अनुरूप अध्यापन कार्य कराया जा रहा है तो इनके अनुसार बच्चों में आवश्यक दक्षताएँ आने लगी

हैं। इस बदलाव को और बारीकी से जानने के लिए उनकी कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं–

कक्षा का वातावरण प्रिंट सामग्रियों से भरपूर है। कहीं पर कहानी की किताबें करीने से सजी हैं तो कहीं बच्चों को वर्ण, मात्रा सिखाने हेतु कार्ड रखे हैं। दीवारों पर वर्णमाला, अंग्रेजी के अक्षर और गिनती के चार्ट लगे हैं। कक्षा के दरवाजे पर बच्चों का नाम–चार्ट लगा है। सभी बच्चों के बस्ते दीवार के सहारे रखे हैं। कक्षा में बच्चों और श्रवण जी के पहुँचते ही सभी ने आज का कार्य आरंभ किया।

शिक्षक ने सभी बच्चों को निर्देश दिया कि आज हम अपने नाम की पहली आवाज़ बताने का खेल खेलेंगे। इसके लिए सभी बच्चे पहले अपना नाम बताएँगे और फिर उसमें आने वाली पहली आवाज़ बताएँगे। इसके लिए शिक्षक ने बीच–बीच में बच्चों को उठाकर उनका नाम व उसकी पहली आवाज़ पूछा। इस गतिविधि में सभी बच्चे पूरी रुचि व सतर्कता से भाग लिया। इस गतिविधि के खत्म होने के बाद शिक्षक ने एक दूसरी गतिविधि आरंभ की। इसमें सभी बच्चों को जोड़े में अपना परिचय देना था और साथ ही अपने नाम को तोड़कर और फिर जोड़कर भी बताना था। इस गतिविधि में बच्चों ने पहले से भी ज़्यादा उत्साहित होकर भाग लिया। एक जोड़े की बारी ख़त्म होने से पहले ही दूसरा जोड़ा खड़ा हो जाता और अपना काम शुरू कर देता। श्रवण जी बताते हैं कि "बच्चों को ये तो नहीं पता था कि इन गतिविधियों के माध्यम से वो क्या सीख रहे हैं, लेकिन ये जरूर था कि वे इन्हें खेल समझकर खेल रहे थे और इनका मजा ले रहे थे।"

dkslZ ds ckn

श्रवण जी का कहना है कि जब इन्होंने कक्षा पहली में पढ़ाना आरंभ किया तो इनका ज़ोर केवल बच्चों को डिकोंडिंग सिखाने पर ज़्यादा रहता था जिससे कि बच्चे जल्दी ही पढ़ना सीख जाएँ। लेकिन वो पढ़कर उसका अर्थ ग्रहण कर रहे हैं या नहीं, इससे इनका कोई लेना–देना नहीं था। लेकिन अब इनका मानना है कि "पहले मैं कभी भी बच्चों के साथ मौखिक कार्य नहीं करता था लेकिन वर्तमान में बच्चों के साथ बहुत सारे मौखिक कार्य हो रहे हैं। इसका एक महत्वपूर्ण परिणाम देखने को यह मिला है कि कक्षा का एक बच्चा जो अपनी कक्षा व अपने घर पर बिलकुल नहीं

चित्र 17: बच्चों के साथ कहानी पर काम करते हुए श्रवण जी

बोलता था, आज वह बातचीत करने लगा है। यह देखकर उस बच्चे के अभिभावक भी हैरान हैं कि ऐसा कैसे हो गया। एक दूसरा बदलाव यह देखने को मिला कि कभी–कभी कुछ गतिविधियाँ ऐसी होती हैं जो अगर कक्षा पहली में होते हुए अन्य कक्षाओं के बच्चे देख लेते हैं तो वे उसे अपने आप अपनी कक्षा के अन्य बच्चों के साथ करने लगते हैं और कुछ ही समय में यह पूरे विद्यालय में फैल जाती है। इससे अन्य बच्चों को सीखने में भी मदद मिलती है।”

विजय प्रकाश जैन

अध्यापक, रा. उच्च प्रा. विद्यालय मेंदिया डिंडोर वीरपुर

2017 बैच, राजस्थान

"बच्चों को सिखाना आसान तब होता है, जब उनके साथ मित्रवत व्यवहार किया जाए, थोड़ा धैर्य रखा जाए और कुछ नए तरीकों का उपयोग किया जाए।" ऐसा मानना हैं विजय जैन जी का, वे एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

विजय जी का शुरूआत से ही शिक्षा की तरफ रुझान था। उन्होंने बी.एड. और एम.ए. की पढ़ाई 1994 में पूरी की। उस समय 'लोक जुम्बिश परियोजना' का काम चलता था। ये डूंगरपुर में संकुल प्रभारी के तौर पर इस परियोजना से जुड़े। एक संकुल प्रभारी के तहत 8–10 पंचायतें होती थीं। उन पंचायतों में शिक्षा–संबंधी जागरुकता फैलाना, उनसे जुड़े प्रश्नों के उत्तर देना, सुझाव देना आदि जिम्मेदारियाँ थीं। वर्ष 1999 में लोक जुम्बिश परियोजना से जुड़े लगभग 1000 कार्यकताओं को कार्य से मुक्त कर दिया जिसमें विजय जी भी शामिल थे। इसके बाद, ये बिहार चले गए जहाँ 'ऑल इंडिया कॉनफेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड' नामक संस्था से जुड़े।

2001–2003 तक फिर से बाँसवाड़ा में आकर, सहायक परियोजना अधिकारी लोक जुम्बिश बनकर में काम करते रहे। वहाँ बच्चों के लिए अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र खोले गये थे, उनकी मॉनिटर करते थे। 2003–2006 तक बी.आर.सी.एफ. में केंद्र संयोजक के पद पर काम करते रहे। इसी दौरान बी.एड. और एस.टी.सी. के आधार पर विजय जी की वीरपुर, जिला–बाँसवाड़ा में स्कूल शिक्षक के पद पर नियुक्ति हुई। यह स्कूल बाँसवाड़ा से तीस किलोमीटर अन्दर था।

कोर्स से पूर्व

विजय जी शुरू से ही शिक्षा के क्षेत्र में लोगों को प्रोत्साहित करते रहते थे। वे कोई भी नया कदम लेने के बाद पीछे नहीं हटते थे। उनके शाला में आने के बाद 43 बच्चों ने प्राइवेट शालाओं से शासकीय शाला में एडमिशन लिया। दो साल में प्राथमिक शाला माध्यमिक सेकेंडरी स्कूल हो गया। अब इसमें दस कक्षाएँ और पाँच शिक्षक हैं। विजय जी बड़ी कक्षाओं को पढ़ाते थे। विजय जी लगातार बच्चों से बातचीत करते थे। साथ ही, समुदाय को जोड़ते हुए बच्चों के माता–पिता से भी वे चर्चा करते थे। 2016 में उनका ट्रान्सफर उच्च माध्यमिक डिढोर में हो गया। वहाँ छोटी कक्षाओं में उपस्थिति की बड़ी समस्या थी। बच्चे बहुत कम आते थे। उन्होंने कक्षा 1–3 को पढ़ाने का निश्चय किया। कई बार बच्चों की भाषा समझ नहीं पाते थे। भाषा के अंतर से तो जूझ ही रहे थे, साथ ही वर्णमाला पद्धति से वे कभी भी संतुष्ट नहीं थे। वर्णमाला भाषा सिखाने में चुनौती ज़्यादा लगती थी, सहायक कम!

2017 में विजय जी एल.एल.एफ. के निदेशक से मिले। उस साल डूंगरपुर जिले से कोर्स हेतु प्रतिभागी चुनने का सरकारी आदेश नहीं था। लेकिन उन्होंने भाषा शिक्षण से जुड़ी अपनी चिंता साझा की और इस तरह कोर्स में शामिल हुए।

कोर्स के दौरान

विजय जी ने शुरूआती कक्षाओं को पढ़ाना शुरू किया। यहाँ अधिकांश बच्चे भील जाति के थे। इन बच्चों की घर की भाषा वागड़ी है। विजय जी ने छह महीने तक पाठयपुस्तक न पढ़ाते हुए, कोर्स में सीखी हुई रणनीतियों का प्रयोग किया। उन्होंने कुछ मुद्दों को गहराई से समझा और उन्हें कक्षा के संचालन में लागू किया। जैसे – भाषा क्या है, सीखना क्या होता है, भाषा सिखाई नहीं अर्जित की जाती है। इस दौरान उन्होंने वागड़ी भाषा की कहानियाँ और कविताएँ और प्रचलित शब्द भी बच्चों से सुनकर, मंगवाकर इकट्ठी कीं। उन्होंने अपने क्रियान्वन को लगातार लिखा और साझा किया।

कोर्स के बाद

जब कुछ समय बाद विजय जी बच्चों की भाषा से थोड़े परिचित हो गए और उनसे बातचीत के दौरान उनकी भाषा का प्रयोग करने की कोशिश करने लगे, तो बच्चों को अच्छा लगने लगा। बच्चों और शिक्षक के बीच जो परम्परागत दायरा बना हुआ था, वो थोड़ा कम होने लगा है। बच्चे उनसे आराम से बात करते है, सवाल पूछते है और चर्चा में शामिल होते है। विजय जी के अनुसार – "जो जुड़ाव शिक्षक और बच्चे का सीखने की प्रक्रिया में जरूरी है, वह घर की भाषा द्वारा ही संभव है।"

विजय जी किसी भी पाठ को शुरू करने से पहले बच्चों से उनकी भाषा में ढेर सारी चर्चा करते है, उनके अनुभवों को सुनते और उसी से जोड़ते हुए पाठ को आगे बढ़ाते है। विजय जी कहते है कि "शिक्षकों को बच्चों पर भरोसा होना चाहिए, सकारात्मक सोच रखनी चाहिए, बच्चे पढ़ना–लिखना आसानी से सीख जाते है।"

चित्र 18: कक्षा में बच्चों के साथ गतिविधियाँ करते हुए विजय जी

विष्णु नायक

शासकीय प्राथमिक शाला बोरीदकला, जिला बालोद

2017 बैच, छत्तीसगढ़

"बच्चे बहुत कुछ पहले से जानते है, इसलिए एक शिक्षक को सिखाने से ज़्यादा उनको सही मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाना सबसे ज़्यादा जरूरी है जिससे उन्हें जीवन भर किसी पर आश्रित न रहना पड़े और समाज में अपनी अहम भूमिका निभा सके।" यह मानना है विष्णु जी का। विष्णु जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

विष्णु जी पर पारिवारिक जिम्मेंदारियाँ होने के कारण, उन्हें बिल्कुल भी आभास नही रहा कि उन्हें बड़े होकर क्या बनना है। बचपन से ही चित्रकारी का बहुत शौक होने के कारण इसी क्षेत्र में जीवन यापन करने का मार्ग ढूँढ लिया था। इसी के साथ ही, अपनी पढ़ाई भी करते रहे। वर्ष 2008 में जब शासकीय प्राथमिक शाला मक्की जिला राजनंदगाँव, छत्तीसगढ में शिक्षक के पद नियुक्ति हुई तब खुशी का ठिकाना ना रहा। हुई। विष्णु जी यहाँ कक्षा 1 व 2 के बच्चों को पढ़ाते थे। वर्ष 2010 में शासकीय प्राथमिक विद्यालय, बोरीदकला, जिला बालोद, छत्तीसगढ़ में तबादला हो गया था। तब से इसी स्कूल में अध्यापन कर रहे हैं।

इस गाँव के लोग मज़दूर वर्ग से हैं और यहाँ साक्षरता कम हैं। अगर सही मायने में देखें तो स्कूल में पढ़ने वाले बच्चें ही पहली पीढ़ी जो पढ़ने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बच्चों के सीखने में माता–पिता की कोई ख़ास रूचि नही होती है। विष्णु जी का भरपूर प्रयास रहता है कि स्कूल से होने में सभी गतिविधियों में माता–पिता व समुदाय की भागीदारी रहे।

dkslZ ls igys

कोर्स करने से पहले विष्णु जी कक्षा में पाठयपुस्तक के माध्यम से पढ़ाते थे। उनका मानना था कि

पाठयपुस्तक में दिये गए पाठ को पढ़ा देने से बच्चे सीख जाते हैं। इसलिए वे बच्चों को पाठयपुस्तक से पढ़ाते समय कड़ी मेहनत करते रहे थे, परंतु उन्हें इसके सकारात्मक परिणाम नहीं मिल रहे थे। बच्चों के सीखने में कुछ ख़ास बदलाव नही आ रहा था। एक ही कक्षा के बच्चों का अलग–अलग स्तर पर होने के कारण उनके लिए स्तरानुसार पढ़ाने की रणनीति बनाना, विष्णु जी के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था। जिस पर उन्होंने कई प्रशिक्षणों में चर्चा की और आवश्यक सुझाव मांगे, परंतु कहीं से उन्हें संतोषप्रद ज़वाब नही मिल रहा था। जितना भी समझ में आता था, वे अपने हिसाब से बच्चों को सिखाने का भरपूर प्रयास कर रहे थे।

dkslZ ds nkSjku

इस वर्ष विष्णु जी कक्षा 3 में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। इस विद्यालय की कक्षा 3 एक बरामदे में चलती है। इस वर्ष से पूर्व विष्णु जी कक्षा 1 और 2 को पढ़ाते थे। इस वर्ष कक्षा 3 को पढ़ा रहे हैं। बरामदे में होने के बावजूद भी कक्षा व्यवस्थित है। कक्षा में सभी बच्चों के बस्ते करीने से रखे हुए हैं। कक्षा में कहानियों की किताबें एक रस्सी पर लटकी हुई है तथा कुछ अन्य प्रिंट सामग्रियाँ भी कक्षा में उपलब्ध हैं। कक्षा के एक तरफ़ बच्चों का कोना है जहाँ बच्चों द्वारा किए गए काम को प्रदर्शित किया गया है। अपनी कक्षा की शुरुआत आज विष्णु जी अपने द्वारा बनाए गए एक चित्र चार्ट पर बच्चों से बातचीत के साथ करते हैं। सभी बच्चे उनके हाथ में चित्र चार्ट देखकर समझ गए जाते हैं कि आज उन्हें इस पर बोलने का मौका मिलेगा, इसलिए वे बहुत उत्साहित हैं।

विष्णु जी ने चित्र दिखाकर चर्चा आरंभ की। उनके बातचीत शुरू करते ही बच्चों ने भी बोलना शुरू कर दिया। पहले तो सभी बच्चे अपनी बारी का इंतजार करके बोल रहे थे, लेकिन कुछ समय बाद बारी भूल कर वे अपने विचारों को प्रकट करने लग गए। विष्णु जी ने चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों के बीच में नया प्रश्न रखा जिससे बच्चों को बोलने के नए–नए मौके मिले। इस पूरी चर्चा को देखकर लगा कि यदि बच्चों और शिक्षक को छूट मिले तो वे बिना थके, आराम से 3–4 घंटे चर्चा कर सकते हैं।

dkslZ ds ckn

विष्णु जी ने जिस वर्ष एल.एल.एफ. का कोर्स पूरा किया, उस साल उन्हें कक्षा 3 पढ़ाने के लिए मिली। उनका मानना है कि कोर्स में सीखी गई चीजों को करके देखना बहुत ही आवश्यक है, तभी किसी विषय पर पूर्ण समझ बन पाती है। लेकिन उनके पास कक्षा 3 होने के कारण वह बहुत–सी गतिविधियों को करके नहीं देख पाते हैं, जिसका उन्हें बहुत ही दुख है। पर अब वे सीखी हुई बातों और सिद्धांतों को अपने सभी शिक्षक साथियों को और ख़ासकर 1 कक्षा 2 के साथियों के साथ जरूर साझा करते हैं जिससे उन कक्षाओं को इनका लाभ मिल सके। आवश्यकता पड़ने पर दूसरी कक्षाओ में इसे करके भी दिखाते हैं।

कोर्स के बाद विष्णु जी ने खुद में काफ़ी बदलाव महसूस किया। उन्होंने बताया कि वे स्वयं कम बोलते थे और इस कारण कई बार अपनी बातों को औरों के बीच रख नहीं पाते थे। उन्हें इसका ख़ामियाजा भी भुगतना पड़ता था। लेकिन एल.एल.एफ. के कोर्स के दौरान इन्होंने सीखा कि कैसे मौखिक भाषा के विकास से अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि होती है और बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास पर कार्य करना आवश्यक है। इसका असर बच्चों के सीखने पर भी पड़ता है। अतः इन्होंने तय किया है कि एल.एल.एफ. के इस कोर्स दौरान ये अपनी कक्षा के साथ बहुत सारा कार्य "विस्तारित बातचीत" पर करेंगे, जिससे कि बच्चों और स्वयं इनमें भी अभिव्यक्ति का विकास हो पाए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक भी विष्णु जी में ये बदलाव एल.एल.एफ. के कोर्स शुरू करने के बाद देखते हैं, उनके अनुसार – "अब विष्णु जी पहले से अधिक बोलने लगे हैं। साथ ही, इनके इस कोर्स को करने का एक फ़ायदा यह भी है कि अब कक्षा 1 और 2 के साथ बेहतर काम होने लगा है। वो अगले साल कक्षा 1 को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी विष्णु जी को देने की कोशिश करेंगे ताकि कोर्स में सीखी गई बातों को करके देख सकें और बच्चों की नींव भी ठोस हो सके।"

योगेश कुमार निर्मलकर

सहायक शिक्षक, शा. प्राथमिक शाला नयागाँव

2017 बैच, छत्तीसगढ़

"विद्यालय या कक्षा के स्तर पर ही बहुत सारे शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध हो सकते हैं और ऐसी गतिविधियाँ की जा सकती हैं, जो बच्चों के शैक्षणिक स्तर में सुधार ला सकती है।" ऐसा मानना है योगेश निर्मलकर जी का और वे अपनी इस सोच में बदलाव का सारा श्रेय वे एल.एल.एफ के कोर्स को देते हैं। योगेश जी एल.एल.एफ. के प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफिकेट कोर्स–2017 के प्रतिभागी हैं।

'kf{kd thou dh 'k#vkr

योगेश निर्मलकर जी प्राथमिक विद्यालय, नवगांव, छत्तीसगढ़ में एक प्राथमिक शिक्षक है। जब वे छोटे थे तो वे अपने शिक्षकों से बहुत प्रभावित थे और बचपन में ही यह तय कर लिया था कि बड़े होकर वे एक शिक्षक ही बनेंगे। 2005 में उन्होंने अपना टेस्ट पास किया और एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। 2015 में वे एक संकुल स्त्रोत समन्वयक (ब।ब) बने और 2017 में जब वे प्रारंभिक भाषा शिक्षण कोर्स 2017 से जुड़े तो फिर से एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक हो गए, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि बेहतर शिक्षा पद्धति और उसे लागू करने के लिए उन्हें बच्चों के साथ बड़ी गहनता से काम करने की जरूरत है और प्रत्येक रणनीति को पहले स्वयं करके देखने की जरूरत है, ताकि वे उसका सही अनुभव प्राप्त कर सकें।

dkslZ ls igys

योगेश जी भी और शिक्षकों की तरह सोचते थे कि वर्णमाला को नियमित रूप से पढ़ाने एवं उसके अभ्यास से इसकी समझ बनती है और इससे दूसरे उपविषयों में भी बेहतर परिणाम मिलते हैं। चिल्ला–चिल्ला कर दोहराना ही पढ़ाने की

सबसे अच्छी रणनीति है। लिखना, सीखने–सिखाने के लिए उनके विचार थे कि बच्चे लिखे हुए शब्द/वाक्य को नकल करके जितना अधिक लिखेंगे, उनकी लिखावट उतनी ही सुंदर होगी। वे यह भी मानते थे कि इससे बच्चों को शब्दों को पढ़ने का बेहतर मौका मिलेगा।

उस समय तक उनके विद्यालय में थीम आधारित लेखन या किसी विशेष विषय पर लिखने का काम केवल ऊँची कक्षाओं के बच्चों को दिया जाता था। योगेश जी ने इस सोच पर काम करना शुरू किया कि पढ़ने से पहले लिखने का अभ्यास करना अच्छा ही है। यह पढ़ने की गति को बढ़ाता है। जब बच्चे स्कूल में प्राथमिक कक्षाओं में आने लगे तो उन्होंने उनसे हिंदी में बात करने पर ध्यान दिया। वे यह मानते थे कि जितनी जल्दी वे बच्चों को यह माहौल देंगे, यह उनके लिए उतना ही अच्छा होगा और वे बेहतर ढंग से सीख पाएँगे।

dkSlZ ds nkSjku

भाषा शिक्षण के बारे में ज़्यादा जानने के लिए योगेश जी की भाषा–कक्षा के कुछ काम यहाँ दिए गए हैं – यह कक्षा एक छोटे–से कमरे में है। बच्चे वहाँ कुछ चित्र बनाने में व्यस्त हैं और शिक्षक प्रत्येक छात्र के पास जाकर उनसे कुछ बात कर रहे हैं। इस चर्चा के बाद कुछ छात्र चित्र बनाना जारी रखते हैं जबकि बाकी बच्चे अपने चित्र के आसपास कुछ लिखने लगते हैं। बच्चे अपने शिक्षक को चित्र के साथ लिखे शब्द देखने के लिए खींच रहे हैं। शिक्षक से शाबाशी पाकर बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहट देखने को मिली।

चित्र 19: बच्चों के साथ मौखिक चर्चा करते योगेश जी

इसके बाद शिक्षक ने उन्हें 'ल' और मात्रा 'आ' से परिचित कराना शुरू किया। कक्षा शुरू करने से पहले उन्होंने बोर्ड पर एक अक्षर लिखा और फिर उस अक्षर से संबंधित एक शब्द भी लिखा। वे बच्चों के बीच में जाकर बैठ गए। उसके बाद उन्होंने मौखिक चर्चा करनी शुरू की और हाल में बीते पर्व 'रक्षाबंधन' पर बात करने लगे।

शिक्षक : राखी बाँधने/बँधवाने के बाद आप सबने कौन–सी मिठाई खाई?

सभी बच्चे उस मिठाई का नाम बताते हैं जो उन्होंने खाई होती है, मिठाई, लड्डू, पीले चावल आदि। शिक्षक लड्डू पर चर्चा को आगे बढ़ाते हैं, यह कैसे बनता है? इसका आकार कैसा होता है? कितने बच्चों ने यह खाई है? फिर वे पूछते हैं, "लड्डू किस आवाज (ध्वनि) से शुरू होता है?" बच्चे अपनी पूरी ऊर्जा के साथ एक साथ उत्तर देते हैं, 'ल' से। उसके बाद वह कुछ बच्चों से सामने आने के लिए कहते हैं और बोर्ड पर उस अक्षर को दिखाने के लिए कहते हैं। वे यह भी

सुनिश्चित करते हैं कि जो बच्चे पीछे बैठे हैं, वे भी सक्रिय रूप से इनमें भागीदारी लें और अगर किसी बच्चे को अक्षर पहचानने में कोई कठिनाई हो रही हो तो उसके दोस्त इसमें उसकी मदद करें।

फिर इस समझ को मजबूत करने के लिए उन्होंने 'ल' अक्षर कार्ड का उपयोग किया। इसके साथ वे मात्रा कार्ड 'आ' भी लेकर आए और इससे भी बच्चों को परिचित कराया। यह चर्चा आगे बढ़ी जिसमें योगेश जी ने दूसरे अक्षरों का इस्तेमाल करते हुए उसे मात्रा 'आ' के साथ मिलाकर दिखाया।

dkslZ ds ckn

योगेश जी बताते है कि कोर्स के बाद वे अपनी कक्षा में पढ़ने और लिखने के लिए जो रणनीति इस्तेमाल करते हैं, उसके तहत वे पाठयपुस्तक का इस्तेमाल, पढ़ाने के दूसरे संसाधन के रूप में करते हैं, बच्चों को समूह में पढ़ाते हैं; ये समूह मिश्रित या बच्चों के स्तरानुसार होते हैं। वे बच्चों को अपने दैनिक क्रियाकलाप के बारे में लिखने के लिए उत्साहित करते हैं, जैसे कि स्कूल आते समय आज उन्होंने क्या देखा? वह इस बात को समझते हैं कि बच्चों के द्वारा लिखे गए लेख ऐसे नहीं होंगे जिनमें कोई खामी नहीं होगी। वे बहुत कुछ ऐसा लिखेंगे जो उनकी बोलचाल की भाषा में होगा या उनके मन में आ रहे विचारों को बस उन्होंने ऐसे ही अस्पष्ट रूप से लिख दिया होगा, किंतु जब उनसे इसके बारे में पूछा जाता है तो बच्चे बताते हैं कि असलियत में उन्होंने क्या लिखा है।

इस प्रकार, इसके जरिए योगेश जी अब बच्चों को अवसर देने में भरोसा करते हैं। वे बड़े उत्साह से बताते हैं कि वे अब कक्षा पाँचवीं के साथ भी काम करते हैं और जब वे दोनों कक्षाओं, कक्षा पहली एवं पाँचवीं के साथ बैठते हैं और उनके साथ मौखिक चर्चा शुरू करते हैं, जैसे – कोई कहानी या कविता के द्वारा तो उनकी कक्षा पहली के बच्चे भी इन कहानियों में एक के बाद एक पंक्ति जोड़ते जाते हैं और ऐसे यह कहानी दस पंक्तियों वाली हो जाती है। कविताओं में बच्चे पंक्तियों के अंत में अब मिलते–जुलते शब्द जोड़कर अपना योगदान देने लगे हैं। वे इस बात से गौरवान्वित महसूस करते हैं कि उनकी कक्षा पहली के बच्चे भी उसी तरह से कक्षा में भाग ले पाते हैं जैसे कि कक्षा पाँचवी के बच्चे। योगेश इन कहानियों या कविताओं की संरचना को ठीक करते हैं, उनके क्रम में जरूरी बदलाव लाते हैं और उन्हें एक अंतिम रूप देते हैं।

वे आगे बताते हैं कि उन्हें यह महसूस होता है कि इस प्रकार से पढ़ाने पर बच्चे का आत्मविश्वास पहले की अपेक्षा अब कहीं अधिक बढ़ा हुआ है। वे अब अपने विचारों और अनुभवों को बताने में हिचकिचाते नहीं हैं। लिखने के बाद बच्चे पहले कभी उसे सुधारने के लिए दोबारा नहीं पढ़ते थे। अब लगातार उनके साथ काम करने और उन्हें यह सलाह देने के बाद, बच्चे अपनी लिखी चीज को दोबारा पढ़ते हैं और जरूरत पड़ने पर उसे सुधारते भी हैं। उन्होंने, भूमिका नाम की एक लड़की

का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले जब कभी वह कोई चित्र बनाती या कुछ लिखती थी, वह कभी इसे दोबारा देखती या पढ़ती नहीं थी। योगेश जी ने यह नियम बनाया कि जब भी वह कुछ लिखे, वे उसे पढ़कर बताने को कहते और अगर कहीं जरूरत होती तो उसमें बदलाव के लिए कहते। ऐसा करने से धीरे–धीरे यह उसकी आदत में आ गया है और अब वह लिखे टेक्स्ट को जरूर पढ़ती है।

अब वे बच्चों के सीखने की जाँच मुख्यतः अपने अवलोकन से करते हैं। वे व्यक्तिगत् रूप से सभी बच्चों को पिछले दिन हो चुके किसी टॉपिक पर लिखने या चर्चा करने के लिए कहते हैं। ये काम देते समय वे बच्चों के स्तर का ध्यान रखते हैं और उसी आधार पर उन्हें ये काम दिए जाते हैं। वे आगे बताते हैं कि अब उनकी कक्षा के बच्चे कक्षा में चर्चा हो रही बातों को बच्चों के अनुभवों से जोड़कर देखते हैं और उनसे सवाल भी करते हैं।

अपनी शिक्षण में आए इन बदलावो के बाद, योगेश अपने और अपने पढ़ाने के तरीकों में आए अंतर को महसूस कर सकते हैं। अब उन्हें कक्षा के उद्देश्य पहले से कहीं अधिक स्पष्ट हैं और वे अब बच्चों, स्कूल एवं उनकी कक्षाओं को पढ़ने–लिखने की गतिविधियों से बेहतर ढंग से जुड़ पाते हैं। वे आगे बताते हैं कि इस कोर्स के जरिए उन्हें साक्षरता की अपनी पहले की समझ को और भी मजबूत करने का मौका मिला है। वे कहते हैं कि अब उन्हें बहुत सारी गतिविधियों के बारे में पता है जो इसे पक्का करने के लिए आवश्यक हैं। पहले उनकी यह मान्यता थी कि अभिभावकों के सहयोग और पठन सामग्री के बिना, शिक्षा एवं साक्षरता का विकास बहुत कठिन है। कोर्स से जुड़कर वे अब इस बात को समझते हैं कि ऐसी धारणा गलत थी और शिक्षा स्थान एवं सामग्री पर बहुत कम निर्भर करती है। योगेश कहते हैं कि अब मातृभाषा की अवधारणा और कक्षा में उसके उपयोग में स्पष्टता है। वे विश्वासपूर्वक यह भी कहते हैं कि इस कोर्स के जरिए वे भाषा एवं साक्षरता से जुड़ी सीखने–सिखाने की कई नई रणनीतियों को सीख रहे हैं और उन सभी को अपनी कक्षा में इस्तेमाल भी कर रहे हैं। उन्हें पूरी आशा है कि पढ़ाने के इस तरीके से बच्चे अवधारणाओं को अपने दैनिक जीवन से जोड़ पाएँगे, सीखने की प्रक्रिया में उनकी प्रतिभागिता बढ़ेगी और वे बेहतर ढंग से सीख पाएंगे।

वर्ष 2018 से एल.एल.एफ. द्वारा संचालित तीन माह के कोर्स में स्थानीय मेंटर की भूमिका में अपना योगदान दे रही हैं। इनके कार्य को प्रतिभागीयों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

TATA TRUSTS

CENTRAL SQUARE FOUNDATION

unicef

HSSPP

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

Designed by www.stelladesignandprint.com

yXo t ,M yfuX QkmM'ku

ऑफिस पताः वी–19, प्रथम तल, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110016

मोबाईलः 9643090333 | दूरभाषः 011–26106045

वेबसाइटः www.languageandlearningfoundation.org | ईमेलः info@languageandlearningfoundation.org